सारस्त पुत्र "फल उसके भाग्यरूपी उपवनमें न था"। इस कारणसे बहुधा उदास रहा करताथा। वह पांचों समयकी उपासना करनेके पश्चात् भगवानसे प्रार्थना करता कि हे भगवान! अपनी कृपासे तैनें मुझ दीनको सब प्रकारकी सम्पत्ति दी है। परन्तु इस अंधियारे घरका दिया न दिया! बस मेरे मनमें एक यही अभिलाषा रह गई है। हाय! मेरा नाम लेनेवाला और पानी देनेवाला कोई भी नहीं!! तेरे अप्रकाशित कोषमें सब कुछ वर्त्तमान है। एक जीता जागता पुत्र मुझे दे तो मेरा नाम और इस राज्यकी जड स्थिर रहै। यह प्रार्थना करते २ बादशाहकी अवस्था चालीस वर्षकी हुई। एकदिन शीश महलमें बैठा हुआ उपासना कर रहाथा। उपासना कर लेने पर दर्पणको उठाकर मुख देखा तो मूछोंमें चांदीके तारकी नाईं एक सफेद बाल दिखाई दिया उसको देखकर यह आंसू भरलाया और लम्बी सांस लेकर मनहीं मन कहने लगा कि "इतनी आयु वृथाही खोई! संसारी मायामोहमें" अकारथ जन्मको गँवाया। यह इतना बडा देश मेरे किस काममें आवैगा? अंत समय यह सारी सम्पत्ति कोई दूसराही उडावैगा। मुझपै तो मृत्युका संदेशा आचुका। यदि कुछ दिन जियाँ भी तो क्या? शरीरका बल घटेगा। जान पडता है कि पुत्रका प्राप्त करना मेरे भाग्यहीमें नहीं लिखा है। इस छत्र और सिंहासनका अधिकारी कोई दूसरा बादशाह होगा। अच्छा! एक दिन तो मरना ही है- उस समय सब कुछ छूट जायगा- इस कारण यही उचित है कि मैं ही इसको त्यागदूं और अपने ईश्वरका स्मरण करके समयको बिताऊँ। यह विचार कर पांईबागमें आगया और सेवकको आज्ञा दी कि आजसे कोई व्यक्ति मेरे

पास न आवे। जिसको आवश्यकता हो साधारण दरबारमें आया जाया करे, कर्मचारी अपने २ कार्यको चित्त लगाकर करें। यह आज्ञा देकर बादशाह एकान्त स्थानमें जाय भगवानकी आराधना करने लगा रोने और हाय करनेके अतिरिक्त उसको दूसरा कार्य नहीं था। इसी भांतिसे बादशाह आजादवख्तको कई दिन व्यतीत हुए। सन्ध्याको व्रत खोलनेके लिये एक छुहारा खाता और तीन घूंट पानी पीता था और सारे दिन नमाजके स्थान पर चिन्ताकुलसा पडा रहताथा। सम्पूर्ण देशमें इस समाचारका प्रचार होगया कि बादशाहने राज्यसे चित्तको हटाकर एकान्त बास स्वीकार किया है चारों ओरसे विद्रोही और दुष्टोंने शिर उठाया और अपनी सीमासे बाहर आये। जिसने चाहा देशके किसी भागको अपने अधिकारमें ले लिया और लडाई झगडेका उद्योग किया। कर्मचारियोंकी आज्ञा भंगकी जाने लगी। प्रत्येक प्रान्तसे अराजकताके समाचार आने लगे। सभासद् लोग एकत्र हुए और परामर्श करने लगे अंतमें यह सिद्धान्त ठहरा कि नव्वाब, मंत्री, इत्यादि अध्यक्ष गण दूरदर्शी और बुद्धिमान हैं। बादशाह सलामत इनका विश्वास करते हैं व इन लोगोंका पद भी सबसे बडाहै। इस समय उसके पास चलकर सारे समाचार कहें देखें उन महाशयकी क्या सम्मति होती है? यह बिचारकर सब लोग मंत्रीके पास आये और कहा कि बादशाहके यह विचार और देशका यह अमंगल। यदि कुछ दिनतक ऐसीही असावधानी रहैगी तो परिश्रमसे प्राप्तकिया हुआ देश वृथाही हाथसे निकल जायगा फिर इसका प्राप्त होना कठिनहै। मंत्री अत्यंत बुद्धिमान, दूरदर्शी, विचार शील, वृद्ध खिरदमंद नामक

था। सबकी सम्मति सुनकर कहने लगाकि। यद्यपि बादशाह-
ने निकट आनेको निषेध कर दिया है, परन्तु तुह्मारे अनुरोधसे
मैं चलताहूं। ईश्वर करे कि बादशाहकी इच्छा बदले और हम-
लोगोंको दर्शनदें। यह कह सबको साथले दीवानआममें गया
और वहां पर सबको छोड द्वारपालसे कहला भेजा कि मैं आप-
के दर्शनार्थ आयाहूं आशाहै कि दर्शन पाकर कृतार्थ हूंगा।
बादशाहने वजीरकी प्रार्थना सुनकर विचार किया कि यह रा-
ज्य हितकारक और स्वामिभक्त है इस कारणसे उसको आनेकी
आज्ञादी। आज्ञा पाकर मंत्रीने सामने आय हाथ जोडकर प्र-
णाम किया और देखाकि बादशाहकी सूरत कुछ औरही होगई
है दुर्बलताके मारे आँखोंके नीचे झांई पडगई है, मुख पीला पड
गयाहै, मंत्री पर न सहागया और अधीरजसे दौडकर बादशा-
हके चरणोंपर जा गिरा! बादशाहने अपने हाथसे उसका शिर
उठाकर कहाकि लो मुझे देखो अब तो धैर्य हुआ, जाओ? अब
अधिक विलम्ब मत लगाओ, जाकर तुमहीं राज्यकरो मंत्री खि-
रदमंद इस बातको सुनतेही रोने लगा और प्रार्थनाकी कि दा-
सको आपके अनुग्रह और आपकी कुशलसे सदाही बादशाहत
प्राप्तहै। परन्तु श्रीमान्के इस अचानक एकान्त बाससे सम्पूर्ण
देशमें हलचली पडगई है, इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।
श्रीमान्के चित्तमें यह कैसा विचार समाया यदि इस पुराने
सेवकको कुछ यह भेद बताया जाता तो अच्छा था। तब मैं
ी अपनी बुद्धिके अनुसार प्रार्थना करूंगा। सेवक लोगों
र श्रीमान्की कृपा ऐसेही समयके लिये होती है। कि श्री-
ान् विश्राम करें और सेवक गण राज्यका प्रबन्धकरें। भ-
ान न करे कि यदि श्रीमानके चित्तपर कुछ चिन्ता हो तो

यह सेवक लोग किस दिन काम आवेंगे। बादशाहने कहा कि सत्य कहतेहो; परन्तु मेरे मनकी चिन्ताका कोई उपाय नहीं हो सकता प्यारे वजीर मेरी सारी उमर देशके लेने देनेमेंही कटी, अब यह अवस्था हुई। आगे मृत्युका सामना करना पडेगा सो उसकाभी समाचार आगया जो काले केश स्वेतहो चले वही कहावतहै कि "सारीरात सोये और प्रभातकोभी न जागे"। अबतक एक पुत्रभी उत्पन्न न हुआ जो मेरी कामना पूर्ण होती। इस कारणसे मन अत्यन्त मलीन और शरीर छीन हुआहै। मैंने तो सबको त्याग दिया। जिसकी इच्छाहो वह देश और सम्पत्ति पर अधिकार करे। मुझे किसीसे कुछ काम नहीं, वरन मेरी तो यह इच्छाहै कि इस देशको छोडकर जंगल और पर्वतोंका मार्गलूं और किसीको अपना काला मुँह न दिखाऊं। इसही प्रकारसे यह तुच्छ जीवन व्यतीत करूं। यदि कोई स्थान मन भा जायगा तो वहां बैठकर भगवानका भजन करूंगा। कदाचित अंतकाल सुधरजाय? संसार असारको भलीभांतिसे देखा परन्तु इसमें कुछभी आनंद नहीं पाया। इतना कह कर बादशाहने हायकी और मौन होगया। खिरदमंद इनके पिताके समयसे मंत्रीथा। जब यह कुमारथे तबसे इनपर प्रेम रखताथा इसके अतिरिक्त भला आदमी और शुभाकांक्षीथा। कहने लगा कि ईश्वरकी ओरसे निराश होना कदापि उचित नहीं। जो संपूर्ण संसार का उत्पन्न करनेवालाहै उसके लिये तुम्हें पुत्रदे देना कितनी बडी बातहै! ईश्वरके लिये इस अविचारको मनसे दूर कीजिये। नहीं तो सम्पूर्ण प्रजा बिरूद्ध हो जायगी। और यह सबराज्य जो अत्यन्त परिश्रम व यत्नसे तुम्हारे पुरुषोंने उपार्जन कियाहै एक क्षणमें हाथसे निकल जायगा। असावधानीसे

देश उजाड होजायगा। भगवान न करे ऐसा होनेपर बडी दुर्नामता होगी। तदुपरान्त अंत समयमें उत्तर देना पडेगा। जब वह ईश्वर पूछेगा कि मैंने तुझे बादशाह बनाकर अपने उत्पन्न किए मनुष्योंको तुझे समर्पण किया और तू हमारी कृपासे वंचितरहा और प्रजाको भटकाया। इस प्रश्नका श्रीमान् क्या उत्तर देंगे? अतएव उसदिन प्रार्थनाभी काममें न आवेगी। इस कारणसे कि मनुष्यकी आत्मामें परमात्माका निवासहै और बादशाह लोग केवल न्यायके लियेही पूछे जाँयगे। दासका अपराध क्षमाहो। घरको त्यागकर जंगल २ तथा बन २ में भ्रमण करना योगी और भिखारियोंका कामहै, बादशाहोंका नहीं। श्रीमान् अपने गौरवके अनुसार कार्य करें। ईश्वरका स्मरण और पूजन जंगल और पहाडमेंही नहीं होता। क्या श्रीमानको यह कहावत याद नहीं है;—

दोहा—गृह बन उपवन जीव जड, भूमि और पाताल॥
सबमें व्यापक सब समय, करुणा निधि गोपाल॥

यदि न्यायसे देखाजाय तो मेरी प्रार्थना स्वीकार करनेके योग्यहै। अच्छा तो यह है कि श्रीमान् सब समयमें परमेश्वरका स्मरण करके उपासना किया करें। उसके दरबारसे कोई निराश नहीं फिरता। दिनके समय देश और राज्यका प्रबन्ध व न्याय कीजिये। दीन जनोंका दुःख छुडाइये, व आनन्द पूर्वक समय को व्यतीत किया कीजिये। रात होनेपर उसकी प्रार्थनामें चि‐ को लगाइये। साधु‐संत, योगी, सन्यासी इत्यादि भगवद्भ‐ ंसे सहायता लिया कीजिये। अनाथ, भिखारी, विधवा और पाहिज लोगोंको सहायता देदेकर पुण्य उपार्जन कीजिये। न सब लोगोंके आशीर्वाद और भगवानकी कृपासे शीघ्रही

श्रीमान्‌की अभिलाषा पूर्ण होगी जिसके लिये रातदिन महाराजको चिन्ता रहतीहै। ईश्वरकी कृपाका ध्यान रखिये। एक पलमें वह सब कुछ करसकताहै॥

खिरदमंद मंत्रीके इस योग्य कथनको सुनकर बादशाहके चित्तको धीरज हुआ और कहा "अच्छा, तुह्मारा कहाभी कर देखेंगे, जो ईश्वर करेगा वह होगा" जब बादशाहके चित्तको सन्तोषहुआ तब वजीरसेपूछा किसब धनवान लोग क्या करते हैं और किसप्रकारहैं उसने प्रार्थनाकी कि समस्त प्रजा श्रीमान्‌के लिये आशीर्वाद करती है,आपकी चिन्ताही उनको रातदिन व्याकुल करती है, कृपापूर्वक उनको दर्शन दीजिये तो सबके हृदय प्रसन्नहों। साधारण सभागृहमें इससमय बहुतसे लोग एकत्र हैं। यह सुनकर बादशाहने आज्ञादी कि मैं कलके दिन दरबार करूंगा। सबको आनेकी आज्ञादे दो। खिरदमंद यह आज्ञा सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और कर जोडकर प्रार्थना की कि जबतक आकाश और पृथ्वी वर्त्तमान है तब तक श्रीमान्‌का सिंहासन अचल रहै। यह कह श्रीमान्‌से बिदाहो बाहर आया और यह शुभ समाचार धनवान और प्रतिष्ठित मनुष्योंको सुनाया। सब लोग प्रसन्नहो अपने २ घर गये। सम्पूर्ण नगरमें आनंद छागया, प्रजा प्रसन्न हुई। समस्त सभासद् लोग अपने २ स्थान पर आन कर बिराजमान होगये। सबहीको बादशाहके दर्शन की अभिलाषा थी। पहरभर दिन चढे द्वारका परदा उठाय बादशाह सिंहासनपर शोभायमान हुआ। आनंदके बाजे बजने लगे। सबने उत्सवकी भेंट दी। बादशाहकी ओरसे सबका आदर सन्मान किया गया। सारी प्रजाने उत्सव मनाया। दो पहर होनेपर सभा समाप्तकर बादशाह रनवासमें चला गया और

भोजन कर विश्राम किया उस दिनसे बादशाहने प्रभातको दरबार करनेका नियम करलिया दरबार करनेके पीछे फिर भगवत उपासनामें लौलीन रहा करताथा। एक दिन कोई पुस्तक पढ रहाथा उसके किसी पत्रमें लिखा देखाकि यदि किसी व्यक्तिको शोक या चिन्ता ऐसी हो कि उसका उपाय युक्तिसे न हो सके तो उचित है कि भाग्यपर छोडदे और हरि भजनमें दत्त चित्त रहै। असार संसारकी मायासे अपनेको सदाही सावधान रक्खे कि इस जगत्में कैसे २ बलवान और धनवान व ज्ञानवान पैदा हुए परन्तु मृत्युके पंजेसे कोईभी न बचा किसीका कथन है किः—

क०—दाता सो दलीप मान्धातासे महीप भये जिनके गुण दीप२ अजहू लो आए हैं। वलि ऐसो बलवानको भयो जहान बीच रावण समानको प्रतापी जगजाये हैं॥ वानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे जाके गुण दीनदयाल भारतमें गाए हैं। कैसे २ शूर रचे चातुरी विरंचिजू फेर चकचूर कर धूरमें मिलाए हैं॥

अब जो देखिये तो उनका कहीं खोजभी नहीं पाया जाता, संपति और पृथ्वी यहांकी यहींहै परन्तु वे न जानें किस अपरिचित स्थानमें चलेगये इन बातोंका अपने मनमें विचार करके सारे संसारको मिट्टी का खेल जाने तब सदाही उसका चित्त प्रसन्न रहैगा। पुस्तकमें जब यह उपदेश लिखा देखा तब बादशाहको मंत्री खिरदमंदका कथन याद हुआ और दोनों बातोंका ८ पाया विचार किया कि इनके अनुसार बर्त्ताव करूँ। परन्तु १।२८। और भीड भाड साथमें ले बादशाहोंकी भांति जाना और भ्रमण करना उचित नहीं। भला तो यह है कि भेष बदलकर रातके समय समाधिस्थान या किसी महात्माकी सेवामें

जाया करूँ व सारी रात जागूं और इनलोगोंके सत्संगसे संसारकी अभिलाषा और मुक्ति प्राप्तहो । यह मनमें ठान एकदिन रातको मोटे झोटे कपडे पहर कुछ रुपये और असरफी साथमें ले चुप चाप कोटसे बाहर निकला और जंगल की राहली । जाते २ समाधिस्थानमें पहुँचा बादशाहने भगवानका स्मरण किया । पवन प्रचंडतासे चलरहाथा, उसही समय बादशाहको एक उजाला सा दिखाई दिया जो सबेरेके तारेकी नाईं चमकताथा । बिचार किया कि इस आंधी और अंधियारेमें यह उजाला किसी युक्तिसे किया गयाहै, अथवा यह मायाकी करतूतहै । जो फिटकरी या गंधक, दीपकमें बत्तीके ओरे धोरे बिथरा दीजिये तो कैसीही पवन चले दीपक न बुझेगा अथवा किसी सिद्धका यह दियाहै जो बराबर बलेजाताहै । जो कुछहो चलकर देखूं तो कदाचित इस दीपकके प्रकाशसे मेरे घरका अंधियाराभी दूर होजाय और मनोकामना सिद्धहो । यह सोचकर उस ओर चला निकट पहुँचकर देखाकि चार भिखारी गलेमें कफनी पहरे शिर झुकाये चुपचाप बैठेहैं । उनकी चेष्टासे जान पडता था जैसे कोई यात्री अपने देश और जातिवालोंसे बिछुड अनाथहो निर्द्धनताके शोक और चिन्तासे ग्रसितहै । चारों चित्र पुतलीकि नाईं मौन थे वहीं पर एक दीपक पत्थरपर धरा हुआ टिमटिमारहाथा आजादबख्तको उनका दर्शन करतेही बिश्वास होगयाकि इनके द्वारा मेरी मनोकामना सिद्ध होगी और आशारूपी लता जो सूखने पर आगई थी इनकी कृपाके बारिको पाकर हरी भरी होगी । अब इनकी सेवामें चलकर अपना वृतान्त कहूं और इनका साथी बनूं । आश्चर्य नहीं जो दया करके यह महात्मा मेरी मनो

कामना सिद्ध करें यह विचारकर जैसेही आगेको बढना चाहा वैसेही बुद्धिने समझाया कि मूर्ख ! जलदी न कर और ठहर। तू नहीं जानताकि यह कौनहैं ? और कहाँसे आयेहैं, किधर जातेहैं, देवहैं, भूतहैं या पिशाचहैं ? अतएव इनमें जाकर एक साथ मिल बैठना ठीक नहीं अभी एक ओरको छिपकर इन महात्माओंका भेद जानना चाहिये अंतमें बादशाहने यही निश्चय किया और फकीरोंकी झोपडीके निकट एक वृक्षकी आडमें चुपकेसे जा बैठा उसके आनेका समाचार किसीने नहीं जाना। इधर बादशाहने अपना ध्यान उस ओरको लगाया कि देखिये परस्पर यह लोग क्या बातचीत करतेहैं। अचानक एक फकीरको छींक आई, भगवानका नामलिया शेष तीनों फकीरभी उसकी आवाजसे चौंक पडे। चिरागको उस काया और अपने २ बिछौनोंपर हुक्के भर २ के पीने लगे उनमेंसे एकने कहा कि हे मित्रों! ऐ भ्रमण कारियों ! ! हम चारों आकाशके भटकाने और दिनरातके फेरसे द्वार २ पर बहुत समय तक फिरे। धन्यवादहै उस भगवानको कि उसकी सहायता और भाग्यकी प्रसन्नतासे इस स्थानपर परस्पर साक्षात् हुआ और कलका वृतान्त कुछ ज्ञात नहीं कि कौन बात आगे आवै सब एक स्थानपर रहें या पृथक् २ होजाँय। रात पर्वताकार होतीहै अभीसे पडे रहना भला नहीं इससे उचितहै कि अपनी २ बीतीहुई जिसमें रत्तीभरभी झूंठ नहो वर्णन करें तो बातोंही बातोंमें रात कट जाय। जब थोडीसी रात शेष रहै तब लोट पोट होंगे सबोंने कहा कि जो आज्ञा हमने स्वीकारकी। पहले आपही अपना वृतान्त आरंभ कीजिये तो हमभी उसको सुनकर कृतार्थ हों।

पहला भाग।

पहले फकीरकी यात्राका वृत्तान्त।

पहला दरवेश पलौथी मारकर बैठा और अपनी यात्राका वृत्तान्त इस प्रकारसे कहने लगा कि "हे भाइयों! इधरको ध्यान करके मेरे वृत्तान्तको सुनो"—

चौ०—मम वृत्तान्त सुनहु दै काना। जेहि बिधि भ्रमण किये मैं नाना।
जो कछु दुख पाये मैं भाई। एक एक कर देहुँ सुनाई॥

हे मित्रों! मेरी उत्पत्तिका स्थान यमनदेश है। मेरे पिताका नाम ख्वाजेअहमद था और वह बडे भारी सौदागर थे। उस समयमें कोई सौदागर या व्योपारी उसकी समानका न था। बहुधा नगरोंमें कोठियें और मुनीम लोग बेच खोच के लिये नियत थे। लाखों रुपयेकी सम्पत्ति और जिन्स देश २ की घरमें वर्त्तमान थी। उनके यहां दो सन्तान पैदा हुई एक तो यही भिखारी जो जोगिया वस्त्र पहने हुए श्रीमानोंके सन्मुख उपस्थित होकर वर्णन कर रहा है। दूसरी एक बहन जिसको पिताजीने अपने जीतेजी दूसरे नगरके सौदागर बच्चेसे बिवाहित कर दिया था। वह अपनी सुसरालमें रहती थी। सिद्धान्त यह है कि जिसके घरमें इतनी सम्पत्ति और एक पुत्रहो उसके लाड प्यारका क्या ठिकाना है? मुझ भिखारीने वडे चावसे मा बापके घर उत्तमतासे पुष्टता पाई। और पढना लिखना सैनिक विद्या, तथा वही खाता हिसाब किताब सबही कुछ सीखने लगा। चौदह वर्ष अत्यन्त प्रसन्नता और निश्चिन्ततामें व्यतीत हुए।

संसारी चिन्ता चित्तमें नाम मात्र भी न थी। कुछ ऐसे बुरे दिन आये कि एकही वर्षमें माता पिता दोनोंका स्वर्गवास होगया बडा शोक हुआ जिसका बर्णन नहीं हो सकता। एक साथ अनाथ होगया बडा बूढा कोई भी शिर पर न रहा। इस शोकके मारे रात दिन रोया करता था। भोजनपान सब छूट गया। ज्यों त्यों करके चालीस दिन कटे। चालीसवें दिन सब छोटे बडे एकत्र हुए। इस कृत्यसे निपटकर सब लोगोंने मुझे बापकी पगडी बँधवाई और इस प्रकारसे समझाया कि संसारमें किसी-के माता पिताभी सदा जीवित नहीं रहते। और अपने लिये भी एक दिन मरना है इस कारण धीरज धरकर अपने घरको देखो। पिताके स्थानपर इस समय तुम बिराजमान हुए। अपने व्योपारमें सावधान रहो। इस प्रकार उपदेश देकर सब बिदा हुए। पश्चात् मुनीम और नौकर चाकर लोग भेंट लेलेकर आ-ये और मुझसे कहा कि एकबार अपनी समस्त संपत्तिको भली भांतिसे देख लीजिये उनके कहनेसे मैंने अपनी सम्पूर्ण सम्प-त्तिको देखा। उस अनन्त धनराशिको देखकर मेरी आँखे खुल-गईं। दीवानखानेंको सजानेकी आज्ञादी। बिछौने बिछाये गये अच्छे अच्छे सजीले सेवक रक्खे गये। उनको भांति २ के उ-त्तमोत्तम वस्त्र बनवादिये। यह तुच्छ दिनरात उस गद्दीपर त-किया लगाए हुए बैठा रहताथा। समयके अनुसार वैसेही आ-दमी जो कि गुंडे, मुफ्तका मालखानेवाले, मिथ्यावादी, तोपा-दी आप २ कर मित्र बने और साथी हुए आठ पहर उनका रहने लगा। सारे संसारकी गप्प और बुराई मेरे सामने ने लगी मेरे वह इष्ट मित्र कहा करते थे कि इसयुवा अवस्था-के समय केवड़की मदिरा या गुलाबकी शराब खिचवाय सुन्दर२

वेश्याओंको बुलाय उनके साथ आनंद बिहार कीजिये और मदिरा पीजिये।

मनुष्यको मनुष्यही पापके मार्गमें डाल देता है। पल २ के कहते और अनुरोध करनेसे मेरा भी चित्त चलायमान होगया। मदिरा, नाचना, गाना, जुआ इत्यादि जितने दुर्व्यसनथे वह सबही मेरे दरबारमें नौकर होगये। व्योपार भूल गया भोग विलासमें डूबकर लेने देनेमें पडा। जब अपने सेवक और सम्बन्धियोंने यह असावधानी देखी तो जो जिसके हाथ आया दबा बैठा मानो लूटही मचादी। मुझको नहीं ज्ञात था कि कितना धन प्रतिदिन व्यय होजाता है कहांसे और किधर जाता है, यदि इस अय व्ययके आगे कुबेरका भंडारभी होता तो भी हार मान जाता। कई वर्षके समयमें एक साथही वह अवस्था होगई कि केवल टोपी और लँगोटी शेषरही इष्ट मित्र जो दांत काटी रोटी खातेथे और प्रत्येक बातमें प्राणोंको न्योछावर करतेथे आकाश कुसुम होगये। यदि कहीं बाट घाटमें भूलसे चार आंखें हो जातीथीं तो आँखें चुराकर मुँह फेरलेतेथे। इस प्रकारसे नौकर चाकर सबही अपने २ किनारे जा लगे। बातका पूछनेवाला कोईभी नहीं रहा। केवल शोक और पश्चातापके अतिरिक्त कोई भी सगा न बचा अब दमडीके चनेभी प्राप्त नहीं होते जिनको चबाकर पानी पिया जाय, क्रमशः दोतीन उपवास होगये भूँख प्यासकी ताव न रही। निर्लज्जताका परदा मुँहपर डालकर यह इच्छा करी कि बहनके पास चलूं। परन्तु चित्तमें यह चिन्ता होतीथी कि पिताकी मृतुके पीछे वहनसे कुछ भलाई की नहीं यहां तक कि उसको पत्रभी लिखकर नहीं भेजा। बरन? उसने दो एक पत्र शोक सूचक और सहानुभूतिके जो लिखे तो उनका उत्तर स्वप्नमेंभी नदिया। इस

संकोचके मारे जी तो नहीं चाहताथा पर उसके घरके अतिरिक्त और कोई ठिकाना दिखाई नदिया ! विवश हो पैदल रीते हाथ गिरता पडता अत्यन्त परिश्रमके साथ कई दिनतक चलकर उस नगरमें जाय बहनके स्थानपर पहुंचा वह सभी मेरी अवस्था देख गले मिलकर बहुतरोई मुझपरसे राई नोंन उतारा और कहा कि यद्यपि दर्शनसे जी बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु भाई तुह्मारी यह कैसी दशा होगई? मुझपर उसके प्रश्नका कोई उत्तर न दिया गया और आंखोंमें आँसू भरकर चुपका होगया। बहननें शीघ्रतासे वस्त्र सिलवाकर स्नानागारमें भेजा। मैंने स्नान करके कपडे पहने। एक बहुत अच्छा स्थान मेरे रहनेको नियत किया। प्रभात होतेही अनेक भांतिके भोजन करवाये। तीसरे पहरको बादाम, पिश्ता, चिरोंजी इत्यादि मेवा भेजी और फल फलैरीकी भी बहुतायतथी रात दिन भात और उत्तमोत्तम व्यंजन खाकर मेरा चित्त प्रसन्न हुआ। बहनकी कृपासे अत्यंत विपत्तिके पीछे जो यह विश्रामपाया तो परमेश्वरकी महिमाका वारम्वार धन्यवाद गाया। कई मास इस आनंदमें व्यतीत हुए और मैंने पांवतक बाहर न दिया। एक दिन वह बहनजो पिताकी भांति मेरा लालन पालन करतीथी—कहने लगी कि हे भइया! तू मेरी आँखोंका तारा और माता पिताके स्मरणका सहाराहै। तेरे आनेसे मेराजी ठंढा हुआ। जब तुझे देखतीहूं आनंदसे फूलीनहीं समातीहूँ। तूने मुझे अत्यंत प्रसन्नता दीहै। परन्तु मनुष्यको ईश्वरने उद्योग करनेके लिये बनाया है। उसको घरमें बैठे रहना उचित नहीं। जो मनुष्य निकम्मा होकर रातदिन घरमें बैठा रहता है, संसारी लोग उसको ताना मारते हैं। इस नगरके सब छोटे बडे मनुष्य यहां तुह्मारे इस प्रकारसे रहनें पर कहेंगे कि पि-

ताकी सम्पत्ति खोकर बहनकी रोटियों पर पडा है यह बडी निर्लज्जताहै और हमारी तुह्मारी हंसी होगी। पिताजीकाभी नाम धरा जावेगा। नहीं मैं तो तुझे अपने आगेसे कभी अलग न करूं; मेरी इच्छा है कि अब तुम यात्राकी तइयारी करो तो भाग्य उदय होगा और इस निर्धनताके बदले धनवानीके साथ २ प्रसन्नताको प्राप्त करोगे। यह बात सुनकर मुझे भी लाज आई और उसके उपदेशको भला माना। उत्तर दियाकि तुमभी तो मइया समान हो जो आज्ञा दोगी पालन करूंगा। वह मेरी सम्मति जानकर घरमें गई और असरफियोंके ५०तोडे दासियों के सिरपर रखवा लाकर मेरे सामने धरे। फिर कहने लगी कि व्यापारियोंका एक समूह दमइश्क नगरको जाताहै तुमइन असरफियोंसे सौदागरी माल लेलो और उसको एक सौदागर बिश्वासपात्रके पास सौंपकर पक्का लेख लिखवा लो और स्वयंभी दमिश्क नगरको जाओ वहां पहुँचकर अपने समस्त पदार्थोंको लाभके साथ समझ बूझकर बेच डालना। वह नकदी लेकर बाजारमेंगया और असबाव सौदागरीका मोल लेकर एक बडे सौदागरके पासरक्खा और सब भांतिसे अपना बिश्वास करलिया। वह व्योपारी जलमार्गसे जहाजपर चढकर चला गया। मैं स्थल मार्गसेचला। जब बहनसे बिदा होनेलगा तब उसने शिरसे पांवतकके वस्त्र आभूषण और एक घोडा जिसपर जडाऊ जीनपोश पडाथा भेंट दिया। भोजनके कुछ पदार्थ भी साथमें बांध दिये। फिर मेरे माथेपर दहीका टीका लगाकर नेत्र डबडबायके बोली;— सिधारो तुह्में भगवानको सौंपा। जिस भांति पीठ दिखाये जातेहो उसही भांतिसे मुंह दिखाना। मैंने मंगलाचरण पढकर कहा कि तुह्माराभी भगवान मालिकहै, मैं चलताहूँ यह कह घोडेपर सवारहो

ईश्वरपर भरोसा रखके यात्रा करताहुआ दमिश्क नगरके पास जा पहुँचा। जब नगरद्वारके पास गया तो रात बहुत आचुकी थी। द्वारपालोंने द्वार बन्द करलिया। मैंने बिनयकी कि यात्रीहूं और बहुत दूरसे चला आताहूं यदि द्वार खोल दो तो नगरमें जाकर भोजनादिका प्रबन्ध करूं। भीतरसे द्वारपाल बोले कि इस समय द्वार खोलनेकी आज्ञा नहीं। तुम क्यों इतनी रातगये आये? जब उनसे यह स्पष्ट उत्तर पाया तो कोटकी भीतके तले घोडेसे उतर जीन बिछायकर बैठा और जागनेके लिये इधर उधर टहलने लगा। जब आधीरात व्यतीत होचुकी और सूनसान होगया तब क्या देखताहूं कि एक सन्दूक किलेकी भीतके नीचे चला आताहै मैं यह देखकर अचंभेमें हुआ कि यह जादूहै या ईश्वरने मेरी दीन हीन अवस्थापर कृपा करके यह अपार धन मेरे लिये भेजाहै जब वह सन्दूक पृथ्वीपर ठहरा तो मैं डरते २ उसके पास गया तो ज्ञातहुआ कि वह काठका सन्दूकहै। लोभवश उसे खोला तो एक अत्यन्त सुकुमारी प्यारी २ मूरत जिसे देखनेसे मुनिलोगभी मोहित होजाँय, आहत और रुधिरसे भीजी हुई पडी कुलबुलातीहै और यह शब्द मुँहसे निकलताहै कि अरे अभागे! निरमोही!! अत्याचारी!!! कठोर। क्या इस भलाई और परिश्रमका बदला यहीथा जो तैंने दिया भला एक घाव औरभी तो लगा। मैंने अपना और तेरा न्याय ईश्वरको सौंपा। यह कहकर उसही अचेत अवस्थामें डुपट्टेका अंचल मुँहपर डाललिया, मेरी ओर ध्यान न किया। मैं उसको देखकर और यह बातें सुनकर [illegible] होगया और बिचार कियाकि किसी निर्लज्ज अत्याचारीने [illegible] कारणसे ऐसी प्यारी सुकुमारी नारीको आहत किया क्या [illegible]के मनमें आया जो इस अबला पर कर चलाया? इसके श-

न्दोंसे तो अबतक प्रेम प्रकट हो रहा है जो इस मुमूर्षु अवस्थामें भी उसका स्मरण करती है। मैं आपही आप यह कह रहाथा कि मेरी आवाज उसके कानतक पहुँची और मुँहसे वस्त्र सरकाकर मुझे देखा। जिस समय उसकी चितवन मेरे ऊपर पडी और नजरोंसे लडी मूर्च्छासी आनेलगी और मन अबश होने लगा। कठिनतासे अपनेको रोका और साहसके साथ पूछा "सत्य कहो कि तुम कौन हो? और यह क्या वृत्तान्त है? यदि बता दोगी तो मेरे मनको धीरज होगा"। यद्यपि उसमें बोलनेकी शक्ति नहीं थी तथापि धीरेसे कहा कि धन्य है! घावोंके मारे अत्यंत पीडित हूं। क्या बोलूं! कोई घडीकी पाहुनी हूं। जब मेरे प्राण निकल जावें तो ईश्वरके लिये ढाँढसके साथ मुझ अभागिनीको समाधिमें शयन करा देना तो मैं दुर्नामतासे छुटकारा पा जाऊँगी और तुझको पुण्य होगा। इतना कहकर वह मौन होगई। रात्रिके सयम मुझसे कोई उपाय न होसका वह सन्दूक अपने पास उठालाया और बिचारने लगाकी कब प्रभात हो जो नगरमें जाकर अपनी सामर्थके अनुसार मैं इस सुन्दरी की चिकित्सा कराऊं। शेष रात्रिऐसी पर्वताकार होगई किजी घवडाने लगा। भगवान २ करके प्रभात हुआ। अरुणशिखा के साथ देव मंदिरोंमें आरती और मस्जिदोंसे अजाँकी ध्वनि निर्गत होने लगी। प्रभातकी उपासना कर जैसेही उस सन्दूकको खुरजीमें कसा वैसेही नगरका द्वार खुला और मैं नगरके भीतर गया। प्रत्येक दूकानदार और मनुष्यसे किरायेकी हवेलीको पूछनेलगा। खोजते२ एक स्थान उत्तमबना हुआ भाडेका लेकर उसमें जा उत्तरा और उस सुकुमारीको सन्दूकसे निकाल रुईके गाद्दोंपर नरम बिछौना करके एक कमरेमें

लिटाया। और अपना एक विश्वासपात्र आदमी वहां छोडकर मैं अश्व चिकित्सककी खोजमें बाहर निकला। प्रत्येक व्यक्तिसे पूछता फिरताथा कि इस नगरमें चतुर चिकित्सक कौनसाहै? और कहां रहताहै? एक व्यक्तिने उत्तरदिया कि एकनाई हकीमी और डाक्टरीके काममें बहुत चतुरहै यदि मुर्देको भी उसके पास लेजाओ तो भगवानकी महिमासे ऐसाउपायकरे कि एकबार वह भीजी उठै उसका नाम ईसा है और इसही महल्लेमें रहताहै यह मंगल समाचार सुनकर मैं तत्काल चला और खोजते २ उसके द्वारपर पहुंचा वहांपर एक मनुष्यको बैठे देखा जो श्वेतवस्त्र पहरे हुएथा उसके कार्यालयमें कई आदमी मलहमबनानेके लिये कुछ पीस पासरहेथे। मैंने अत्यंत बिनयकेसहित उनको प्रणामकिया और प्रार्थनाकी कि मैं आपका नाम सुनकर आयाहूँ। वृत्तान्त यह है कि मैं अपने देशसे व्यापार करनेके लिये चला। प्रेमके मारे स्त्रीकोभी साथ लेलिया। जब नगर थोडीही दूर रहगया था तो संध्या होगई अपरिचित देशमें रात्रिके समय प्रवेशकरना उचित न समझा, जंगलमें एक वृक्षके नीचे उतर पडा। पिछले पहर डाँका आया, साथकी समस्त सामग्री लूटली। गहने पत्तेके लोभसे मेरी स्त्रीकोभी घायल किया, मुझसे कुछ न होसका। शेष रात्रि जैसे तैसे करके काटी। प्रभात होतेही नगरमें आय एक घर भाडेपर लिया उसको वहाँ पौढाकर मैं आपके पास दौडा आयाहूं। परमेश्वरने आपको यह विद्या दी है, अतएव ... यात्रीपर कृपा कीजिये और मेरे गृहको सनाथ कीजिये यदि ...सका जीवन आपके हाथसे बचगया तो मैं तो सम्पूर्ण आयु-...क आपका दास रहूंगा॥

ईसा चिकित्सक परम कृपालु और ईश्वरभक्तथा। मेरी प्रार्थना

सुन दयावशहो उस हवेलीतक चलाआया जहाँ मैं ठहराथा। घावोंको देखतेही मुझे धीरज दिलाताहुआ बोला कि ईश्वरकी कृपासे इस अबलाके घाव चालिस दिनमें भर आवेंगे। तब यह स्नानभी करलेगी। सिद्धान्त यह है कि उस कृपालुने सम्पूर्ण घावोंको नीमके पानीसे धो धोकर पवित्र किया। जो टांकोंके योग्य थे उनको सीदिया और शेषपर अपनी जेबसे डिबिया निकालकर बत्ती रक्खी और थोडेसे घावोंपर फोया लगाकर पट्टी बाँधदी। इस कार्यको सम्पादन करके उसने कहा मैं दोनों समय आया करूंगा तुम सावधान रहना। ऐसा कोई कार्य इनसे नहो जो टाँके टूट जाँय। फिर उचित पथ्य बताकर बिदा मांगी मैंने बहुत बिनयके साथ हाथ जोडकर कहा कि आपके आशा देनेपर मेरेभी प्राण बचे नहीं तो मरनेके अतिरिक्त कुछभी नहीं सूझता था। भगवान आपको लाखों बर्षतक जीवित रक्खे। तदुपरान्त इतर और पान देकर मैंने उसको बिदा किया। मैं रातादिन उस सुन्दरीकी सेवामें वर्त्तमान रहता था। विश्रामको एक साथ बिसरा दिया। परमेश्वरसे प्रति दिन उसके आरोग्य होनेकी प्रार्थना करता था। इतनेमें वह सौदागरभी आन पहुँचा जिसको मैंने अपना माल सौंप दियाथा। उससे अपना माल लेकर मैंने औने पौने बेचडाला और थोडा २ धन उसकी चिकित्सामें व्यय करने लगा। वह चिकित्सक सदाही नियमसे आया करताथा। अनन्तर थोडे दिन पीछे घाव भर आये और उस अद्भुत सुंदरीने आरोग्यताका स्नान किया मुझको ऐसी प्रसन्नता हुई जैसे कहींका राज्य मिलगया। बहुतसी असर्फियें और शिरोपाव उस चिकित्सकको भेंटमें दिया तथा उस अप्सराको तकिया लगाकर गद्दीपर बिठाया दीन हीन और अना-

थोंको बहुतसा धन बाँटा। आरोग्यता प्राप्त करनेपर उस परीका ऐसा रंग निखरा कि मुख चंद्रमाकी समान प्रकाशित होकर कुन्दनकी समान दमकने लगा। दृष्टिकी सामर्थ न थी जो उसकी सुन्दरतापर ठहरती। यह भिखारी सर्वदा उसकी आज्ञाका प्रतिपालन करता था। वह अपनी आज्ञा और गर्वसे मेरी ओर देखकर कहती थी कि सावधान! यदि मेरी प्रतिष्ठा करना चाहता है तो कभी मेरी बातमें मीन मेष न करना जो मैं कहूं उसे मानलेना। नहीं तो पीछे पछिताओगे। इन बातोंसे मुझे ज्ञात होता था कि मेरी सेवाको वह भली भांतिसे स्वीकार करती है। यह दास विना उसकी इच्छाके एकभी कार्य नहीं करताथा। इस प्रकारसे वहुत दिन व्यतीतहुए। जिस वस्तुकी उसने कामनाकी मैं तत्काल ले आया। इस भिखारीके पास जो कुछ माल और रुपया मूल और लाभका था वह सब व्यय होगया उस पराये देशमें कौन बिश्वास करे जो ऋण लेनेसे काम चले कुछ समयपीछे प्रतिदिनके व्ययमें कठिनता होने लगी। इस कारण जी बहुत घवडाया। चिन्ताके मारे दुर्बल होने लगा। मुख पर कालापन छागया ? परन्तु कहूँ तो किससे कहूँ मेरी यह अवस्था देखकर एक दिन उस सोहिनी मनमोहिनीने कहा कि तुह्मारी सेवाका चित्र मेरे हृदयपर अंकित होगया है, परन्तु इससमय उसका क्या वदला देसकती हूं यदि आवश्यकीय व्ययके लिये कुछ चाहिये तो मनमें चिन्ता न कर और दवात कलम कागज लेआ। तब मैंने जाना कि यह कहीं की राजकुमारी है जो इस सभ्यता मिश्रित गर्वके साथ बात चीत करती है। तत्काल कलमदान आगे रखदिया उस अप्सराने एक पत्र अपने हाथसे लिखकर मुझे दिया और कहा कि

कोटके पास त्रिपौलियाहै उसके पासहीको एक गली चलीगई है वहां एक बडा स्थान है उसके स्वामीका नाम शीदीबिहार है तू जाकर इस रुक्केको उसके पास पहुँचादे मैं तत्काल उसके बताये हुए ठिकानेपर पहुँचा और द्वारपालके द्वारा मालिकके पास सन्देशा भेज दिया । सुनतेही एक युवा हबशी फेंटाबांधे सजा सजाया बाहर निकलआया यद्यपि रंग साँवला था पर लावण्यता अंग २ से टपकी पडती थी हाथसे पत्र लेलिया, न बोला न कुछ पूछा उन्हींपाँवों फिर भीतर गया। कुछ बिलम्बमें ग्यारह थाल रुपये और स्वर्णमुद्राके भरवाकर लाया और अपने सेवकगणको आज्ञादी कि इस समानको इस युवा पुरुषके साथ जाकर पहुँचा आओ। मैं भी यथा योग करके बिदा हुआ और अपने स्थानमें आया। आदमियोंको बाहरसे बिदा किया और सब धन उस अनुपम सुन्दरीके सामने ले आया। उसने कहा कि एक थाल अशर्फियोंका ले और व्ययकर भगवान देने वाला है। यह भिखारी उन अशर्फियोंको लेकर खर्च करने लगा। यद्यपि चिन्ता टूटी पर दूसरा सन्देह नया उत्पन्न हुआ कि हे भगवान ! यह क्या बात है बिना पूंछ पांछ किये बिना जाने पहिचाने इतना माल एक पत्रको देखतेही मुझे देदिया। क्या सुन्दरीसे इस भेदको पूछूं? परन्तु उसने तो पहलेही निषेध करदिया है। आठ दिनकेपश्चात् वह मृगनयनी पिकवयनी मुझसे कहने लगी कि परमेश्वरने मनुष्यको मनुष्यत्व दियाहै और इस प्रकारके वस्त्र मनुष्यपनके उसको दियेहैं जो कभी फटते या मैले नहीं होते परन्तु बिना वाहरकी टीपटापके साधारणमें मनुष्यकी आवभगत नहीं होती । तुम अशर्फियोंके दो तोडे लेकर यूसुफ सौदागरकी दूकानपर जो चौकमें है जाओ और भांति २

के अनमोल रत्न व भाँति२के उत्तमोत्तम वस्त्र मोल लेआओ। फकीर गाडीपर सवार होकर उसकी दूकानपर गया। देखा तो एक सुन्दर युवा पुरुष पीलेवस्त्र पहरे गद्दीपर बैठाहै और उसकी सुन्दरताके देखनेको दूकानके आगे बडी भीडहो रहीहै। मैंउससे प्रतिष्ठाकेसाथ यथोचित करके बैठगया और जिस वस्तुकी अपेक्षा थी माँगी। मेरी बात चीत उस नगरके निवासियोंसे भिन्नथी। उस दूकानके स्वामी युवाने सेवकों को आज्ञादीकी इन महाशयको जो वस्तु चाहिये सोदो फिर मेरी ओर घूम करके कहा कि आपका आगमन किस देशसे हुआ और इस अपरिचित नगरमें रहनेका क्या कारण है? यदि इस वृत्तान्तको अवगत करनेकी कृपाकीजियेगा तो मैं अत्यन्त अनुग्रहीतहूंगा। मुझे अपना भेद किसीपर प्रगट नहीं करनाथा इस कारण कुछ बात बनाय और रत्नादिले मूल्यदे बिदाचाही तब उस युवाने मन मलीन होकर कहा कि यदि तुमको ऐसाही रूखापन करना था तो क्या आवश्यकता थी कि पहले इतने चाओसे मिले भले आदमियोंमें राम राम श्याम २ की बडी प्रतिष्टा होती है। यह बात इसभाव और सरसतासे कही कि बिवशहोकर मनको भाई और रूखे होकर वहांसे उठजाना सभ्यतासे बिरुद्ध जाना उसकी कृपालुताको देखकर फिर बैठगया और कहा कि आपका कहना यथार्थ है मुझको तो आप सब भांतिसे अपना आज्ञाकारी जानिये। इतना कहनेपर वह बहुत प्रसन्नहुआ और हर्षित होकर कहने लगा कि यदि आज मुझ दीनके झो-पडेमें शुभागमनहो तो आपकी कृपासे इष्टमित्रोंको एकत्र करूं और दोचार घडीतक मन बहलाऊं मेरी इच्छा है कि आज भोजन पानका कृत्यभी साथही माथहो। मुझ भिखारीने उस अ-

प्सराको किसी समयभी अकेला नहीं छोडाथा उसका अकेला होना। बिचारकर बहुतेरा टाला पर उस युवाने एक न मानी। तदुपरान्त उन वस्तुओंको पहुंचाकर मेरे फिर आनेका बचन लेलिया और सौगन्दली तब बिदा किया। मैं दूकानसे उठा और सब सामग्री उस परीके सामने लाकर रखदीं उसने रत्नोंका मूल्य और जौहरीका वृत्तान्त पूछा। मैने रत्नोंका मोल और सौदागरकी आवभगतकी पूरी २ व्यवस्था कह सुनाई तब उसने कहाकि आदमीको सर्व भांतिसे अपना बचन पालन करना उचितहै मुझे ईश्वरको सौंपकर अपने बचनको पूरा करो। निमंत्रण रक्षा करना सर्वथा उचित कार्य है। मैंने कहा कि जी नहीं चाहता कि मैं तुम्हें अकेली छोडकर जाऊँ। तथापि आज्ञाके अनुसार जाताहूं जबतक आऊँगा जी यहींपर लगा रहैगा। यह कहकर फिर उस जौहरीकी दूकानपर गया वह कुरसीपर बैठाहुआ मेरी बाट देख रहाथा। देखतेंही बोला कि आओ महाशय! बडी बाट दिखाई। यह कहकर उठा और मेरा हाथ पकडलिया। तदुपरान्त एक बागमें लेगया। बाग अत्यन्त शोभायमानथा, हौज और नहरोंमें फुआरे छूटतेथे। प्रत्येक वृक्ष मारे बोझके झुक रहेथे उन पर रंग२ के पक्षी बोलियां बोल रहेथे, प्रत्येक स्थानमें साफ सुथरा फरश बिछ रहाथा। एक बंगला जो कि नहरके किनारे बना हुआथा वहाँ जाकर मैं बैठगया। कुछ देरके पीछे सौदागर उठकर चलागया फिर दूसरे वस्त्र पहरकर आया। मैंने देखकर कहा धन्यहै क्या उत्तम पहिरावा पहिराहै। फिर उसने मुझसे कहा कि आपभी अपने वस्त्र बदल डालें। उसकी आज्ञासे मैंने भी दूसरे कपडे बदले। उस युवाने बडे आडम्बरसे निमंत्रणकी तइयारी की और मुझसे प्रेम प्रीतिकी बातें करने लगा। इतनेमें

दास बिल्लौर पत्थरका प्याला लेकर आया और चटनियें कई प्रकारकी ला रक्खी। लवण पात्र रखदिये और शराब पीजाने लगी। जब दो चार बार पीगई तो बहुतसे गवइये आये। ऐसा समाबँधा कि यदि तानसेनभी होता तो उस समय अपनी तान को भूल जाता। इस आनंदमें एक साथ वह युवा अपनी आँखें भरलाया और दोचार बूँद आँसुओंकी टपकपडीं फिर मुझसे कहा कि अब हमारी तुम्हारी मित्रता पक्कीहुई। मनका भेद छिपाना किसी प्रकारभी तुमसे उचित नहीं है मैं प्रत्येक बातको मित्रताके भरोसेपर जी खोलकर कहताहूं। यदि आज्ञा हो तो अपनी प्यारीको बुलाय अपने मनकी अभिलाषा पूर्ण करूं। उसके विरहमें जी नहीं लगता। इस बातको उसने ऐसे अनुरागसे कहा कि विना देखे भाले मुझ भिखारीका मनभी उसके देखनेको ललचाया। मैंने कहा कि मुझे आपकी प्रसन्नता अपेक्षितहै इससे और कौन बात अच्छी है देर न कीजिये। सत्यहै विना प्यारेके कुछ अच्छा नहीं लगता। तब उस युवाने परदेकी ओर संकेत किया वैसेही एक ओरसे काली कलूटी भुतनीसी जिसके देखनेसे मनुष्य बेमौत मरजावै। निकल कर उस युवा के पास आन बैठी। मैंतो उसको देखतेही डरगया और मनमें कहाकि इस युवा पुरुष की यही प्राणप्यारी है जिसका अनुराग इसको इतना बढाहुआ है। घृणाके मारे मैं चुपका होगया। इस प्रकारसे तीन दिनतीनरात तक रागरंग ...रहा चौथी रात्रि को नशा उतरनेंसे नींद का जोरहुआ इस ...ने मुझे घोर निद्रा आगई। प्रभात होने पर उस युवाने जगा... और आलस्य व तंद्रा दूर करने के लिये कई प्याले शराबके ... उसने अपनी प्राण प्यारीसे कहाकि अब अपने पाहुने

को बिशेष परिश्रम देना ठीकनहीं तद्उपरान्त मैंने उनसे बिदा-
मांगी। उसने हर्षसे बिदादी। मैंने शीघ्रतासे अपने वस्त्रपहरकर
घरका मार्गलिया और उस परीके घर पहुँचा। परन्तु ऐसा सा-
बका कभी नहींहुआथा कि उसे रातको अकेला छोडकर कहीं
दूसरी जगह रहाहूं। इस तीनदिनकी अनुपस्थितिमें अत्यंत
लज्जित होकर सारा बृतान्त निमंत्रणका कहसुनाया वह बडी
चतुरथी हँसकर बोली कि क्या चिन्ताहै यदि एक मित्रके
अनुरोधसे रहगये तो हमनें क्षमाकिया। तुह्मारी क्या कसूर है
जब आदमी किसीके घरपर जाताहै तब उसकी इच्छासेही घर-
लौटताहै। परन्तु यह सेंतकी पहुनई खाकर मौनहोरहोगे या
इसका बदलाभी दोगे। अब यह उचितहै कि जाकर उस सौदाग-
रको अपने साथले आओ और उससे दूनासन्मानकरो। निश्चय
रक्खो कि ईश्वरकी कृपासे किसी बात में कुछ कमी न होगी
और इस निमंत्रणका उत्सव भलीभांतिसे शोभा पावैगा। मैं
भिखारी उसकी आज्ञाके अनुसार उस रत्नबणिक के पासगया
और कहाकि मैंनेतो आपका बचन शिर माथे चढाया अब आप-
भी मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके दीनके गृहको अपनेशुभा-
गमनसे शोभित करैं,। उसनें कहा सब भांतिसे प्रस्तुतहूँ। तद्उ-
परान्त उसको साथले मैं अपने घरको चला परन्तु बाटमें यह
सोचता जाताथाकि यदि आज मुझपै कुछसमाई होती तो ऐसी
सामग्री प्रस्तुत करता कि यहभी प्रसन्नहोजाता। घरपरतो
इसे लिये जाताहूं। देखिये कैसा बनावो बनता है? इसी सोच
बिचारमें घरके निकट पहुँचा तो क्या देखताहूं कि द्वारपर धूम-
धाम होरहीहै। गलियारे में बुहारी देकर छिडकाव दियागया-
है। दरवान लोग खड़े हैं। मैं चकितहुआ परन्तु अपना घर

जानकर भीतर चलागया तो क्या देखताहूं कि स्थान के प्रत्येक कमरे में उत्तम २ बिछावन बिछाहुआहै, गद्दियें लगीं हैं तकिये रक्खे हैं। पानदान, गुलाबपात्र, सुगन्धिपात्र और पुष्प पात्र रक्खे हुए हैं। आलों में गोले नारंगियें और लम्प इत्यादि योग्यतासे धरे हैं। एक ओर अबरक की रंगीली टट्टियों में दीपकों की बहार होरहीहै एक ओर झाड़ और कमलाकार सरूप प्रकाशित होरहे हैं मूल बात यहहै वहाँपर सब प्रकारसे धनवानों के योग्य सामान धराहुआहै ऊपर जड़ाऊ फ़ानूस धरेहैं। सब आदमी अपनी २ योग्यता के अनुसार बैठे हैं। रसोइयें लोग भांति २ के व्यंजन बनारहे हैं। कोरे २ घड़े चांदी की घनौचियों मे रक्खेहुएहैं उनपर छन्ने बँधे हुएहैं। चौकियों पर गिलास-कटोरे, थाली परात इत्यादि बर्तन धरेहैं, एक स्थानमें बर्फ रक्खा हुआ है इस प्रकारसे सब राजसी ठाट इकठ्ठा होरहाहै इस सामग्री के अतिरिक्त कंचनी, भांड़ पतुरिये, भाट, गायक भी अपना २ कर्तब दिखानेको तइयार बैठे हैं। मैंने उस जवान को लेजाकर गद्दी पर बैठाया और मनमें चकित था कि हे भगवान! इस अल्प समय में यह सामग्री कैसे तइयार होगई? चारों ओर देखताथा परन्तु उस अप्सराको कहीं भी न पाया। इसही खोजमें एकबार भोजनागार की ओर गया तो क्या देखता हूं कि वह सुकुमारी एक जगह बैठीहै। उसकी कुरती जरी बूटे के कामकी बनी हुई उसके अंगमें अत्यंत शोभा देरहीहै। वह भोजनादिके बनाने में सबको उपदेश करती जाती है।

चौपाई—जेहि को रूप दियो श्री रामा।
सो भूषण बिन सोहत बामा॥

परिश्रमकरनेमे वह गुलाबसा बदन पीला होरहाहै। निकटजाकर

न्यौछावर हुआ और चतुराईकी बड़ाईकर धन्यवाद देनेलगा। बडाई सुनकर उसने त्योरी चढाई और बोली कि आदमीसे ऐसे २ कार्य होते हैं कि देवताओंकी सामर्थ नहीं मैंने इतना कौनसा कार्य कियाहै जिससे तुम बिस्मितहो रहेहो बनावटी बातें मुझे अच्छीनहीं लगती। भला कहो तो यह कौनसी आदमियत है कि पाहुनेको अकेला छोडकर इधर उधर फिरते हैं वह अपनेजीमें क्या कहता होगा। शीघ्र जाकर वहां बैठो और पाहुनेका आदर करो तथा उसके माशूकको भी बुलाकर पास बिठाओ। मैंने उसकी आज्ञाके अनुसार कार्य किया और उस युवाके पास जाकर उधर इधर की बातें करने लगा। इतनेमें दो सेवक सुरापात्र और गिलास हाथमें लिये हुए सामने आये और सुरा पिलाने लगे। जब यह कार्य होने लगा तब मैंने उस युवासे प्रार्थनाकी कि सब कुछ तो हुआ अब आप उस अपनी प्राणप्यारीको भी बुलालें तो बहुत अच्छा हो यदि आज्ञा हो तो कोई बुलानेके लिये जाय यह सुनतेही वह प्रसन्न होकर बोला कि बहुत अच्छा इस समय तुमनें मेरी मनमानी कही। मैंने एकदासको भेजा। आधीरातके समय वह चुडैल मियाने में सवार होकर अकल्पित आपत्तिसी आपहुँची मुझ भिखारीने पाहुनेके सन्मानसे बिवश हो उसकी अगवानीकी और शीघ्रतासे उस युवाके पास ला बिठाया वह उसको देखतेही ऐसा हर्षित हुआ जैसे संसारकी सम्पत्ति मिलगई। तदुपरान्त वह डाइन उस युवाके गलेसे लिपट गई। उस समय ऐसी शोभा होरही थी जैसे निशानाथको राहु निगल रहाहै। जितने आदमी वहां बैठेथे सब दांतके तले उँगलीको दाबने लगे और कहनें लगे कि यह तो बडे आश्चर्यकी बातहै। कौतुकको छोडकर सब उसका कौतुक देखनें लगे। एक कहने लगा कि भाई

प्रेम और बुद्धिमें शत्रुताहै जो बात बुद्धिमें नहीं होती यह प्रेम उसको कर दिखाता है लैलीको मजनूकी आँखोंसे देखना उचित है न कि संसारी आँखोंसे सबने कहा निस्सन्देह यह बात सत्य है । फिरमैं सबका सन्मान करनेमें दत्तचित्त हुआ वारम्बार उन लोगोंकी ओरसे मुझको मदिरा पीनेका अनुरोध किया जाता परन्तु मैं उस सुन्दरीके डरसे अपने मनको खाने पीनें या कौतुक देखनेमें नहीं लगाताथा और कह देताथा कि मेरा कुछ करना कराना पहुनईकी रीतिके विरुद्ध है । इस प्रकारसे तीन दिन व्यतीत होगये। चौथीरातको वह युवा मुझे बुलाकर इस प्रकारसे कहनें लगा कि अब हम लोगभी बिदाहोंगे, तुमभी तो कुछ देर यहांपर बैठकर मेरा चित्त प्रसन्न करो। मैंने विचार किया कि यदि इस समय कहना नहीं मानता तो बुरा मानेगा अतएव नये मित्र और पाहुनेको सब प्रकारसे प्रसन्न करना चाहिये। यह सोचकर कहा कि आपकी आज्ञाशिरमाथे । यह सुनतेही उस युवाने मुझको सुराका पात्र दिया और मैंने पीलिया फिर तो ऐसी अधिकता हुई कि थोडी देरमें वहांके बैठे हुए समस्त मनुष्य बेसुद्ध होकर सोगये मैंभी अचेत हुआ। जब प्रभातके समय सूर्यभगवान उदय हुए तब मेरी आंख खुली तो देखता क्या हूं कि न वह तइयारीहै न वह जलसा है केवल वह हवेली खाली पडीहै। कोनेमें एक ओरको कंबल लिपटा हुआ धरा है, उसको खोलकर देखताहूं तो उस युवा [illegible] उस कलूटीका भी सिर कटाहुआ पडाहै। यह भयानक [illegible] देखकर मेरा चेत जातारहा, बुद्धि जातीरही मैं प्रत्येक [illegible]को देख रहाथा कि इतनेमें एक कंचुकी जिसको निमंत्र[illegible] कार्यमें इधर उधर जाते देखाथा दिखाईदिया मुझे उसके

देखनेसे धीरजहुआ और उस्से इस घटनाका समाचार पूछा उसने उत्तरदिया कि तुझैं इसबातके निश्चय करनेंकी क्या आवश्यकता है? मैंने भी सोचा कि इसका कहना सत्यहै फिर कुछ क्षणके पीछे मैं बोला न कहिये परन्तु यह तो बताओ कि वह सुकुमारी इस समय कहां है? तब उसनें कहा कि जो कुछ मैं जानताहूं कहदूंगा। परन्तु तुमसा बुद्धिमान मनुष्य बिना इच्छा श्रीमतीकी दो दिनकी मित्रतापर जी खोलकर मदिरापान करना क्या माने रखताहै? मैं अपने कुकार्य और उसके उपदेश-से अत्यंत लज्जित हुआ। इसबातके अतिरिक्त मुँहसे कुछ न निकलाकि वास्तविक मुझसे अपराधहुआ, क्षमाकीजिये। तदु-परान्त उस कंचुकीनें कृपालु होकर उस अप्सराके स्थानका पता बताया और मुझे बिदाकरके आप उन दोनों शरीरोंके दाबनेंकी तइयारीमें लगा। मैं इस बातके कलंकसे अलग रहा। फिर उस सुन्दरीके बिरहसे घबडायाहुआ गिरता पडता संध्याके समय उसी गलीमें जा पहुँचा और द्वारके निकट पड रहा। तडप २ कर सारी रात काटी किसीकी पगाहट या आ-हट न मिली न किसीनें मुझसे मेरा वृत्तान्त पूछा उस संकटा-पन्न अवस्थामें प्रभातहोगया। सूर्यके प्रकाशित होनेपर उस स्थानकी एक खिडकीसे वह चंद्रमुखी मेरी ओर देखने लगी उस समय जो हर्षहुआ वह मनहीं जानता है। ईश्वरका ध-न्यवाद किया। इतनेमें एक कंचुकीनें आकर कहा कि तुम जाकर इस उपासनागृहमें बैठ जाओ। कदाचित मनोका-मना पूरी हो जाय। मैं उसकी आज्ञासे उठकर उपासनागृहमें जा पहुँचा परन्तु नेत्र उस द्वारकी ओरही लगरहेथे कि देखिये ईश्वरेच्छासे क्या प्रकट होताहै? जिस भांति उपवासी अन्नकी

प्रेम और बुद्धिमें शत्रुताहै जो बात बुद्धिमें नहीं होती यह प्रेम उसको कर दिखाता है लैलीको मजनूकी आँखोंसे देखना उचित है न कि संसारी आँखोंसे सबने कहा निस्सन्देह यह बात सत्य है । फिरमैं सबका सन्मान करनेमें दत्तचित्त हुआ वारम्बार उन लोगोंकी ओरसे मुझको मदिरा पीनेका अनुरोध किया जाता परन्तु मैं उस सुन्दरीके डरसे अपने मनको खाने पीनें या कौतुक देखनेमें नहीं लगाताथा और कह देताथा कि मेरा कुछ करना कराना पहुनईकी रीतिके बिरुद्ध है । इस प्रकारसे तीन दिन व्यतीत होगये। चौथीरातको वह युवा मुझे बुलाकर इस प्रकारसे कहनें लगा कि अब हम लोगभी बिदाहोंगे, तुमभी तो कुछ देर यहांपर बैठकर मेरा चित्त प्रसन्न करो। मैंने विचार किया कि यदि इस समय कहना नहीं मानता तो बुरा मानेगा अतएव नये मित्र और पाहुनेको सब प्रकारसे प्रसन्न करना चाहिये। यह सोचकर कहा कि आपकी आज्ञाशिरमाथे । यह सुनतेही उस युवाने मुझको सुराका पात्र दिया और मैंने पीलिया फिर तो ऐसी अधिकता हुई कि थोडी देरमें वहांके बैठे हुए समस्त मनुष्य बेसुद्ध होकर सोगये मैंभी अचेत हुआ। ब प्रभातके समय सूर्यभगवान उदय हुए तब मेरी आंख खुली तो देखता क्या हूं कि न वह तइयारीहै न वह जलसा केवल वह हवेली खाली पडीहै। कोनेमें एक ओरको कंबल लिपटा हुआ धरा है, उसको खोलकर देखताहूं तो उस युवा और उस कुटनीका भी सिर कटाहुआ पडाहै। यह भयानक काण्ड देखकर मेरा चेत जातारहा, बुद्धि जातीरही मैं प्रत्येक ओरको देख रहाथा कि इतनेमें एक कंचुकी जिसको निमंत्रणके कार्यमें इधर उधर जाते देखाथा दिखाईदिया मुझे उसके

देखनेसे धीरजहुआ और उस्से इस घटनाका समाचार पूछा उसने उत्तरदिया कि तुझें इसबातके निश्चय करनेंकी क्या आवश्यकता है? मैंने भी सोचा कि इसका कहना सत्यहै फिर कुछ क्षणके पीछे मैं बोला न कहिये परन्तु यह तो बताओ कि वह सुकुमारी इस समय कहां है? तब उसनें कहा कि जो कुछ मैं जानताहूं कहदूंगा। परन्तु तुमसा बुद्धिमान मनुष्य बिना इच्छा श्रीमतीकी दो दिनकी मित्रतापर जी खोलकर मदिरापान करना क्या माने रखताहै? मैं अपने कुकार्य और उसके उपदेश-से अत्यंत लज्जित हुआ। इसबातके अतिरिक्त मुँहसे कुछ न निकलाकि वास्तविक मुझसे अपराधहुआ, क्षमाकीजिये। तदु-परान्त उस कंचुकीनें कृपालु होकर उस अप्सराके स्थानका पता बताया और मुझे बिदाकरके आप उन दोनों शरीरोंके दाबनेंकी तइयारीमें लगा। मैं इस बातके कलंकसे अलग रहा। फिर उस सुन्दरीके बिरहसे घबडायाहुआ गिरता पडता संध्याके समय उसी गलीमें जा पहुँचा और द्वारके निकट पड रहा। तडप २ कर सारी रात काटी किसीकी पगाहट या आ-हट न मिली न किसीनें मुझसे मेरा वृत्तान्त पूछा उस संकटा-पन्न अवस्थामें प्रभातहोगया। सूर्यके प्रकाशित होनेपर उस स्थानकी एक खिडकीसे वह चंद्रमुखी मेरी ओर देखने लगी उस समय जो हर्षहुआ वह मनहीं जानता है। ईश्वरका ध-न्यवाद किया। इतनेमें एक कंचुकीनें आकर कहा कि तुम जाकर इस उपासनागृहमें बैठ जाओ। कदाचित मनोका-मना पूरी हो जाय। मैं उसकी आज्ञासे उठकर उपासनागृहमें जा पहुँचा परन्तु नेत्र उस द्वारकी ओरही लगरहेथे कि देखिये ईश्वरेच्छासे क्या प्रकट होताहै? जिस भांति उपवासी अन्नकी

इच्छा करता है वैसेही उस दिनको मैंने आश और निराशके बीचमें काटा, वह दिनपर्बतकी समान जानपडा । एक साथ वह कंचुकी जिसने उस परीके स्थानका ठिकाना दियाथा उपासनागृहमें दिखाई दिया और उपासना करके मेरे पास आया और समझाया बुझाया फिर अपने साथ ले चला। जाते २ एक बागमें बैठा दिया और कहा कि तुम यहीं रहो और बिदाहोकर उस अप्सरासे मेरा समाचार कहनेंकेलिये गया। मैं उस बागमें फूलोंकी बहार, चांदनीका निखार, जलयंत्रोंके जलकी फुहारका तमाशा देख रहाथा। फूलोंको देखकर उस कुसुममुखीका ध्यान आ जाताथा। बिना उस मृगनयनीके यह समस्त शोभा मेरे लिये अत्यंत दुखदाई थी भगवानने कुछ देरमें उसके मनको दयालु किया कुछ देरके बाद वह परी द्वारसे इस प्रकार निकली जैसे पूर्णिमाका चंद्रमा आकाशमें उदयहोताहै उसके गलेमें मोतियोंका हार और जुगनू शोभायमान था। वस्त्राभूषणोंकी शोभाभी अपारथी। ओढनी जिसमें अंचल, पल्लू, लहर, गोखरु लगा हुआथा शिरपर पडी थी और सब ओरसे मोतियोंसे जडी थी इस प्रकारसे वह मृगनयनी पिक बयनी बागके चबूतरे पर आन कर खड़ी होगई। उसके आनें से इसबाग को और मेरे मनको .८ : प्रसन्नता हुई। वह सुन्दरी इधर उधर घूमकर पीछे चबूतरे पर आई और गद्दीपर तकिया लगाकर बैठगई। मैं दौड़कर इस भांतिसे उसके ऊपर बलिहारी होनेलगा जैसे पतंग दीपक पर बलिहारी होतेहैं। फिर दासकी नांई दोनोंहाथ जोड़कर खड़ा होगया। तदुपरान्त वह कंचुकी मेरी ओर से इस प्रकार प्रार्थना करने लगा कि अब इसका अपराध क्षमा कियाजाय। वह परी मुझसे अत्यन्त अप्रसन्नथी इसकारण कड़क कर बोली कि

"अब इस के लिये यही भलाहै कि सौ तोड़े अशर्फियों के लेकर सामग्री एकत्र करे और अपने घरको जाय"। इस बातको सुनतेही मैं काठहोगया, यदि कोई काटता तो शरीरसे एक बूंदभी रुधिरकी न निकलती। सम्पूर्ण संसार आँखोंके आगे अँधियारा सा दिखाई देनेलगा और निरासा के मारे मुँह से हाय शब्द निकलपड़ा, आंखों से आंसू निकलने लगे। परमेश्वरके अतिरिक्त और किसी का सहारा नहीं रहा। मैंने केवल इतनाही कहा कि जरा अपने मनमें तो बिचार कीजिये। जो मुझ अभागे को धनका लालच होता तो अपनी सम्पात्ति इस प्रकार से न खोता। क्या सेवा का फल और प्राणके बलिहारी करने का परिणाम इस संसार से उठगया जो मुझ अभागेपर इतनी कठोरता की, अच्छा! अब मुझेभी अपने प्राणों की कुछ माया नहीं। प्रेमिका की रुखाई से दीन हीन प्रेमीका निर्वाह नहीं होता। यह सुन तीखी हो त्यौरी चढाय अप्रसन्नतासे कहने लगी धन्यहो! आप हमारे प्रेमी हैं। मेंड़की को भी सर्दी हुई। अरे मूर्ख! अपने अधिकार से अधिक बातों का करना ठीकनहीं। छोटा मुँह और बड़ी बात!! चुपहो!!! वृथा बातें न बना! अगर कोई दूसरा ऐसी ढिठाई करता तो ईश्वरकी शपथहै मैं उसका मांस कटवाकर चील और कउओं को खिलाती। पर बिवशहूं तेरी सेवा याद आती है। अब इसही में भलाई है कि अपना मार्गले। हमारी सरकार में तेरा दान पान यहीं तक था। यह सुन कर मैंने रोते २ कहा कि यदि मेरे भाग्य में यही लिखा है कि मेरी मनों कामना पूरी न हो और जंगल व पर्वतोंमें टक्करें मारता फिरूं तो विवशहूं। इस बातसेभी रूठकर कहने लगी कि मुझे यह नखरे चोचलेकी बातें

नहीं भातीहैं जो इन बातोंके योग्य हो उससे जाकर यह बार्ता करना। फिर उसी क्रोधित अवस्थामें वहाँसे उठकर चलीगई। मैंने बहुतेरा शिर पटका परन्तु उसने ध्यान न दिया। तब मैंभी उस बागसे मलीन और उदास होकर निकला। इस भांतिसे चालीस दिन बीते। जब नगरकी गलियोंमें घूमनेसे जी ऊबता तो जंगलमें निकलजाता। जब वहाँसे घबडाता तो नगरकी गलियोंमे उद्भ्रान्तसा आता न दिनको खाता न रातको सोता। जैसे "धोबीका कुत्ता घरका न घाटका"। मनुष्यका जीवन खाने पीनेसेहीहै। मनुष्य अन्नका कीडाहै। अन्नके न खानेसे चलने फिरनेकी शक्ति न रही, बिवश होकर उसही उपासना गृहकी भीतके नीचे जा पडा। एक दिन वही कंचुकी शुक्रवारके दिन उपासना करने आया जब वह मेरे निकट होकर चला तो उस समय में यह दोहा पढ रहाथा।

दोहा–हे भगवन् करुणायतन, वेग मिलाओ मीत।
नाहिं तो चाहत चलन अब, कहा करी विपरीत॥

यद्यपि प्रगटमें सूरत बदलगई थी, मुखकी चेष्टा बदली थी, यहाँतक कि जिसने पहले मुझको देखा वह अब नहीं पहिचान सक्ताथा। परन्तु उस कंचुकीने मेरी कष्टभरी ध्वनिको पहचाना और निकट आय पश्चाताप करके कहने लगा "हाय! तूने अपनी यह दुर्दशा करली!" मैंने कहा "जो हुआ सो हुआ। संपत्तिकोभी वारा, प्राणभी नेवछावर करताहूं। उसकी यही इच्छाहै तो मैं क्या करूं? यह सुन वह कंचुकी एक सेवकको मेरे पास छोडकर उपासना गृहमें गया वहाँसे निश्चिन्त हो जब बाहर आया तो मुझे एक डोलीमें डालकर अपने साथ लेगया। तदुपरान्त उस कठोर चित्तको ले आया। यद्यपि मेरी

शक्ति सम्पूर्णतः जाती रहीथी परन्तु बहुत समय तक दिनरात उसका ध्यान करनेसे इस समय कुछ प्रेमका बल आगया। मुझे देख वह अनजानसी हो कंचुकीसे पूछने लगी कि यह कौनहै उसने कहा कि यह वही अभागा जो सरकारकी अप्रसन्नतासे क्रोधमें पडाथा। इसही कारणसे यह ऐसा होगया है और प्रेमाग्नि में जलाजाताहै,यत्नके साथ यह उसको नेत्र जलसे बुझाता है, पर वह दूनी भडकती है कुछ लाभनहीं होता, इसके अतिरिक्त अपने भाग्यके उपहाससे मरा जाता है। यहसुनकर उसपरीने कटाक्षसे कहा, क्यों बकता है, बहुत दिन हुए उसके देशमें पहुँचजानेका समाचार दूतोंने मुझको दियाहै। अरे यह कौनहै औरतू किसका जिकर करताहै उस कंचुकीने हाथ जोडकर प्रार्थनाकी यदि प्राणदान हो तो प्रार्थनाकरूं। आज्ञा दी कि कहतेरा अपराध क्षमाकिया। कंचुकी बोलाकि श्रीमती ईश्वरके लिये परदा उठाकर इसे पहचानिये तो और इसकी दीनदशापर कृपाकीजिये। अपरिचितका मिसबहुत होचुका अब इसके ऊपरकृपा दृष्टि की दृष्टि कीजिये तो उचितहोगा। आगे जो आपकी इच्छा हो वही ठीकहै इतने कहने पर हँसकर आज्ञादी भला कोई होगा इसको चिकित्सालयमें रक्खो अच्छा होजाने पर इसका वृत्तान्त पूछाजायगा। कंचुकीने कहा यदि अपने हाथसे इसपर गुलाब छिडकाजाय और कुछ कहाजाय तो इसको आशा उत्पन्न होसक्ती है। निराशा बुरीबस्तुहै संसारही आशापर स्थितहै। इसपर भी उसपरीने कुछ न कहा। मैं अपने जीवनसे अकुलाही रहाथा। इसकारण निठुरहोकर बोल उठा- कि अब इस प्रकारके जीवनको जी नहीं चाहता पांव तो समाधिमें लटकाचुकाहूँ। एकदिनतो मरनाही है, मेरी चिकित्सा इन

श्रीमतीके हाथ है चाहै करैं या नकरें। इसबातको सुनकर उस कठोर हृदयका जी नरमहुआ। कृपाकरके आज्ञादी कि शीघ्रराज्यवैद्यलोगोंको लेआओ। वैद्यआये नाडी देखकर और बहुत देरतक विचार करके इसप्रकारसे प्रार्थनाकी कि यहव्यक्ति किसी पर प्रेम रखताहै। प्रेमिकाके मिलजाने के अतिरिक्त इसकी कोई दूसरी चिकित्सानहीं। उसके मिलतेही यह भला चंगा होजायगा। जब वैद्योंने मुझे यह रोग बतलाया और आज्ञादी किइस को गर्म पानीसे निहलाकर अच्छी पोशाक पहनाय उसपरीके सामने पहुँचाया। तब वह नाजनीतपाकसे बोली कि तूने मुझे बैठे बिठाये नाहक बदनाम और रसवा किया और अब क्या-चाहताहै जोतेरे मनमें है साफ बयानकर ? यह बात सुनकर प्रसन्नताके मारे में इतना फूलाकि जामेंके भीतर नहीं समाताथा और सूरत बदलगई। ईश्वरका धन्यबाद किया और कहा कि इस समय सारी हकीमीपर इति होगई। मुझसे मुर्देको बात की बात में जीवित कियाहै देखो तो उस समयसे इस समयतक मेरी अवस्था में क्या अन्तर होगया यह कहकर तीन बार उसके चारों ओर फिरा और प्रार्थना की कि जो श्रीमतीकी आज्ञा हो। समस्त सम्पत्ति मे .ही मुझको अधिक है कि कृपा करके इस दीन को अपने च-.णों में स्थान दीजिये। एक क्षण भरतो यह बात सुनकर चुप होगई फिर कनखियों से देखकर कहा बैठो तुमनें विश्वास पात्रता और सेवा भी ऐसी कीहै कि जो कुछ कहो सब उचित है मेरे हृदय पर सब बातें लिखी हुई हैं अच्छा हमको स्वीकार है। उसही दिन शुभ लग्न महूर्तमें काजी साहबने निवाहकी क्रिया करादी। इतने परिश्रम और संकट के पीछे ईश्वरने

यह दिन दिखाया कि मैंने अपना इच्छा फलपाया। जैसी इच्छा उस सुन्दरी से मिलनेकी थी वैसेही उस घटनाको जान लेने के लिये व्याकुलताथी कि यह सुन्दरी कौन है। और यह सांवले रंगका सजीला हबशी जिसने एक पुरजे काग़ज़ पर अशर्फियों के इतने तोड़े मुझे देदिये कौनथा? बादशाहों के योग्य निमंत्रण की सामग्री एक पहरमें किस प्रकार से एकत्र होगई। और वह दोनों निरपराधी उस उत्सवमें किस कारण मारेगये? और मुझपर इस कठोर बर्त्ताव और रूक्षता का कौन कारण हुआ। फिर अचानक कैसे मुझ दीनकी मनोकामना पूर्णकी इनहीं बातोंका सोच बिचार करके बिवाह होजानेपरभी मैं आठदिनतक उससे अलगरहा। रातको एकसाथ बिना चीं चपड़ किये सोजाना और प्रभात को उठखड़ाहोना। एक दिन दासी से मैंने कहाकि स्नान करने के लिये थोड़ा पानी गरम करले! राज कुमारी ने मुसकुरा कर कहाकि "किस बूतेपर तत्ता पानी।" मैं चुपका होरहा परन्तु वह अप्सरा मेरी इस करतूत से चकितसी होगई। बरन बदन मंडलपर अप्रसन्नताके चिन्ह प्रगट होआये। एक दिन जब न सहागया तो इस प्रकारसे कहने लगी कि कहांतो इतने गरमथे और अब इतने ठंढे होगये यदि तुमको शक्ति नथी तो क्यों इस प्रकारकी इच्छा-की? उस समय मैंने निडर होकर कहा कि हे प्यारी! न्याय-उचितहै जो कुछ होनाथा सो होगया। मेरी समस्त मनो-कामना पूर्ण हुई परन्तु मन अबतक सन्देहमें पड रहाहै जिससे जी द्विचितरहा करताहै ऐसा करते २ मनुष्य सभ्यतासे विपरीत बर्ताव करने लगताहै। मैंने निश्चय करलियाथा कि विवाहके पश्चात् उन बातोंको आपसे पूछूंगा जो समझमें नहीं आती हैं

तो मनको धैर्य होजायगा। यह सुन उस परीने मेरी ओर देखकर कहा "वाह २! तुम अभीसे भूलगये? स्मरण करो कि बारम्बार मैंने तुम्हें क्या उपदेश कर दियाथा। मैंने कहाथा कि मेरी बातमें तुम विरुद्धता न करना। मैंने हँसकर कहा कि जैसी और ढिठाईके क्षमा करनेकी आज्ञाहै वैसेही इसकोभी क्षमा कीजिये। इतना सुनकर वह अप्सरा अत्यन्त क्रोधित हुई और बोली "तुम बहुत शिर चढगये, अपना काम करो, इन बातोंसे क्या लाभ होगा"? मैंने कहा संसारमें सबसे अधिक लाज अपने अंगकी होतीहै। परन्तु एक दूसरेके भेदको सबही जानतेहैं फिर जब इसहीमें कुछ परदा नहीं तो और कौनसा भेद मुझसे छिपानेके योग्यहै? मेरी इस हँसीको वह सुन्दरी बिचारसे समझकर कहनेलगी कि यह बात सचीहै, पर सोच इस बात काहै कि जो मुझ निगोडीका भेद खुल जाय तो बडी आपत्ति आवे। मैंने कहा कि आप ऐसा विचार अपने जीमें न लावें और प्रसन्नतासे सब समाचार अपना कहें मैं कदापि किसीसे नहीं कहूंगा। जब उसने देखा कि बिना कहे काम नहीं चलेगा तो बिवश होकर बोली कि इन बातोंके कहनेमें बहुतसी बुराइयां हैं तुम वृथा उनको सुनलेनेकी हठ ठान बैठेहो। अच्छा तुह्मारा न्मान करतीहूं इस कारण समस्त वर्णन करना पडा। तुमको । उचितहै कि इस वृत्तान्तको भलीभांतिसे छिपाना। इस प्रकार अनुरोध उपरोध करके कहनेलगी कि मैं अभागिनी दमिश्कके बादशाहकी कन्याहूं। मेरा पिता सब बादशाहोंमें बडाहै मेरे अतिरिक्त उसके यहाँ कोई संतान नहीं थी। जिस दिनसे मैं उत्पन्न हुई मा बापने अत्यन्त लाड प्यारसे लालन पालन किया। जब कुछ बडी हुई तब अपने मनको सुन्दर स्त्रियोंसे

लगाया इसही कारणसे मेरी सेवामें देवकन्या गणकी समान सुन्दर २ सहेलियां रहती थीं नाचने गानेका व्यसन सदासे था। दुनियांके भले बुरेसे कुछभी काम न था। निश्चिन्त होकर परमेश्वरके अतिरिक्त किसीसे भय नहीं करती थी। अचानक एक बार ऐसी मन मलीन हुई कि किसीका साथ अच्छा नहीं लगता था, व्याकुलता बढती जाती थी न किसीकी सूरत अच्छी लगे न बात कहने सुननेको जी चाहै। मेरी अवस्था ऐसी देखकर धाय, सहेली, रक्षिका इत्यादि चिन्तातुर होकर मेरे पाँवोंपर गिरने लगीं। यही कंचुकी सदासे मेरा विश्वासपात्र, सब भेदोंका जाननेवाला है, मेरी कोई बात इससे नहीं छिपी। मेरी व्याकुलता देखकर यह कहने लगा कि यदि श्रीमती मेरा बनाया हुआ थोडासा मधुर जल पियें तो मन प्रसन्न होजाय और घवडाहट जाय। कंचुकीके ऐसा कहनेसे मुझे भी उसके पीनेकी चाहत हुई, आज्ञा दी कि शीघ्र उसको ले आओ। वह बाहर गया और एक पात्र मधुर जलका बनाकर एक लडकेके हाथ से लिवा लाया। मैंने उसको पिया तो उसके कहनेके अनुसार पाया तब मैंने कंचुकीको भली भांतिसे पुरस्कार दिया और आज्ञा दी कि एक पात्र नित्य प्रति यहांपर लाया करो उस दिनसे यह कंचुकी उसही लडकेके हाथ मीठा पानी लिवालाया करता था और मैं उसको पी जाती थी। जब उसका कुछ २ नशा होता तब उसही लडकेसे हास उपहास करके अपना जी बहलाया करती थी। वह भी जब ढीठ हुआ तब अच्छी २ और मीठी २ बातें करने लगा, कभी २ हाय २ करता था। कभी सिसकारियें भरता था उसकी सुन्दरता देखने योग्य थी, उसके देखनेको नित्यप्रति उत्कंठा बढने लगी, मैं प्रति दिन

उसको पुरस्कार देने लगी। परन्तु वह अभागा वैसेही फटे हालोंसे जैसे नित्य आया करता था मेरे पास आता रहा। वरन वह मैले कपडे और भी अधिक मैले होगये। एक दिन मैंने पूछा कि तुझे सरकारसे इतना मिला पर तूने अपनी सूरत वैसीही मैली कुचैली बना रक्खी है। क्या कारण है, वह रुपये कहां गये और कहाँ डाले? या तैंने जोड रक्खे हैं। लडकेने जब यह सहानुभूतिकी बातें सुनी तो मुझसे अपना समस्त वृत्तान्त आँखोंमें आँसू भरकर कहने लगा कि जो कुछ आपने इस दासको दिया वह सब उस्तादनें लेलिया मुझे एक पैसा नहीं दिया, फिर मैं कहांसे नये कपडे बनाऊं जो सरकारमें पहनकर आऊं। इसमें मेरा अपराध नहीं विवशहूं। उसकी यह व्यवस्था सुनकर मुझे दया आई और कंचुकीको आज्ञादी कि आजसे इस लडकेको सभ्यता सिखा और नये कपडे पहरा। इधर उधरके लडकोंमे वृथा खेलने कूदने मतदे। वरनमैं यह चाहतीहूं कि यह सरकारी नियमानुसार वर्त्ताव करना सीखजाय और यहींपर रहा करे। कंचुकीने मेरे कहनेके अनुसार कार्य किया और मेरा अनुरोध जो इधर देखा तो बडी सावधानीसे उसका पालन पोषण करने लगा। कुछ दिनमें खाने, पीने, पहरने और निश्चिन्त होनेसे उसका रंगढंग कुछ औरही होगया और उसने केंचुली उतारदी, मैं बहुतही संभालतीथी पर उस अभागेकी सूरत मनमें ऐसी गडगईथी कि उसको कलेजेमें छिपा रखनेकी इच्छा होतीथी। अंतमे यह हुआ कि उससे प्रेम लगाया और भांति २ की भेंट रत्न, रंग बिरंगके वस्त्र मैं उसको उपहारमें देने लगी। क्या कहूं उसके निकट रहनेसे आँखोंको सुख और कलेजेको ठंडक हुई। दिनभर उसका चाव चोचलाही करते बी-

तताथा। फिर तो मेरी यह अवस्था हुई कि यदि वह मेरे पाससे कुछ विशेष कार्यके लिये जाता तो मुझे चैन न आता। कई वर्ष पीछे वह समरथ होगया रेख उठने लगी, सूरत मूरत ठीक हुई। तब दरबारी लोग बाहर उसका चरचा करने लगे। दरवान, महलके पहरुये राज भवनके भीतर आने जानेसे उसको बर्जने लगे। फिर उसका आना जाना रहित किया गया परन्तु मुझे उसके बिना चैन कहाँ पडताथा एक २ पल पहाडथा। इस अमंगल समाचारको सुनकर मेरे ऊपर बज्रसा टूट पडा और ऐसी बुरी गती हुई कि क्या कहूं बिना कहे चैन नहीं पडता। कुछ बस नहीं चलताथा, बडा कलक हुआ। जब अत्यंत घबडाई तब उस कंचुकीको पास बुलाकर सारी बिथा कह सुनाई और समझाया कि मैं उस लडकेको अपनाय चुकी हूं इसलिये यह अच्छा होगा कि हजार असरफियें जमाकी देकर तुम उसको इस चौराहेपर दूकान करादो तो व्यौपार करके उसके नफेसे अपना निर्वाह करता रहैगा। मेरे महलके निकट एक हवेली बहुत अच्छी उसके रहनेको बनवादो। दास दासी, नौकर, चाकर जिसकी आवश्यकता हो सबको मोल लेकर और मासिक ठहराकर उसके पास रखदो। वहांपर किसी भांतिकी कसर न रहने पावै। कंचुकीने उसके रहने सहने, व्यौपार करने, और उठने बैठनेकी सब सामग्री इकठ्ठी करदी थी। थोडेही दिनमें उसकी दूकान ऐसी चमकी और नामवाली हुई कि बडे २ धनवानोंके और स्वयं बादशाहके यहां जो बडे २ अनमोल रत्न लिये जातेथे वह उसहीकी दूकानसे मोल लिये जाने लगे। धीरे २ हाट ऐसी जमी कि देश २ की नामी वस्तु उसहीके यहां मिलती थी। जितने जौहरीथे उन सबका व्यौपार

उसके आगे मंदा पडगया, उसकी बराबरी करनेवाला नगर भ-रमें कोई नहीं रहा। इस कारबारमें उसने लाखों रुपये कमाये, परन्तु उसका वियोग मुझको दिन २ दूना सताने लगा, कुछभी जतन न करसकी जो उसको देखकर अपनी छाती ठंढी करती फिर उसही कंचुकीको बुलाया और कहाकि कोई ऐसा उपायकर जिस्से मैं उसको देख लिया करूं और अपनेजीकी आशा पूरी करूं मेरी यह इच्छा है कि उसकी हवेलीसे एक सुरंग खुदवाकर मेरे महलमें मिला दीजाय। आज्ञा पातेही कुछ दिनोंमें उसने ऐसी सुरंग तइयार करवादी कि जिस्से मेरी मनोकामना पूरी हुई सांझ होनेपर वह कंचुकी चुपचाप मुझको उस मार्गसे लेजाता। सारी रात आनंद आहार, विहार और आनंदमें कटती। मैं तो उसके मिलनेसे आरामपाती और वह मुझे देखनेसे प्रसन्न होता। कभी २ वह स्वयंभी मेरे यहाँ आया जाया करता था। जब प्रभात होनेके चिन्ह दिखाई देते तब यह कंचुकी उसको घरपर पहुँचा दिया करता था। इन बातोंको उस कंचुकीके और दो धायोंके अतिरिक्त कि जिन्होंने मुझको दूध पिलाकर पाला था चौथा कोई नहीं जानता था। इसही भांतिसे बहुत दिन बीतगये एक दिन ऐसा हुआ कि नित्य नियमके अनुसार वह कंचुकी उसको बुलाने गया देखा तो वह युवा अकेला किसी चिन्तामें [illegible]है। कंचुकीने पूछा कि आज किस कारणसे मन मलीन [illegible] तन छीनहो चलो सरकारने बुलायाहै उसने कुछभी उत्तर [illegible] दिया। कंचुकी अपनासा मुँह लेकर अकेला फिर आया और उसके उत्तर न देनेका हाल मुझसे कहा। मुझे तो भगवान भट-काना चाहताथा इस कारण प्रेम उसका न भूलसकी। जो ऐसा जानती तो ऐसे विश्वासघाती कृतघ्नीकी प्रीति अंतमें दुर्नामताका

कारण होगी तो तत्काल प्रीतिका मुँह कालाकरती और फिर उसका नामतक न लेती, न अपना जी उस निर्लज्जके ऊपर फँसाती परन्तु होनी कब टलतीहै। इस कारण उसका अपमान भी ध्यानमें न लाई और उसके न आनेको प्रेमीका चोचला और गौरव समझा, उसका परिणाम और फल मैंने गोदभरके पायाहै। अच्छा जो हुआ सो हुआ। इस प्रकार उसके चुप रहनेपरभी कंचुकी द्वारा दुवारा उसके पास समाचार भेजा और कहला भेजा कि—यदि तू इस समय न आवेगा तो मैं अवश्य किसी भाँतिसे वहीं आ जाऊँगी, परन्तु मेरे आनेमें बडी कठिनताहै। जो यह भेद खुलजाय तो तेरेलिये बहुतही बुराहै। ऐसा काम न कर जिसमें अपमानके अतिरिक्त और कुछभी फल न मिले, अच्छा इसीमें है कि शीघ्र चले आओ, नहीं मुझे पहुंचाजानो। जब यह संदेशा गया और मेरा अनुराग अत्यंत दृढ देखा तो रोनीसी सूरत बनाए हुए बडे नखरोंसे आया। उसके पास बैठनेपर मैंने पूछा कि आज अप्रसन्नता और न आनेका क्या कारणहै? इतनी ढिठाई और चंचलता कभी न की थी सदा चुपचाप चले आते थे। तब उसने कहा कि मैं अप्रसिद्ध दीन श्रीमतीकी कृपा और दयालुतासे इस अधिकारको पहुँचा कि आनंदके साथ जीवन व्यतीत होताहै मैं दिन प्रति भगवानसे आपकी बढती मनाताहूं। इस अपराधको क्षमा पानेके भरोसेपर कियाहै। मैं तन मन धनसे उसपर बलिहारथी इस लिये उसकी बनावटी बातोंको मान लिया और ढिठाई पर ध्यान न दिया वरन प्रेमके साथ पूछा कि तुमको क्या कठिनता आन पडी जो इतने चिन्तित हो? कहो तो उसका उपायभी होजायगा। तब उसने अत्यन्त विनयसे कहा

कि मुझको सब कठिन है और आपको सब कार्य सरलहैं। अंतको उसकी कहन सुनन और आकार प्रकारसे यह प्रगट हुआकि एक बाग बहुत अच्छाहै,उसमें अनेक प्रकारके अच्छे२ सरोवर और स्थानादि बने हुएहैं, वह बाग उसकी हवेली के निकटही विकाऊहै। बाग के साथही एक दासी भी जो स्त्री विद्यामें भली भांतिसे चतुरहै बिकतीहै। परन्तु बाग़ का मोल लाख रुपया और उस बांदी का मोल पांच लाख रुपयाहै। इन दोनोंमेंसे कोई वस्तु अकेली नहीं बिकसकती दोनों साथही बिकती हैं। परन्तु मेरेपास इस समय इतने रुपये कहांहैं। मैंने उसके मनको बाग़पर बहुतही चलताहुआ देखा। यद्यपि वह मेरेपास बैठाथा तथापि मुख मलीन और छीनथा। मुझेतो सब समय उसका मन रखनाथा तत्काल अपने कंचुकीको आज्ञादी कि प्रभात होतेही उस बाग़को दासी समेत मोल लेकर इसको सौंपदो और मोल सरकारी धनागारसे दिलादो। इसबातको सुनतेही उसने मुझे झुककर प्रणामकिया और मुँहपर प्रसन्नता आई। सम्पूर्ण रात्रि उसी नियमसे जैसे सदा व्यतीत होतीथी हँसी खुसीसे कटी, सवेरा होतेही वह चलागया। कंचुकीने सरकारी आज्ञाके अनुसार उस बाग को उस बांदीके साथ मोलले-कर उसको देदिया। फिर वह युवा नियमानुसार रातको आया [illegible]या करता। एक दिन वसंतका समयथा, स्थान सब भांतिसे [illegible]जरहाथा, घटा उमड़रही थी, फुहार पड़रहीथी, बिजली चमक-[illegible]हीथी, पवन सन मनारहीथी। निकटही फूलोंकी शोभा दिखाई देतीथी। जीमें आया कि "थोड़ीसी पीलूं" जब दो तीन प्याले पीलिये तो उस नयेमोल लियेहुए बागका और उस दासी का ध्यान आया। सूझीकी इस समय वहांपर भ्रमण किया चाहिये।

कमबख्ती आवै तो ऊंट चढ़े। अच्छी तरह बैठे बिठाये सनीचर सवारहुआ। एक दाईको साथ लेकर उस सुरंगके मार्गसे उस युवाके घर पहुँची और वहांसे बागकी ओर चली! देखा तो उस बागकी शोभा नन्दनबनकी सुन्दरता को पराजित करतीहै। ओसकी बूंदें वृक्षोंके हरे २ पत्तों पर पडीहैं उनसे ऐसी शोभाहोरही है मानोहरे पत्थरके वृक्षों पर मोतीलगेहैं और फूलों की लाली उस घटामें अच्छी लगतीहै जैसे सन्ध्या के समय सांझ फूल आई है। कि तारों तक भरीहुई नहों दर्पणके बिछोनें की नांईं दिखाई देतीहैं, तरंगें उछलती हैं। मैं उस बागमें इधर उधर भ्रमण करती फिरतीथी कि दिन व्यतीत हुआ, अंधकारका राजजमा। इतने में वह युवा बगीचेके मार्गपर टहलता हुआ, दिखाई दिया। मुझे देखकर अत्यंत प्रतिष्ठा और शीघ्रतासे आगेबढ़ा और हाथ पकड़ कर मुझे बारहदरी की ओर लेगया। वहां पहुँचनेपर मैं सारे बागकी सुन्दरता को जैसे भूलबैठी। वहां रोशनीका बड़ा ठाटथा। इधर उधर कुमकुमे, दीपक, कंडील और झाड़ जलरहेथे। उस बारह दरीकी उजियाली के सामने दिवाली और पूर्णमासी की रातभी फीकी लगतीथी। एक ओर अग्निक्रीड़ाका कौतुकथा, फुलझड़ी, अनार, हवाई, छछूंदर, जूही, फुहारे, और सितारे छूट रहेथे। इसही अवसर में बादल के फटनेंसे चंद्रमा निकल आया वह ऐसा दिखाई दिया जैसे पीला जोड़ा पहने बसन्त चला आता है। बड़ा आनंद हुआ। चांदनी चटकने लगी। युवाने कहा कि अब चलकर बागकी बारहदरी में बैठिये। मैं ऐसी बुद्धिहीन होगई थी कि वह दुष्ट जो कुछ कहता मानलेती। अब यह नाच नचाया कि मुझको ऊपर लेगया। वह कोठा ऐसा

ऊंचाथा कि सम्पूर्ण नगरके स्थान और बाजारके चिराग वहांसे दिखाई देतेथे । मैं उस युवाके गलेमें हाथ डाले हुए आनंद से बैठीथी कि एक रंडी बुरी सूरत बनाये काली कलूटी शराबका शीशा हाथमें लियेहुये आ पहुँची उसका उससमय आना मुझे बहुतही बुरालगा व उसकी सूरतको देखनेसे जी घबडाया। तब मैंने उस युवासे पूछा कि यह कहाँ का अनमोल पदार्थ-है ? तब वह युवा हाथ जोड़कर कहने लगाकि यह वही बांदी है जो इस बागके साथ श्रीमती की कृपासे मोलली है । मैं समझगई कि इस मूर्खने बड़ी लालसासे इसको मोललियाहै, कदाचित इसकाजी इसपरगयाहै इसही कारणसे मैं सात पांच विचार चुपकी होगई । परन्तु उसही समय जीपर घिनसी हुई और अप्रसन्नताका संचार हुआ। तिसपर एक और फफोला फूटा कि उसही छिनालको उस युवाने पिलानेवाली बनाया। उस काल में अपना रुधिर पीतीथी और जैसे तूतीको पींजरेमें बन्द करके कैद करलिया जाता है, उसही भाँतिसे मैं विवश होगई थी। कहानी यही है अब यही कहना बहुत होगा कि उस शराबकी एक २ बूंद ऐसी थी जिसके पीनेसे आदमी पशु बन जाय। दो चार प्याले बराबर उस युवाको पिला दिये और आधापात्र उसके कहनेसे मैंने भी जहरके समान घूंट लिया।उस ली डाइनने भी भलीभांतिसे पी और नशेमें होकर उस दुष्टा-से निर्लज्जताकी बातें करने लगी और वह पापी भी उसके ..य लोट पोट होने लगा। यह देखकर मुझे ऐसी लाज आई कि कुछ कहा नहीं जाता। यदि धरती फटती तो मैं उसके बीच समाजाती।परन्तु उसकी मित्रताके कारण मैं इतनेपर भी चुपकी होरही । पर वह तो असलका पाजी था मेरे इस मौनसाधनको

न समझा और नशेकी उमंगमें और भी दो प्याले चढागया कि रहा सहा चेत भी जाता रहा और मेरा डर जीसे सम्पूर्णतः निकाल दिया। निर्लज्जता और नशेके मारे मेरे सामनेही उस बांदीसे बिहार किया और वह व्यभिचारिणी भी पडी हुई हाय हाय करने लगी। आलिंगन और चुम्बन होनेलगा। न उस कठोरमें प्रेम न उस निर्लज्जमें लाज। सत्यहै "पानीसे पानी मिले, मिले कीचसे कीच।" मेरी उस समय यह अवस्था कि "औसर चूकी डोमनी गावै ताल बेताल।" अपनेको बारम्बार धिक्कार देतीथी। जान निकलनेको हुई, अपने कियेका फल भोगा। कहाँतक सहती? शिरसे पाँवतक आगसी लगगई। क्रोध और आवेशमें यह कहतीहुई कि "बैल न कूदा कूदी गौन। यह तमाशा देखै कौन?" वहाँसे उठी, उस शराबीने अपनी खराबीका दिलमें बिचार किया कि जो राजकुमारी इस समय अप्रसन्न होगई तो कलको मेरे ऊपर कौनसी बिपत्ति नहीं आवैगी अतएव यही ठीक है कि मैं अभी इसका काम पूरा कर डालूं। यह बिचार गलेमें डुपट्टा डाल मेरे पाँवपर आगिरा और हाथ जोडकर प्रार्थना करने लगा कि क्षमा कीजिये। मेरा जी तो उसपर लट्टू तो होही रहाथा, इस कारण जिधर वह लिये फिरताथा उधरही फिरतीथी और जो कुछ कहता वह करतीथी। फिर मुझे बहला बहला कर दोचार प्याले पिला दिये और आपभी पिये। एक तो वैसेही क्रोधके मारे जल भुनरहीथी, तिसपर फिर वह नशीली शराब? तत्काल अचेत हुई तब उस कठोर कृतघ्नीनें तलवारसे मुझे घायल किया। अपने लेखे तो वह मुझको मारही चुकाथा। उस समय मेरी आँख खुली तो मुँहसे यह निकला कि अच्छा जैसा हमने किया वैसापाया परन्तु अपने लिये इस वृथा हत्याके पापसे बचना।

दो०—भलीकरी जो तुमकरी, लिये हमारे प्रान ।
पै एहि हत्याके लगे, होय न कितहू त्रान ॥

किसीसे इसभेदको प्रगट मत करना। हमने तो यहां तक तुझे प्यार किया और तुमने उसका प्रतिफल इस प्रकारसे दिया। फिर उसको ईश्वरके समर्पण करके मेराजी डूबगया मुझे अपनी कुछभी सुध बुध न रही । कदाचित उस पाषाणहृदयने मुझे मुरदासमझ उस संदूकमें डाल किलेकी भीतके तले लटका दिया सो तुमने देखा। मैं किसीका बुरा नहीं चाहतीथी। परन्तु यह बुराइयें भाग्यमें लिखीथी । कर्मकीरेखा किसी प्रकारसे नहीं मिटती। इन नेत्रोंके कारण सब कुछ देखना पडा। यदि सुन्दरताईकी पूजा न करती होती तो वह आभागा मेरे गलेका हार न होता। भगवानने यह काम किया कि तुझको वहां पहुँचाया और कारण मेरे जीवनका हुआ। अबजीमें लाज आतीहै कि यह दुर्नामता उठाकर अपने लिये जीवित न रक्खूं किसीको मुँह न दिखाऊं। पर क्या करूं मरनेका अधिकार अपने हाथमें नहीं। भगवानने मारकर फिर जिला दिया आगे देखिये किक्या होनहारहै? प्रगटमें तो तेरी दौड धूप और सेवा काम आई जो ऐसे घावोंसे भी मरने नहीं पाई। तूने धन मन तनसे मेरा मान किया और जो कुछ अपनी बिसातथी कर बैठा। उन दिनोंमें को खर्चमे तंग देखकर मैंने वह रुका अपने कोषाध्यक्ष ीवहारको इस आशयका लिखा कि मैं कुशलहूं । मुझ भागिनीका समाचार मातासे कहियो। उसने तेरे साथ बहुतसी अशरफियाँ खर्च करनेको भेजदी। और जब तुझे वह शिरोपाव और रत्नको मोल लेनेके लिये यूसुफ सौदागरकी दूकान पर भेजा तो मुझे यह भरोसाथा कि वह

अपरिणामदर्शी प्रत्येकसे शीघ्र मिल बैठता है, तुझेभी अपरिचित जान आश्चर्य नहीं जो मित्रता करनेंके लिये निमंत्रण कर बैठे यदि ऐसाहो तो मेरी मनोकामना पूर्णहोगी। मेरा बिचार ठीक बैठा, जो कुछ मैंने सोचाथा उसने वैसाही किया। जब तू उसको आनेंका बचन देकर मेरे पास लौट आयाथा और पहुनईकी व्यवस्था व उसका स्वभाव मुझसे कहने लगा तो मैं अपने मनमें प्रसन्न हुई और सोचा कि जब यह उसके घर जायकर खायपियेगा तो संभव है कि वह भी निमंत्रण पाकर यहां आजाय। जब तुम तीन दिनके पीछे वहाँसे आये और मेरे सामने अपनी अनुपस्थितिके अपराधकी क्षमाचाही तब मैंने तुम्हें धीरज देनेके लिये कहदिया कि कुछ चिन्ता नहीं जब उसने आज्ञादी तब तुम आये। परन्तु निर्लज्जता ठीक नहीं कि दूसरेका उपकार अपने ऊपर रक्खे और उसका बदला न दे। अब तू भी जाकर उसकी पहुनईका न्योता देआ और अपने साथही लिवाला। तुम तो उधरगये और इधर मैंने देखा कि यहाँ पहुनईकी सामग्री कुछ भी तइयार नहीं यदि वह आजायगा तो क्या करूंगी परन्तु इतना अवकाश पाया कि प्राचीन समयसे इस देशके बादशाहोंका यह नियम है कि आठ महीनेतक देशके सर्व साधारणकी दशा जाननेके लिये बाहर रहते हैं और चौमासेके बीच घरमें रहते हैं। इन दिनों दो चार महीनेसे बादशाह अर्थात् मेरे पिताजी प्रबन्ध करनेके लिये बाहर चले गए हैं जब तक तू उसयुवाको साथ लेकर आये कि इसही समयमें अवसर जानकर शीदीबहारने मेरा वृतान्त बादशाहकी बेगम साहिबासे जो मेरी माताहै कह सुनाया। मैं भी अच्छा समय जान लाज शरमको छोड उनके

सामने जाकर खडी हुई और सब बात ज्यों की त्यों कह सुनाई बहुतेरा उन्होंने मेरे लोपहोनेकी व्यवस्था दूरदर्शिता और अपनी दयालुतासे छिपा रक्खी थी कि भगवान जाने इसका परिणाम क्या हो? इस दुर्नामताको बढाना ठीकनहीं। उन्होंने मेरे बदलेमें मेरे औगुनोंको अपने पेटमें रखछोडाथा। परन्तु थीं मेरी खोजमें। जब मुझे इस दुर्दशामें देखा और सब वृत्तांत सुना तो आँसू भरलाई और कहने लगीं कि "अरी अ-भागिन! तैंने जान बूझकर बादशाहकी सारीप्रतिष्ठा धूरिमें मिलादी। शोक!शोक!महाशोक!!! और अपने प्राणसे भी हाथ धोया। जो तेरे बदले मेरे पेटसे पत्थर उत्पन्नहोता तो बहुतही अच्छा था अब भी कान पकड, तो भाग्यमें था सो हुआ। अब आगे क्या करेगी, जियेगी या मरेगी?" मैंने अत्यंत ला-जसे कहा कि "मुझ निर्लज्जके भाग्यमें यही लिखा था जो इस दुर्नामता और इस कुसंगमें फँसी तथा ऐसी आपत्तियोंसे बच-कर जीती रही। अबतो मेरा मरनाही भलाहै; यद्यपि कलंक का टीका माथेपर लगा पर ऐसा काम नहीं किया जिससे मा बापका प्रतिष्ठा बिगड़े। अब यह बड़ा दुःखहै कि वह दोनों मेरे हाथसे बचेरहें और परस्पर आनंद मनावें तथा में उनके हाथों से ऐसे २ दुःखपाऊं। आश्चर्य है कि मुझसे कुछ न होसके। ...गा करतीहूं कि भंडारी को आज्ञाहो तो निमंत्रणकी सामग्री ...ी भांतिसे इस अभागिनी के स्थानमें तइयार करदें! तो मैं ...मंत्रण के बहानेसे उन दोनों को बुलाकर उनके पापका दंडदूं और बदलालूं। जिस प्रकार उसने मेरे ऊपर हाथ छोड़ा और घायलकिया. वैसेही मैंभी दोनोंके टुकड़े टुकड़े करूं, तब मेरा जी ठंढाहो। नहींतो इस क्रोधकी आगमें भसम होरहीहूं। एक

न एक दिन जल भुनकर भूभल होजाऊंगी।" अम्माने यह सुनकर पेटकी अग्निसे कृपालुहो मुझे ढांढस बँधाया और निमंत्रणकी संपूर्ण सामग्री उसही कंचुकीके साथ जो मेरा बिश्वासपात्रहै करदी। सब अपने २ कारखानेमें आकर पहुंचगये। संध्या के समय तुम उसको साथलेकर आये, मुझे उस छिनाल बांदी कोभी बुलवाना स्वीकार था इसीसे फिर कहकर तुम्हारे द्वारा उसको बुलाया। उसके आनेपर शराबका समा बँधगया सब लोग नशेमें चूर होगये। तूभी उनके साथ अचेत होकर मुर्दासा पड़ाथा मैंने अपने विश्वासु सेवकको आज्ञादी कि उन दोनों का शिर तलवारसे काटडाल उसने तत्काल तलवार निकाल दोनोंके शिरकाट बदन लाल करदिये और तुझपर क्रोध का यह कारण था कि मैंने केवल निमंत्रण की आज्ञादीथी और तुम उन दोनोंकी मित्रता का विश्वास करके उनकेसाथ सुरा पीनेलगे। संक्षेप यहहै कि तेरी यह मूर्खता मुझे नहीं भाई। कहनेलगी कि तू पीकर अचेतहुआ फिर क्या आशाहै कि तू निर्वाह करे! यह तेरी सेवाके अधिकारकीही बातहै जो तुझसे ऐसी बातहुई। अबक्षमा करतीहूं। मैंने अपना समस्त वृत्तान्त आदिसे अंत तक सुनादिया। अबभी तेरे मनमें कुछ शेष है। जिस प्रकार मैंने तेरी समस्त प्रार्थना को स्वीकार किया, वैसेही हमारी आज्ञाको तू अमल में लाना। उचित तो यहहै कि अब इस नगरमें रहना मेरेतेरे लिये भलानहीं आगे जो इच्छाहो। इतना कहकर शाहजादी चुपहोरही। मैंतो सब प्रकारसे उसकी आज्ञाको सर्वोपरि जानताथा और उसका प्रेम पियासाथा इस कारण कहा कि जो आपकी इच्छाहो सो मुझे स्वीकारहै? जब शाहजादी ने सब भांतिसे मुझे अपना अनुगत पाया तो आज्ञा

सामने जाकर खडी हुई और सब बात ज्यों की त्यों कह सुनाई बहुतेरा उन्होंने मेरे लोपहोनेकी व्यवस्था दूरदर्शिता और अपनी दयालुतासे छिपा रक्खी थी कि भगवान जाने इसका परिणाम क्या हो? इस दुर्नामताको बढाना ठीकनहीं। उन्होंने मेरे बदलेमें मेरे औगुनोंको अपने पेटमें रखछोडाथा। परन्तु थीं मेरी खोजमें। जब मुझे इस दुर्दशामें देखा और सब वृत्तांत सुना तो आँसू भरलाई और कहने लगीं कि "अरी अ-भागिन! तैंने जान बूझकर बादशाहकी सारीप्रतिष्ठा धूरिमें मिलादी। शोक!शोक!महाशोक!!! और अपने प्राणसे भी हाथ धोया। जो तेरे बदले मेरे पेटसे पत्थर उत्पन्नहोता तो बहुतही अच्छा था अब भी कान पकड, तो भाग्यमें था सो हुआ। अब आगे क्या करेगी, जियेगी या मरेगी?" मैंने अत्यंत ला-जसे कहा कि "मुझ निर्लज्जके भाग्यमें यही लिखा था जो इस दुर्नामता और इस कुसंगमें फँसी तथा ऐसी आपत्तियोंसे बच-कर जीती रही। अबतो मेरा मरनाही भलाहै; यद्यपि कलंक का टीका माथेपर लगा पर ऐसा काम नहीं किया जिस्से मा बापका प्रतिष्ठा बिगड़े। अब यह बड़ा दुःखहै कि वह दोनों मेरे हाथसे बचेरहैं और परस्पर आनंद मनावें तथा मैं उनके हाथों से ऐसे २ दुःखपाऊं। आश्चर्य है कि मुझसे कुछ न होसके। [illegible]शा करतीहूं कि भंडारी को आज्ञाहो तो निमंत्रणकी सामग्री [illegible]ी भांतिसे इस अभागिनी के स्थानमें तइयार करदें! तो मैं [illegible]मंत्रण के बेहानस उन दोनों को बुलाकर उनके पापका दंडदूं और बदलालूं। जिस प्रकार उसने मेरे ऊपर हाथ छोड़ा और घायलकिया, वैसेही मैंभी दोनोंके टुकड़े टुकड़े करूं, तब मेरा जी ठंढाहो। नहींतो इस क्रोधकी आगमें भसम होरहीहूं। एक

न एक दिन जल भुनकर भूमल होजाऊंगी।" अम्माने यह सुनकर पेटकी अग्निसे कृपालुहो मुझे ढांढस बँधाया और निमंत्रणकी संपूर्ण सामग्री उसही कंचुकीके साथ जो मेरा बिश्वासपात्रहै करदी। सब अपने २ कारखानेमें आकर पहुंचगये। संध्या के समय तुम उसको साथलेकर आये, मुझे उस छिनाल बांदी कोभी बुलवाना स्वीकार था इसीसे फिर कहकर तुम्हारे द्वारा उसको बुलाया। उसके आनेपर शराबका समा बँधगया सब लोग नशेमें चूर होगये। तूभी उनके साथ अचेत होकर मुर्दासा पड़ाथा मैंने अपने विश्वासु सेवकको आज्ञादी कि उन दोनों का शिर तलवारसे काटडाल उसने तत्काल तलवार निकाल दोनोंके शिरकाट बदन लाल करदिये और तुझपर क्रोध का यह कारण था कि मैंने केवल निमंत्रण की आज्ञादीथी और तुम उन दोनोंकी मित्रता का विश्वास करके उनकेसाथ सुरा पीनेलगे। संक्षेप यहहै कि तेरी यह मूर्खता मुझे नहीं भाई। कहनेलगी कि तू पीकर अचेतहुआ फिर क्या आशाहै कि तू निर्वाह करे! यह तेरी सेवाके अधिकारकीही बातहै जो तुझसे ऐसी बातहुई। अबक्षमा करतीहूं। मैंने अपना समस्त वृत्तान्त आदिसे अंत तक सुनादिया। अबभी तेरे मनमें कुछ शेष है। जिस प्रकार मैंने तेरी समस्त प्रार्थना को स्वीकार किया, वैसेही हमारी आज्ञाको तू अमल में लाना। उचित तो यहहै कि अब इस नगरमें रहना मेरेतेरे लिये भलानहीं आगे जो इच्छाहो। इतना कहकर शाहजादी चुपहोरही। मैंतो सब प्रकारसे उसकी आज्ञाको सर्वोपरि जानताथा और उसका प्रेम पियासाथा इस कारण कहा कि जो आपकी इच्छाहो सो मुझे स्वीकारहै? जब शाहजादी ने सब भांतिसे मुझे अपना अनुगत पाया तो आज्ञा

दी कि " दो घोड़े चालाक और परिश्रमी पवनकी नाईं शीघ्र-गामी बादशाहकी अश्वशालासे मँगवाकर तइयार कर।" मैंने वैसेही घोड़े जैसे उसने बतलाएथे जीन कसवाकर मँगवालिये। जब थोड़ीसी रात रहगई तब राजकुमारी पुरुषरूप बनाय पांचों शस्त्र बांधकर एकघोड़ेपर बैठी और दूसरे घोड़ेपर मैं हथियार बांध कर बैठगया और एक ओरका मार्गलिया। जब प्रभात होने-लगा तब एक सरोवरके पास पहुँचे। उतर कर हाथ मुँह धोया, कुछ खा पीकर फिर चलदिये। मलका कभी कभी इस प्रकारसे बातें करती जातीथी। " देखो, हमने तुम्हारेलिये लाज, माता-पिता, देश, सम्पत्ति सबको छोड़दिया ऐसा न हो कि तुमभी उस अत्याचारी, कपटीकी भांति मेरे साथ बर्त्ताव करो।" मैंभी उसका जी बहलाने और मार्ग काटने के लिये ऐतिहासिक कथा कहताहुआ चलाजाताथा और उसके कथनपर यह उत्तरदेताथा कि हे प्यारी! पांचों उँगलियाँ एकसी नहीं होतीं उस दुष्टके मातापितामें अन्तर होगा जो ऐसी करतूत आपके साथकी, मैंनेतो तनमनधन तुमको अर्पण करदियाहै आपने सबभांतिसे मुझे अपनायलिया। मैं बिना मोलही आपका दास बनरहाहूं "यदि मेरी खालकी जूतियेंभी बनवाकर पहरो तोमैं चूं तक न करूं।" इस प्रकार से परस्पर बात चीत होती थी और रातदिन चलने स काम था। यदि कहीं थक कर उतरपडते तो जंगलमें पशु पक्षियोंका आखेट करके भून भान कर खालेते थे। घोडोंको छोड़ देते थे वह जंगलमें घास पात को चर चराके अपना पेट भरलेते थे। एक दिन ऐसे मयदानमें जा निकले जहाँ कोसों तक बस्ती का नाम न था और मनुष्य का आकार दिखाई नहीं देता था। इसपरभी राज कुमारीके संगरहने से दिन होली

और रात दिवालीसी जानपड़ती थी। जाते २ एक नदी जिसके देखनेसे जीकाँपै मार्गमें मिली। किनारे खड़ा होकर देखातो सब ओर पानीही पानी पाया। थलका कहीं नामभी न था। इसी सोचमें हम दोनों खडे रहे कि हे भगवान! किस प्रकार इस नदीके पार जांय फिर यह सूझी कि राजकुमारीको यहीं बिठलाकर मैं नाव की खोजमें जाऊं। जब तक नाव हाथ आवै तब तक यह सुकुमारीभी बिश्राम पावै। यह सोच कर मैंने कहा कि "हे राजकुमारी! यदि आज्ञाहो तो इस नदी का घाट बाट देखूं" कहने लगी कि मैं बहुत थकगईहूं और भूँखभी बहुत लगी है, जरा सुस्तालूं जबतक तुम पार जानेका उपाय करो। उस स्थान पर पीपलका एक बड़ा वृक्ष झांझरेदार खड़ा था यदि सहस्र घुड़सवारभी बर्षाके समय उसके नीचे आजाँय तो विश्राम पावें। मैं वहाँ उस प्राणप्यारी को बिठला कर चला। चारों ओर देखता था कि कहींभी पृथ्वीपर या नदीमें मनुष्य का चिन्ह पाऊं। बहुतेरा शिर मारा पर कहींभी न पाया पश्चात् निराश होकर पीछे लौटा तो उस सुन्दरी को पेड़के तले नहीं पाया उस समय की दशा मैं क्या कहूं, बुद्धि जाती रही। बावला सा बनगया। कभी वृक्षपर चढकर डाल २ फिरता; कभी हाय मार कर अपनी दुर्दशा पर रोता। कभी पश्चिमसे पूर्व को दौड़ जाता, कभी उत्तरसे दक्खिनको फिर आता। इस प्रकारसे बहुतेरी धूल छानी परन्तु उस उर्वसी की खोज न पाई। जब मेरा कुछ वश न चला तो रोता और धूर उड़ाताहुआ सब जगह ढूँढने लगा। मनमें सोचा कि कदाचित कोई जिन्द या देव उस परीको उठा कर लेगया और मुझे यह दाग देगया अथवा उसके देशसे कोई पीछे

लगा चला आया और उसको अकेला पाय समझाय बुझाय दमिश्ककी ओर लेगया फिर ऐसे विचारोंमें घबराकर कपडे फेंक फांक दिये। नंगा धडंगा फकीर बनकर श्याम और दमिश्क देशको भली भांतिसे खोज किया दिनभर इधर उधर खोजता और रातको कहीं पड रहता। सारा जगत् छान डाला परन्तु अपनी प्यारीका चिन्हतक कहीं न पाया न उसके गुप्त हो जानेका कारण ज्ञात हुआ। तब यह विचार किया कि जब प्यारीकाही पता न लगा तब जीनाही व्यर्थ है। किसी जंगलमें एक पहाड दिखाई दिया मैं उसपर चढगया और इच्छाकी कि यहांसे गिर जाऊं फिर क्षणभरके बीचमें शिर मुँहसे टकराते २ फूट जायगा तो ऐसी विपत्तिसे उद्धार हो जायगा। यह विचार कर मैं कूदनेकोही था वरन पांवभी उठ चुकेथे कि अचानक किसीने मेरा हाथ पकड लिया। इसही अवसरमें चेत हुआ तो देखता क्या हूं कि एक सवार हरेरंगके वस्त्र पहरे मुंहपर कपडा डाले मुझको आज्ञा देताहै कि तू क्यों मरना चाहताहै,ईश्वरकी महिमासे निराश होना पापका भागी होना है कहाभी है कि "जबतकस्वाँसा, तबतक आसा" कुछ दिनके मध्य रूमदेशमें तीन भिखारी औरभी तेरी समान अवस्थावाले तुझसे आमिलेंगे। वहांके आजादबख्त नामक बादशाह परभी एक बडी कठिनाई पडेगी जब वह ी तुम चारों भिखारियोंके साथ मिलेगा तो प्रत्येककी मनोकामना भली भांतिसे पूर्ण होगी। मैंने उनके चरणको चूम लिया और निवेदन किया कि हे देवदूत! तुम्हारे इतनेही आदेशसे मेरे मनको धैर्य हुआ। परन्तु तुमको परमेश्वरकी सौगन्द है बतलाइये कि आप कौन हैं तब उन्होंने कहा कि ईश्वरका उपासक हूं और मेरा यह काम है कि जिसके ऊपर जो क-

ठिनाई पडे उसको मैं सरल करूं। इतना कहकर दृष्टिसे लोप हो गये। इस फकीरने बडी कठिनाईसे नारायणजीकी कृपाके द्वारा धैर्यवान होकर कुस्तुन्तुनिया देशमें जानेकी इच्छाकी मार्गमें उन सब बिपत्तियोंको भोगता हुआ जो भाग्यमें लिखे थे, राज कुमारीसे मिलनेकी आशा किये ईश्वरकी कृपासे यहांतक आ पहुँचा और अपने सौभाग्यसे तुह्मारी सेवामें दत्तचित्त हुआ। मेरा आप लोगोंसे मेल तो हुआ और वार्त्तालापभी हुआ अब उचित है कि बादशाहआजादवख्तसेभी परिचित हो। पश्चात् इसके सबहीकी मनोकामना पूरी होगी। तुमभी ईश्वरसे प्रार्थना करो तो शीघ्रही कृतकार्य होंगे। जो कुछ मेरा वृत्तान्त था वह सब कह सुनाया। अब देखिये कि कब वह परिश्रम और शोक मेरा राजकुमारीके मिलनेसे हर्ष और प्रसन्नतामें परिवर्त्तित हो" आजादवख्त एक कोनेमें छिपा हुआ मौनसाधे ध्यान लगाये पहले फकीरका वृत्तान्त सुनकर परम प्रसन्न हुआ। इससे-आगे दूसरे भिखारीके भ्रमणका वृत्तान्त लिखा जाता है।

पहला भाग संपूर्णहुआ।

॥ श्री ॥

अथ दूसरा भाग ।

दूसरे फकीर (योगी) की यात्राका वृत्तान्त ।

दूसरा योगी अपना वृत्तान्त सुनानेके लिये पलौथी मारकर बैठा और इस प्रकारसे कहने लगा ।

शेर

हे मित्रों इस भिखारीका वृत्तान्त तुम सुनो ।
आरंभसे मैं कहताहूं सब अंत तक सुनो ॥
जिसका उपाय कर नही सक्ता कोई मनुष्य ।
हैगा हमारा रोग कठिन मित्रगण सुनों ॥

हे प्यारों ! यह तुच्छ राजकुमार पारसदेशका निवासी है । वहां सब प्रकारके गुणीमनुष्य उत्पन्न होते हैं । इस राज्यकी बरावर सारी पृथ्वीमें कोई राज नहीं कि वहांका ताराभी सूर्यकी समानता करता है । जल वायु वहांका अच्छाहै और वहांके मनुष्य चतुर व सभ्य होते हैं । मेरे पिताने जो उस देशके वादशाहथे लडकपनमे नियम और राजनीति वनाने के लिये बडे २ पंडित और बुद्धिमान लोग चुनकर अपने दरवारमें रक्खेथे । जब मैं गुणीमनुष्योंके द्वारा सब प्रकारकी शिक्षा पाकर ईश्वरकी [कृ]पासे चौदह वर्ष की आयुमें पहुँचा तब समस्त सभासद् और [मा]ता पिता मुझको देखकर प्रसन्न होतेथे ? उस समय मुझको यही चाव था कि योग्य मनुष्योंके सत्संगमें कथा प्रत्येक देशकी और ऐतिहासिक वृत्तान्त वादशाह तथा महात्मापुरुषोंका सुना करूं । एक दिन एक चतुर संगीने जो महाबुद्धिमानथा कहा कि यद्यपि मनुष्यके जीवनका कुछभी भरोसा

नहीं तथापि उसमें बहुतसे गुण ऐसे होतेहैं कि उनके कारणसे मनुष्यका नाम प्रलय कालतक मनुष्योंकी रसनापर चलाजायगा। मैंने कहा कि यदि कुछ ऐसा दृष्टान्त सुनाओतो मैंभी सुनूं। और उसके अनुसार कार्य करूं। तब वह व्यक्ति इसप्रकारसे हातिमकी कथाका आरंभ करनेलगा कि हातिमके समयमें अरबका एक बादशाह नौफिल नामकथा। हातिमकी उदारताको सुनकर वह उसका शत्रु होगया और बहुतसी सेना एकत्र करके उससे लडनेको आया। हातिम तो परोपकारी और उदार पुरुष था यह समझाकि यदि मैं भी संग्रामकी तइयारी करूं तो सृष्टिके प्राणी मारेजाँय और बड़ा रुधिर बहेगा। इसका पाप मेरे नाम लिखाजायगा। यह सोचकर एक पर्वतकी कन्दरामें जाछिपा। जब हातिमके भागनेका समाचार नौफिलको ज्ञातहुआ तो उसका सब असबाब और धन व गृह राज्यमें लेलिया और ढंढोरा फेरदिया कि जो कोई ढूँढढाँढकर उसे पकड़लावै, उसे पांचसौ अशर्फी सरकारसे इनाममें दीजायगी। यह सुनकर सबको लालसा हुआ और हातिमकी खोज करनेलगे। एक दिन एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया साथमें दो तीन छोटे २ बच्चे लिये लकड़ी तोड़नेके लिये उस कंदराके पास जहाँ हातिम छिपा हुआथा पहुँचे और लकड़ियें संग्रह करनेलगे। बुढ़िया बोली कि जो हमारे दिन कुछभले आते तो हातिमको कहीं देखपाते और उसको पकड़कर नौफिलके पास लेजाते तो वह पांचसौ अशर्फी देता हम आनंदसे खाते और इस दुःखद्वंदसे छूटजाते। बूढ़ेने कहा " क्या बड़बड़करतीहै? हमारे भाग्यमें यही लिखाहै कि दिनभर लकड़ियें तोड़ें और हाटमें बेचें तब रोटी मिले या एकदिन जंगलसे घरतक लेजावें। तू अपना

कामकर हातिम काहेको हमारे हाथ आवेगा जो बादशाह हमें इतने रुपये देगा" बुढ़ियाने ठंढी सांसली और चुपकी होरही इन दोनोंकी बातें हातिमने सुनी उसने अपना छिपे रहना पौरुष और प्रेमसे विरुद्ध जाना, और समझलिया कि इन दोनोंकी मनोकामना पूर्ण करना चाहिये। सत्यहै यदि मनुष्यमें दया नहीं तो वह मनुष्य नहीं और जिसके जीमें सहानुभूति नहीं वह वधिककी बराबर है। कबिने कहा है कि-

दोहा-दया धर्मकी मूलहै, नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँड़िये, जबलग घटमें प्रान॥

अतएव हातिमके उदार मनने इस बातको स्वीकार न किया कि अपने कानोंसे किसीका दुःख दर्द सुनकर चुपका होरहे तत्काल बाहर निकल आया और उस बूढ़ेसे कहा कि "हे मित्र! मैं वही हातिमहूं मुझे नौफिलके पास लेचल। मुझे पाकर वह तुझको पांचसौ अशर्फियें पुरस्कारमें देगा। वृद्धने कहा सत्य है, निस्सन्देह इस बातमें मेरी भलाई है, परन्तु न जाने वह तुझसे कैसा बर्ताव करे यदि मारडाले तो वह मैं क्याकरूं? यह मुझसे कदापि नहीं हो सकेगा कि तुझसे मनुष्यको अपनी भलाई के लिये शत्रुके हाथ सौंपूं यह माल कितने दिनतक खाऊंगा और कबतक जीऊंगा! अंतमें एकदिन मरूंगा!! उस समय ईश्वरके आगे जाकर क्या उत्तरदूंगा। हातिमने अत्यंत विनयकी कि तू मुझे लेचल मैं अपनी प्रसन्नतासे कहताहूं और इसही अभिलाषमें रहताहूं कि मेरा तन मन धन किसीके काम आवे तो भलाहो परन्तु बूढ़ेने किसी भाँतिसे इस बातको न माना तब विवश होकर हातिमने कहाकि यदि तू इस प्रकारसे मुझे नहीं लेजाता तो मैं आपसे आप बादशाहके पास

जाकर कहताहूं कि इस बूढ़ेने जंगलके बीच एक कन्दरामें मुझ को छिपारक्खाथा। वह बूढ़ा हँसा और बोलाकि भलाई के बदले बुराई !! इस बात चीतके होते २ औरभी आदमी आन पहुँचे भीड़ लगगई उन्होंने जानाकि हातिम यहीहै तुर्त पकड़लिया और उसको लेचले वह बूढ़ाभी पश्चाताप करताहुआ पीछे २ साथहोलिया। नौफिलके आगे जब हातिम पहुँचा तो उसने पूछाकि इसको पकड़कर कौनलाया ? तब एक दुष्ट कठोर हृदय बोलाकि इसकार्यको हमारे अतिरिक्त और कौन करसकताहै ? यह बिजय हमारे नामहै, यह ध्वजा हमारेही नामकी फहराती है मैं कईदिनतक दौड़ धूपकरके एक जंगलसे इसको पकड़ लायाहूं, मेरे परिश्रमका ध्यान कीजिये। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य स्वर्णमुद्राके लोभसे कहताथा कि इसको मैं पकड़कर लाया हूं और वह बूढ़ा चुपचाप एक कोनेमें खड़ाहुआ सबकी गप्प सुन रहाथा। जब सबलोग अपनी २ बीरताका वृतान्त कह चुके तब हातिमने बादशाहसे कहा कि सत्य बात तो यहहै कि वह बूढा जो सबसे अलग खड़ाहै मुझको लायाहै। परन्तु आकार परखतेहोतो स्वयं जानलो और मेरे पकड़नेके लिये जो पुरस्कार देनेका विज्ञापन दियाहै। वहदो मनुष्यको उचितहै कि जो कहै सो करै। नहींतो जीभतो पशुपक्षियों कोभी भगवान ने दीहै फिर मनुष्य और पशुमें भेदही क्याहै ? नौफिलने उस वृद्ध लकड़हारे को निकट बुलाकर पूछा कि सत्यकह "इस हातिमको कौन पकड़कर लायाहै ?" उस बिचारेने समस्त वृतान्त सत्य २ कहसुनाया और कहा कि " यह स्वयं मेरी भलाईके लिये चला आयाहै। हातिमका ऐसा साहस सुनकर नौफिल अत्यंत विस्मितहुआ और कहा कि वाहरी उदारता ! परोपकारके लिये

अपने प्राणोंका कुछभी भय न किया। जो लोग हातिमके पकड़ लानेकी झूंठी डींगें मारतेथे, उनको हुक्मदिया कि पांचसौ अशर्फियोंके बदले एक २ के पांच पांचसौ जूते लगाओ। आज्ञा होतेही वे भावकी सैकड़ों पड़नेलगीं, बिचारों की खोपड़ियें गंजी होगईं; सत्यहै;—

दोहा—सांच बरोबर तप नहीं, झूँठ बरोबर पाप।
जाके हिरदै सांच है, वाके हिरदे आप॥

परमेश्वर सबको इस पापसे बचाये रक्खे। बहुतसे आदमी मिथ्या बोलते जाते हैं। परन्तु परिणाममें इसका दंड पातेहैं। अतएव नौफिलने सबको योग्य पुरस्कार देकर अपने मनमें बिचारकिया कि हातिमसे व्यक्तिको—जिस्से संसार उपकृत होताहै, दीन दरिद्र लाभ पातेहैं, ईश्वरकी भक्ति करताहै—शत्रुता करना या दंड देना अथवा उसको सताना—वीरता और धीरतासे विरुद्ध है यह बिचार तत्काल हातिमका हाथ मित्रता और प्रेमसे पकड़कर कहने लगा "क्यों न हो! तुमऐसेही हो" फिर आदर सत्कार करके निकट बिठलाया और उसकाद्रव्य, देश, माल असबाब जो कुछ छीनलिया था, सब लौटा दिया। नये सिरेसे उसको अपना सरदार बनाया और उस वृद्धेको पांचसौ अशर्फियें अपने धनागरसे दिलवादी। वह आशीर्वाद देता हुआ चलागया" हातिमका यह वृतान्त सुनकर मुझको लाज आई कि हातिम केवल एक धनवान पुरुष था जिसने उदारतासे यहांतक नामपाया कि आजतक बिख्यात है और मैं ईश्वरकी कृपासे सम्पूर्ण ईरानदेशका बादशाह हूँ यदि इससे वंचितरहूं तो बड़े शोक की बातहै। संसारमें ऐसा कोई कार्य नहीं जो परिश्रम और यत्नसे न हो सके। कारण कि मनुष्य इस लोकमें जो कुछ देताहै, पर-

लोकमें वही पाताहै। एक दाना बोया जाताहै उससे कितना अन्न उत्पन्न होताहै। यह निश्चय कर कार्याध्यक्ष शिल्पीको बुलाया और आज्ञादी कि एक बडा भारी मकान जिसमें बड़े२ चालीस द्वार हों तइयार करो। उसने आज्ञाके अनुसार वैसाही स्थान थोड़े दिनोंमें बनवाकर तइयार करा दिया कि जैसा मैं चाहता था। उस स्थानमें प्रतिदिन प्रभात कालसे लेकर संध्यातक मैं दीन दरिद्रियोंको रुपये और मुहरें दिया करता था और जो कोई जिस वस्तुको मांगता था मैं उसे मालामाल कर देताथा सिद्धान्त यहहै कि चालीस द्वारोंसे प्रार्थीलोग आते और जो चाहते थे सो लेजाते थे एक दिनका बर्णनहै कि एक भिखारी सामनेके द्वारसे आया और सवाल किया मैंने एक अशर्फी उसेदी; फिर वही द्वारसे होकर आया और मैंने जानकर भी उसे दो अशर्फियें दीं इसी भांतिसे प्रत्येक द्वारपर आता और मैं प्रत्येक द्वारसे एक २ अधिक अशरफी उसको दियेजाता। फिर चालीसवें द्वारसे आनकर उसने चालीस अशरफी मांगी मैंने वहभी दिलवादी इतना लेकरभी फिर वह दरवेश (भिखारी) पहले दरवाजेमें घुस आया, तब मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने कहा, अरेलोभी ! तू कैसा फकीरहै ? कि अभ्यागत और फकीर नामके अर्थकोभी नहीं जानता; उसने कहा "दातासाहब! तुहीं फकीरशब्दका अर्थ मुझे समझाओ। मैंने कहा जितना मिलजाय उतनेहीपर संतोष करलेनेवाला फकीर कहलाताहै। जितना तुझे मिलगया पहले इसको खर्च करदे फिर मेरे पास आना। और जो चाहिये वह लेना। यह दान आवश्यकता दूर करनेकोहै, संग्रह करनेकोनहीं। अरे लोभी! चालीस दरवाजोंसे तूने ८२० अशर्फियें लीं, इसपरभी तुझे लिप्साही रही

और फिर पहले द्वारपर आया। इतना धन संग्रह करके क्या करेगा? भिखारीको उचितहै कि एक दिनकी चिन्ताकरे, दूसरे दिनकी चिन्ता वह ईश्वर स्वयं कर लेताहै अब धैर्य और लाजकर। यह कैसी फकीरीहै? जो तेरे गुरूने तुझे बताई है।" इस बातको सुनतेही वह फकीर अप्रसन्न होकर महा क्रोधित हुआ और जितना धनमुझसे लिया था सब वहीं डालदिया और कहने लगा कि बाबा! इतने क्रोधित क्यों होतेहो? अपना धन अपने पासरक्खो फिर दातापनकी डींग मत मारना। दाता होना बडा कठिन कार्य है। उदारताका भार तुम नहीं उठा सकते, उस पदपर न जाने कब पहुँचोगे अभी दिल्ली दूरहै। पहले दाताके लक्षणोंको सीखनेका अभ्यास करो तब दाता बननेका नाम लेना तबतो मैं डरा और कहा कि आपही सब लक्षण मुझको समझादें। तब उसने कहाकि "जो दान देते २ कभी संतोष न माने, वही दाताहै। दानीकी श्रेणी बहुत बडी है। यदि याचक कपटीहो तोभी ईश्वरका मित्रहै। इस दीनने बहुतसे देश देखेभालेहैं परन्तु सिवाय बसरेकी राजकुमारीके कोई भी दाता देखनेमें न आया दाताका पद वास्तवमें भगवानने उसकोही अर्पणकियाहै। दूसरे लोग नामतो चाहतेहैं पर वैसा काम नहीं करते यह सुनकर मैंने बहुत विनयकी और शपथकी कि मेरा अपराध क्षमाकरो और जो चाहिये सो लो परन्तु उसने मेरादिया किसी प्रकार न लिया और यह कहताहुआ ... कि अब यदि सारा राज्यभी देदो तो उसपरभी न थूकूं। उसके चलेजानेपर बसरेकी राजकुमारीका ध्यान आया और इच्छा हुई कि किसी प्रकार बसरे चलकर उसको देखना चाहिये। इसही समयमें बादशाह परलोकवासी हुआ और मैं सिंहासन पर बैठा

राज्याधिकार मिलगया। परन्तु वह ध्यान मनसे न भुलाया गया। मंत्री और धनवानोंसे परामर्शकी कि मैं बसरेकी यात्रा करने का अभिलाषीहूं। तुम अपने २ काममें तत्पर रहो यदि जीवन है तो यात्रा की आयु कम होती है, शीघ्र लौट आऊंगा। पर किसीने मेरे जानेकी सम्मति न दी। परन्तु मन मलीन रहने लगा। एकदिन सबसे बिना कहे सुने चुपचाप मंत्रीको बुलाकर समस्त अधिकार समर्पण किया और स्वयं गेरुआ बस्त्र पहर योगीका बेष बनाय अकेला बसरेको चला। थोडे दिनोंमें उसकी सीमापर जा पहुंचा। वहाँ यह तमाशा देखा कि जहाँ रातको जाकर ठहरता, नौकर चाकर उसी देशके अगौनी कर एक योग्य स्थानमें उतारते और जितना सामान निमंत्रणका होता सो प्रस्तुत करते और सारीरात सेवामें हाथ जोडे हुए खडे रहते। दूसरे दिन दूसरे पड़ाव परभी यही बातहुई इस विश्रामसे महीनोंका मार्ग व्यतीत किया और फिर बसरेमें पहुँचा।

बसरेकी राजकुमारीका चरित्र।

जैसेही मैं उस नगरमें पहुँचा वैसेही एक सुन्दर पुरुषने जो उत्तमोत्तम वस्त्र पहने हुए था और जिसके लक्षणोंसे उसका भलामानस होना प्रगट था मेरे पास आया और मधुरवाणीसे कहने लगा कि मैं फकीरोंका सेवक हूं। सदैव इसी खोजमें रहताहूं कि जो कोई फकीर यात्री वा संसारी इस नगरमें आवै मेरे घरको चरणरजसे पवित्र करे। एक मकानके अतिरिक्त यहां दूसरा स्थान परदेशियोंके ठहरनेको नहीं है आप इस मेरे स्थानमें शुभागमन कीजिये। मैंने पूछा कि आपका नाम क्या है? कहने लगा कि मुझे वेदारबख्त कहते हैं" उसका सभ्यवर्ताव और आदर सत्कार देखकर यह दीन उसके साथ

चला और उस स्थानमें गया तो देखा कि एक बड़ाभारी महल तइयार है उसने एक दालानमें लेजाकर बिठाया और गरम पानी मँगवा कर हाथ मुँह धुलवाया। और अनेक प्रकार के व्यंजन यथा, कचौडी, पूरी, लुचई, हलुआ, तरकारी पापड, रबडी इत्यादि सबही पदार्थ मेरे सामने रक्खे। इन समस्त पदार्थों को देखकर मेरा जी भरगया। एक २ ग्रास प्रत्येक पदार्थसे लेने पर पेट भरगया। हाथ उठा लिया। वह कहने लगा कि आपने क्या खाना खाया? यह तो सबही धरा विराजता है लाज छोडकर खाइये।" मैंने कहा कि भोजनमें काहेकी लाज है। ईश्वर आपकी इस सम्पत्तिको बनाये रक्खे। जो मेरे पेटमें समाया सो मैंने खाया आपके बनाये भोजनकी में क्या प्रशंसा करूं स्वादके मारे अबतक जीभ चाटता हूं। फिर भोजनके पदार्थ उठाये गये और चांदीके तसलेमें गरम पानीसे मेरे हाय धुलाए। फिर जडाऊ पानदानसे पानकी गिलोरियां बनकर आईं जिनपर सोनेके वरख लगे हुए थे। जब पानी पीनेको माँगता तो सेवक बरफका ठंढा किया हुआ जल ले आताथा। संध्याकाल होनेपर झाड फानूसोंका प्रकाश किया गया वह मित्र बैठा हुआ बातें करता रहा जब रात होगई तब कहने लगा कि आप उस छपरखटमें जिसके ऊपर रेशमीन परदे पडे हैं विश्राम कीजिये।" मैंने कहा कि "हे प्रियवर! हम भिखारीोंको एक बोरिया या मृगछालाही बिछानेके लिये बहुत है। ईश्वरने यह उपभोग्य वस्तु तुह्मारे वास्तेही बनाई है। वह कहने लगा कि यह समस्त सामग्री योगी और महात्माओंके लिये है, मैं इसका स्वामी नहीं हूं।" उसके इस प्रकार अनुरोध करने पर मैं उन बिछोनोंपर जो फूलोंकी सेजसे भी कोमल थे।

जाकर लेटा। दोनों पहियोंकी ओर गिलदान और फूलोंके गुच्छे बिराजमान थे। और सुगन्धित दीपकोंका प्रकाश हो रहा था। जिधरको करवट लेता मस्तक शीतल हो जाता। इसही अवस्थामें सो रहा। प्रभात होनेपर बियारीके लिये बादाम, पिश्ते, अंगूर, अंजीर, नाशपाती, किसमिस, छुहारे, अनार और मेवाका मधुर जल ले आया। इस प्रकारसे तीन दिन बिताय चौथे दिन मैंने बिदा मांगी। तब वह कर जोडकर कहने लगा कि "अपराधीसे श्रीमान्की सेवामें कुछ अपराध बना जो आप अप्रसन्न हुए।" मैंने चकित होकर कहा कि यह क्या बात है। परन्तु महमानीकी रीति तीन दिनतक है सो मैं रहा, अधिक रहना भला नहीं। दूसरी बात यह है कि मैं भ्रमणके लिये निकला हूं। यदि एकही जगह रह जाऊं तो उचित नहीं इस कारण आज्ञा चाहताहूं। तुह्मारा बर्त्ताव ऐसा नहीं कि अलग होनेको जी चाहै।" तब उसने कहा कि "जो इच्छा, क्षणभर बिलम्ब कीजिये कि मैं राज कुमारीको जाकर सूचित करूं। हे महाशय! ओढने बिछानेका असबाब और चांदी सोनेंके सादे और जडाऊ बर्तन जो कुछ इस अतिथिशाला में हैं साथ लेजाइये? क्यों कि यह सब आपका मालहै। इस मालको साथ लेजानेकेलिये जो आज्ञा हो वह उपाय किया जाय।" मैंने कहा "राम राम कहो, हम फकीर न हुए, संसारी हुए? यदि यही लोभ जीमें होता तो दुनियादारी क्या बुरीथी?" मित्र बोला कि "यदि इस वृत्तान्तको राजकुमारी सुने तो न जाने मेरे ऊपर कैसा क्रोध हो; यदि आपको ऐसीही उपेक्षा है तो इस सामग्रीको एक कोठरीमें धरोहरकी भांति बन्दकर द्वारके तालेपर छापलगादीजिये, फिर जो इच्छा हो सो करना

न मैं स्वीकार करता था, न वह मानता था। विवशहो यही परामर्श ठहरी कि सब सामग्रीको बंदकरके ताला लगादिया और विदा चाही। इतनेमें एक कंचुकी, भला आदमी, शिरपर सिरपेच बांधे हाथमें सोनेका आसालिये सेवकोंके साथ बड़े ठाटसे आया और बड़ी कृपा व कोमलतासे बार्तालाप करने लगा कि जिसका बर्णन मैं नहीं करसकता। फिर बोला कि "साहब यदि दयाकरके इस दीनकी पर्णकुटीको अपने चरणोंके चिन्हसे शोभायमान करो तो दयालुता और अनुगत वत्सलतासे विरुद्ध न होगा। कदाचित राजकुमारी सुने कि कोई यात्री यहां आया था उसकी आवभगत किसीने न की और वह वैसेही चलागया। तो इसके लिये मुझपर न जाने क्या आपत्ति आवेगी ?" जब मैंने वहां ठहरना अंगीकार न किया तो विवश करके एक दूसरे स्थानमें जो पहलेसे सब बातोंमें बढकरथा लेगया उसनेभी पहले मित्रकी समानही तीन दिन तक भांति २ के व्यंजन भोजन कराये और विश्राम दिया फिर कहनेलगा कि यह सब सामान तुम्हाराही है अब इसका जी चाहे सो करो।" मैं इन बातोंको सुनकर चकित हुआ और इच्छाकी कि यहाँसे किसी न किसी भांति निकलभागूं। मेरी इच्छाको समझकर वह कहनेलगा "हे महात्मा ! जो आपकी इच्छाहो मुझसे कहिये तो मैं सरकारसे जाकर प्रार्थना करूंगा।" मैंने उत्तर दिया कि "भिखारीके बेषमें संसारी पदार्थको क्या मागूं। तुम बिना मांगेही देतेहो और मैं अस्वीकार करताहूं। तब वह कहनेलगा कि तृष्णातो बराबरही इस संसारमें व्याप्त होरहीहै;—

कबित्त–नख बिनकटादेखे शीशभारी जटादेखे, योगी कनफटा देखे छारलाए तनमें। मौनी अनबोलदेखे सेवड़ा सिर छोलदेखे, करत तपस्या देखे बनखंडी बनमें ॥ बीर देखे शूर देखे सब गुनी और कूरदेखे, मायाके पूरदेखे भूलरहे धनमें। आदि अंत सुखीदेखे जन्महीके दुखीदेखे, पर वे न देखे जिनके लोभनाहिं मनमें ॥

मैंने यह सुनकर उत्तरदिया कि यह सत्यहै पर मैं कुछ नहीं चाहता यदि आज्ञादो तो एक लिखत छाप मुहर करके अपने आशयकाहूं उसको आप राजकुमारीके निकट पहुँचादीजिये तो ऐसी कृपाहोगी कि मानो समस्तसंसारकी संपत्ति आपने मुझकोदी " उसने कहा " आपकी आज्ञा शिरमाथेहै। यह सुन कर मैंने इस आशयका एक प्रार्थनापत्र लिखा कि " यह दीन कई दिनसे नगरमें आया हुआहै और सरकारसे सब प्रकार की आवभगत कीजातीहै जैसा बर्णन श्रीमतीका श्रवण गोचर हुआथा उससे चौगुना प्रभावदेखा। अब सरकारके कर्मचारी यह कहतेहैं कि जो इच्छा हो सो प्रगट करो। इस कारण अपनी अभिलाषाको प्रगट करताहूं। मैं संसारी वस्तुका प्रार्थीनहींहूं अपने देशका मैंभी बादशाहहूं। यहांतक आना और यह परिश्रम उठाना केवल श्रीमतीके दर्शनार्थ हुआहै आशाहै कि सरकार-की कृपासे इस दीनकी मनोकामना पूर्णहोगी यदि मुझ तुच्छ की यह प्रार्थना स्वीकार न हुई तो इसही भांतिसे भटकताहुआ फिरेगा और प्राण वलिहारी होंगे। मजनूं और फरहादकी भांति श्रीमतीके बिरहमें जंगल२की धूरि उड़ाऊंगा! " यह पत्र लिखकर मैंने उस राजकर्मचारीको दिया उसने राजकुमारीके पास पहुँचाया और एकक्षणभर पीछे लौटआया और कहाकि "सरकारने बुलाया है "यहकहकर अपने साथ महलके द्वारपर लेगया:वहांजाकर देखा

तो एक बूढ़ीसी स्त्री सुनहरी कुरसीपर अच्छे२वस्त्राभूषण पहरेहुए बैठीहै और बहुतसे सेवक हाथजोरे हुए उसके सामने खड़ेहैं। मैं उसके सामने खड़ाहोगया और उस दासीने सभ्यतासे मुझको प्रणाम करके कहाकि "बैठिये! अच्छाहुआ, जो आप आये! तुम्हींने राजकुमारीके अनुरागका पत्रलिखाथा?" मैं लाजसे चुपका होरहा और शिरनीचा करके बैठा। कुछ देरकेबाद बोली कि हेयुवा! राजकुमारीने यथायोग्य कहकर आज्ञादीहै कि तुम को पति बनानेमें मैं कुछ दोषनहीं समझती, तुमने मेरी इच्छा की परन्तु अपनी बादशाहतका बर्णन करना और इस फकीरीमें अपने लिये बादशाह समझना और उसका गर्भ करना अत्यन्त अनुचितहै।इसवास्तेकि सबमनुष्य परस्पर एकहैं। परन्तु बुद्धिमानी और दूरदर्शिताही मनुष्यमें अधिकतरहै। मैं बहुत दिनसे बिवाह करनेकी अभिलाषा करतीहूं और जैसे तुम चिन्ता नहीं करते वैसेही मुझकोभी किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं। परन्तु नियम यह है कि पहले उसकी प्रतिज्ञाको पूर्ण करो।मैंने कहाकि मैं सब भांतिसे प्रस्तुत हूं, जान प्राण देनेसेभी नहीं हिचकता हूं, वह बात क्याहै बताओ तो सही, मैं भी उसको सुनूं। "तब उसने कहा कि आजके दिन धैर्य करो, कल तुमसे कहदूंगी"। मैंने प्रसन्नतासे अंगीकार किया और बिदा होकर बाहर गया। दिन व्यतीत होकर जब संध्याहुई तो मुझे एक कंचुकी महलमें बुलाकर लेगया मैंने वहां पहुँचकर देखाकि बड़े२ बुद्धिमान एकत्रहैं, मैं भी उनमें जाकर बैठगया। इतनेमें भोजनके पदार्थ आये और सबके आगे धरेगये वह सब भोजन करनेलगे और मुझको भी साझी किया। भोजन कार्यसे निश्चिन्त होनेपर एक दाई भीतरसे आई और मुझे पूछा मैं सामने

आया। तब वह दाई कहनेलगी कि आप हमारे इस सेवकसे पहले एक वृतान्त सुनिये। सेवक उसकी आज्ञा पाकर इस प्रकार कहने लगा कि "हे मित्र! हमारी सरकारके यहां सहस्रों दास हैं जो व्यौपारके काममें बड़े चतुरहैं, उन्हींमेंसे एक मैं भी हूं। सहस्रों रुपये लेकर वह व्यौपारको जाताहै, जब लौटकर आताहै तब उससे यात्राका संपूर्ण वृतान्त पूछतेहैं और सुनतेहैं एकवार मैं भी व्यौपार करनेको चला और नीमरोज नगरमें पहुँचा वहांके निवासियोंको देखा तो सबही काले कपड़े पहरे हुयेथे ज्ञात होता था कि उनपर कोई बड़ी भारी विपत्ति पड़ी है। कारण बहुतोंसे पूछा परन्तु किसीने कुछभी उत्तर न दिया। इसही सोच विचारमें कईदिन व्यतीत होगये। एक दिन प्रभात होतेही समस्त छोटे बड़े, लड़के बूढ़े निर्धन, धनी, नगरके बाहर चले और एक सपाट जमीनमें एकत्रहुए उसदेशका बादशाह भी समस्त सभासदोंको साथ लेकर सवार हुआ और वहां गया, सब क़तार बांधकर खड़े होगये। मैं भी उनके बीचमें खडा हुआ इस कौतुकको देख रहाथा, ऐसा ज्ञात होता था कि वह सब खडे हुए किसीकी बाट देखरहेहैं। एक घडी हुई होगी कि पंद्रह सोलह बर्षका एक सुन्दर मनुष्य कुलाहल मचाता बैलपर चढ़ा दूरसे आता हुआ दिखाई दिया, उसके मुंहसे कफ निकलरहा था। वह एक हाथमें कुछ लिये हुए बैलसे उतरा और इकठे हुए मनुष्योंके सामने आया। तदुपरान्त एक हाथमें तलवार थामी और दूसरे हाथसे बैलकी नकडोरी पकडी। एक अत्यंत सुन्दर दासभी उसके साथ था। युवाने अपनी वह वस्तु उसके हाथमें दी। वह एक सिरेसे चला और वह वस्तु सबको दिखाता गया। परन्तु यह अवस्था थी कि जो कोई उस

वस्तुको देखता था। विवश हो हाय करके पुक्का छोड रोनें लगता था। इस प्रकारसे वह सबको रुलाता रुलाता उस वस्तुको लिये हुए अपने स्वामीके पास गया, उसके पहुँचतेही वह युवा उठा। और खड्गसे दासकाशिर काट बैलपर सवार हो जिधरसे आया था उस ओरको चलागया। सबलोग खडे हुए देखते रहे। मैं प्रत्येक मनुष्यसे इसका वृत्तान्त पूछता था वरन रुपये देनेका लोभ भी दिखाता था और कहता था कि भाई बताओतो सही यह क्या बात है? और यह युवा कौन है? इसने यह कैसा कार्य किया? कहांसे आया? कहांगया? तथापि किसीने नहीं बताया और न कुछ मेरे ध्यानमें आया, यह आश्चर्य देखकर जब यहां आया और राजकुमारीको समस्त वृत्तान्त सुनाया तबसे वह भी विस्मित है और इस बातका निश्चय करनेके लिये दुचित्त हो रही है। अतएव उन्होंने यही प्रतिज्ञाकी है कि जो व्यक्ति इस अद्भुत चरित्रका पूरा भेद बतावेगा। उसहीके साथ मेरा विवाह होजायगा तथा वही इस अपार सम्पत्तिकाभी स्वामी होगा। तुमने यह समस्त वृत्तान्त सुना। अपने मनमें विचार करो, यदि तुम उस युवाका समाचार पूरा२ ला सको तो नीमरोज देशको जानेकी तइयारी करो और यदि नहीं जाना चाहते तो अपने घरका मार्ग लो।" मैंने कहा कि यदि भगवानको स्वीकार है तो शीघ्रही उसका सारा भेद जानकर राजकुमारीके पास आपहुँचताहूं और तब मेरी मनोकामना पूर्ण होगी। यदि भाग्य सीधा नहीं है। तो कुछ उपाय नहीं। परन्तु राजकुमारी इस बातकी शपथ करे कि वह अपने वचनसे नहीं फिरे। इस समयमें एक और संदेह मुझको व्याकुल कर रहा है कि जो राजकुमारी कृपान्ट होकर मुझे कु-

लावें, परदेसे बाहर बिठलायें और मेरी प्रार्थना अपने कानोंसे सुने और उसका उत्तर स्वयंदे तो मैं चिन्तासे छूटूँ और सब कुछ कर दिखाऊं" मेरा यह आशय उस दाईने राजकन्यासे कह सुनाया।तब उसने दया करके यह आज्ञा दी कि उसे बुलालो। दाई फिर बाहर आई और मुझे अपने साथ उन महलोंमें लेगई जहाँ राजकुमारी थी। वहाँ जाकर क्या देखताहूं कि दोनों ओर कतार लगाये हुए सहेलियें और दासियें खडी हैं। यह स्त्रियें, रूम, रूस, ईरान, हब्श, कशमीर और पंजाबसे राजकन्याकी सेवामें आई थीं उनको देखकर ऐसा जान पडता था जैसे राजा इन्द्रका अखाडाही पृथ्वीपर उतर आया है। यह शोभा निहारकर दांततले उँगली दबाई और कलेजा धमकने लगा। बलात् अपनेको सावधानकिया, व उनकी शोभा देखताहुआ आगेबढा परन्तु पाँव सौसौमनके होगये। जिसको देखूं फिर यह इच्छा नहो कि आगेको जाऊं एक ओर जालीकापर्दा पडा था, और जडाऊ मोढा बिछाथा और एक चौकी भी चंदनकी पडीथी। दाईने मुझे बैठनेका संकेत किया, तब मैं मोढेपर बैठगया। तदुपरान्त वह दाई कहने लगीकि अब जो कुछ कहना है जीभरके कहलो। प्रथमतो मैंने मलकाकी प्रशंसाकी और फिर इसप्रकार कहनेलगा कि "जबसे मैं इस देशकी सीमापर आया प्रत्येक पडाव में देखा कि अतिथिशालाके बडे २ स्थान बने हुएहैं और समस्त कर्मचारी अपने कार्यको चित्त लगाकर करतेहैं तथा यात्रियोंको सबप्रकारसे प्रसन्नकरना उनका कामहै मुझेभी प्रत्येक स्थानमें तीनदिन वीते चौथेदिन जब विदा होनेलगा तबभी प्रसन्नतासे किसीने न कहाकि जाओ और जितना सामान उस स्थानमेंथा, कालीन· शीतलपाटी,

तोशक तकिया आदि वह सब मुझे सौंपदिया। और कहाकि लो यह तुह्मारामालहै चाहे लेजाओ। नहीं एककोठरीमें बंदकर अपनी छाप लगाओ लौटते हुए लेजाना। जब मुझसे दीनपर आपने यह उपकारकिया तो ऐसे तो सहस्रों दीन आपके राज्यमें आतेहोंगे। अतएव यदि इसही प्रकारसे सबकी पहुनई कीजाती होगी तो अगणित रुपया खर्च होजाताहोगा। इतनी सम्पत्ति कहाँसे आती होगी इस खर्चके सामने तो कुबेरका धनागारभी कुछही दिनमें शून्य होसकताहै। और प्रगटमें यदि राज्यको देखा जाय तो उसकी आय तो भोजनागारके व्यय कोभी पूरी न पडतीहोगी फिर और खर्चकी तो बातही क्याहै? यदि मलकासे इसका वर्णनसुनूं तो सन्देह जाय फिर नीमरोज देशमें पहुँचूं और सब भेदजानकर फिर यहाँ लौट आऊं।" यह सुनकर राजकुमारीने कहाकि हे मित्र! "यदि तुमको इसबातके सुननेकी बडीही अभिलाषाहे तो आज ठहरजाओ। संध्याकाल के समय तुम्हें बुलाकर इस अनंत सम्पत्तिके पानेका ब्योरा कहा जायगा।" मैं यह सुनकर अपने वासस्थानपर आया और आशा करताथा कि कब संध्याहो और मेरीअभिलाषा पूर्णहो। इसही अवसरमें कंचुकी बहुतसे सेवकोंकेसाथ आया। सेवकों केसाथ बहुत सा सामानथा। कंचुकीने कहाकि यह भोजन पदार्थ आपके लिये सरकारने भेजेहैं, इनको भोजनकरो। पदार्थोंकी सुगन्धसे मेरा चित्त प्रसन्न हो गया और वैसेही जी भरगया। कुछ खा पीकर हाथ सिकोड़ लिया। जिस समय दिवाकर रूपी यात्री सारे दिनका थकाहुआ अपने स्थानमें पहुँचगया और निशानाथने तारागणके साथ आकाशरूपी बृहत् मयदानमें अपना दरबार किया उससमय दाई आई और मुझसे कहने

लगी कि " चलो राजकुमारीने स्मरण किया है "। मैं उसके साथ २ राजकुमारीके महलमें पहुँचा। प्रकाश ऐसा हो रहाथा कि उसके आगे कार्तिकी पूर्णिमाकी चांदनीभी लजातीथी और बादशाही बिछावनेपर गद्दी बिछी थी उसपर तकिया लगाहुआथा। उसपर एक मोतियोंकी झालरका चन्दोवा चोवोंपर खड़ा हुआ था। गद्दीके सामने रत्न वृक्ष लगे हुए थे वे ऐसे ज्ञात होते थे कि प्राकृतिक वृक्ष और पौदे क्यारियों में लगे हुए हैं। सबलोग अपने २ पदके अनुसार खड़े और बैठे थे। रंडियाँ तालसुर मिलाये हुए गानेको तइयारथीं। इस सामान और तइयारीको देखकर बुद्धि ठिकाने न रही दाईसे पूछा कि दिनको वह निकाई और रातको यह सुघराई। दिन और रात दोनोंकोही उत्सवमय समझना चाहिये। बड़े २ महाराजाओं कोभी ऐसी सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती। दाईने कहा कि हमारी राजकुमारी का यह ठाट इसी प्रकारसे जारी है। इसमें कदापि विघ्न नहीं, बरन दिन२ वृद्धि ही होती है। तुम यहां बैठो राजकुमारी दूसरे मकानमें शोभायमानहै जाकर आपके आनेकी सूचना देतीहूं। दाई यह कह कर गई और उन्हीं पाँवों लौट कर चली आई और कहा चलिये सरकार-ने याद किया है। उस स्थानमें जातेही मैं भौंचक रह गया। न जानें दरवाजा किधर और भीत किधर है। बडे २ दर्पण चारों ओर लग रहे थे और उनके चौखटों पर हीरे मोती जडे थे। एक का प्रतिबिम्ब दूसरेमें दृष्टि आनेसे ऐसा ज्ञात होताथा कि सम्पूर्ण स्थान रत्नजटित है। एक ओर पडदा पड़ाथा उसके पीछे राजकुमारी बैठी थी वह दाई भी परदेसे लगकर बैठी और मुझकोभी बैठनेकी आज्ञा दी। तदुपरान्त

वह दाई स्वामिनीकी आज्ञासे इस प्रकार कहने लगी कि "हे युवा ! इस जगह का बादशाह बड़ानामी था उसके सात बेटियें थीं एक दिन बादशाहने कुछ उत्सव किया। सातों लड़कियें सोलह शृंगार किये बादशाहके सामने खड़ी थीं। बादशाहके जीमें जो कुछ आया तो पुत्रियोंकी ओर देखकर इस प्रकारसे कहने लगा कि "यदि तुम्हारा पिता बादशाह न होता और तुम किसी निर्धनके घरमें उत्पन्न होती तो तुम्हें कौन मनुष्य राजकुमारी कहता। परमेश्वरका धन्यवाद करो कि राजकुमारी कहलातीहो। तुम्हारा सब लाड़प्यार मेरेही दमसेहै।" तब छः लड़कियां मिलकर एकसाथ कहने लगीं कि जो कुछ श्रीमान्ने कहा वह यथार्थ है और श्रीमान्के मंगलसेही हमारा मंगलहै। परन्तु यह राजकुमारी जो सबसे छोटीथी परन्तु बुद्धिमानी और जानकारी में सबसे बड़ीथी मौन होकर खड़ीहोरही और बहनोंकी हाँ में हाँ न मिलाई। तब बादशाहने उसकीओर कड़ी दृष्टिसे देखकर कहाकि बीबी तुम कुछ न बोलीं इसका क्या कारणहै? तब छोटी राजकुमारीने दोनों हाथबांधकर प्रार्थनाकी "यदि प्राणदानपाऊं और अपराध क्षमा होतो अपनेजीका आशय प्रगटकरूं।" आज्ञाहुई कि कहो तब मलिकाने कहाकि "हेपिताजी ! आपने [सु]नाहै कि सच्चीबात कड़वी लगतीहै। सो इस समय में अपने [प्रा]णोंका भय न करके प्रार्थना करतीहूं किजो कुछ मेरे भाग्यमें [लि]खाहै वह किसीके मिटाये से नहीं मिट सकता"।

दो०—"सुनहु पिता जो कछु लिख्यौ, भाग्यबीच भगवान।
सो न टरै कोटिक जतन, एहि सम सत्य न आन॥"

जिस सर्वशक्तिमान ने आपको बादशाह बनाया उसीने

मुझेभी राजकुमारी कहलवाया। उसकी महिमाके सामने किसी की कुछ नहीं चलती। आप हमारे संम्बन्धसे पिताहैं इस कारण जो कुछ प्रतिष्ठा आपकी कीजाय वह थोड़ीहै यदि श्रीमान् के चरणोंकी धूरिकोमैं नेत्रांजन करके नेत्रोंमें लगालूं तो उचितहै परन्तु प्रत्येक का भाग्य प्रत्येकके साथहै? बादशाह यह सुनकर क्रोधमें आया और यह उत्तर जीपर खटकने लगा।अप्रसन्नहोकर कहनेलगाकि छोटेमुँह बड़ीबात ? अब इसका यही दंडहै कि गहना पाती जोकुछ इसके हाथ और गलेमें है उतारलो और एक डोलेमें चढ़ाकर ऐसे जंगलमें जहां मनुष्यका चिन्हतक न हो छोड़आओ तब ज्ञातहोगा कि इसके भाग्यमें क्या लिखाहै? " बादशाहकी आज्ञाके अनुसार उस आधीरातमें कि जब महा अंधकार छारहाथा राजकुमारीको जो अत्यंत लाड़प्यारसे पाली थी और जिसने दूसरीजगह नहीं देखीथी,एक भयंकरबनमें जाकर छोड़दिया।राजकुमारीके ऊपर कठिन विपत्ति आनपड़ी।मनमें कहती कि एकक्षणमें क्याथा औरक्या होगया फिर ईश्वरको धन्यबाद देती और कहती कि तू अत्यंतही दीन प्रतिपालक है, जो चाहा सो किया, और जो चाहताहै सो करता है और जो इच्छा होगी सो करेगा। जब तक इस शरीरमें प्राण है तब तक तुझसे निराशा नहीं होगी। इसही सोच बिचारमें आँख लगगई। प्रभात होनेपर कुमारी सोतेसे जागी, तो पुकारा कि हाथ मुँह धोनेको पानी तो लाना। फिर तत्काल रातकी बात याद आई कि तू कहाँ और यह बात कहाँ? यह कहकर उठी और ईश्वरको धन्यबाद देने लगी। हे मित्र! राजकुमारीके इस वृत्तान्तको श्रवण करनेसे छाती फटती है। उस भोले भाले जीसे पूछा चाहिये कि

क्या कहता होगा? अतएव इस डोलीमें बैठी हुई भगवानसे लौ लगारही थी और यह कहती थी कि;—

सवैया—जब दांत न थे तब दूध दियो, जब दांत दिये कह अन्न न दैहै। जो जलमें थलमें पशुपक्षिनकी, सुधिलेत सो तेरिहु लैहै। काहेको सोचकरै मनमूरख, सोचकिये कछु हाथ न ऐहै। जानको देत अजानको देत, जहानको देत सो तोहूको दैहै ॥ १ ॥

सत्य है जब कुछ नहीं बनआता भगवानही याद आता है। नहीं तो अपनी २ बुद्धिमें प्रत्येक व्यक्ति कालीदास और धन्वन्तरि हैं। अब ईश्वरकी महिमाका कौतुक देखिये कि इसही प्रकारसे तीन दिन दिनरात व्यतीत होगई और राजकुमारीके मुँहमें एक खीलभी उड़कर न पड़ी। फूलसा शरीर मुरझाकर छविहीन होगया, चमकने वाला सुवर्णसा रंग हलदीकी नांई होगया। मुँहमें पपड़ी बँधगई। आँखें पथरागईं। परन्तु प्राण अटक रहाथा, सांस चलतीथी, कहावत है कि (जब तक सांसा तब तक आशा) चौथे दिन एक महात्मा, जिनके मुखको देखकर भक्ति उदय होतीथी;—आये। राजकुमारीको इस अवस्थामें देखकर बोला कि हे पुत्री! तेरा पिता बादशाह है परन्तु तेरे भाग्यमें यही बदाथा अब मुझ भिखारीको अपना सेवक समझ और अपने उत्पन्न करनेवालेका रात दिन ध्यान कर परमेश्वर भला करेगा। महात्माके पास जो कुछ खाद्य सामग्री वर्त्तमानथी सो मल्काके आगे रक्खी और पानीकी खोजमें फिरनेलगा। चलते २ देखा कि एक कुंआ तो है परन्तु डोल और रस्सी नहीं। जिससे पानी भरा जाय। वृक्षके थोड़ेसे पत्ते तोड़कर दोना बनाया। और अपनी पगड़ी खोलकर उसमें दोनेको बांधकर पानी निकाला और

राजकुमारीको कुछ खिलाया पिलाया । चेत आया तब उस ईश्वर भक्त मरदने बिवश और अनाथ जानकर समझाया बुझाया । राजकुमारीने जब अपने ऊपर इस प्रकारसे उसकी सहानुभूति अपने ऊपर देखी जब उसको भी धैर्य हुआ तब उस बृद्धने यह नियम किया कि प्रभातको भी भीख मांगनेंके लिये नगरमें जाता, जो कुछ मिलता, मलकाके पास लेआता, इस भांतिसे थोडे दिन व्यतीत होगये । एक दिन राजकुमारीने शिरमें तेल डालने और कंघी चोटी करनेकी इच्छाकी । जैसेही जूडा खोला, तो चुटियामेंसे मोतीका एक दाना चमकता हुआ निकल पडा।राजकुमारीने वह दाना उस भिखारीको दिया और कहाकि इसको नगरमें बेचलाओ ।वह फकीर उस मोतीको बेचकर उसका मूल्य राजकुमारीके निकट लेआया तब राजकुमारीनेआज्ञा दी कि निर्वाहके योग्य एक घर यहांपर बनवाओ । फकीरने कहा कि हे पुत्री ! दीवारकी नीम खोदकर थोडीसी मिट्टी एकत्र करो, एक दिनमें पानी लाय गारा आरंभकर दूंगा राजकुमारीने उसकी आज्ञाके अनुसार मिट्टी खोदी । जब एक गज जमीन खुदगई तो नीचेसे एक द्वारसा दिखाई दिया, राजकुमारीने उसको साफ किया । उसको खोलकर राजकुमारी देखती क्या है कि एक बडा भारी घर है और उसमें करोडों अरबोंरत्न, और अनन्त अशरफी रुपये भरे पडे हुए हैं । राजकुमारीने अशर्फियोंके चार पांच थैली लेकर उस द्वारको बंदकर दिया और ऊपरसे मिट्टी बिछादी । इतनेमें वह फकीर आया तब राजकुमारीने आज्ञादी कि राज मजूरोंको जो अपने कार्यमें अत्यंत चतुरहो शीघ्र यहांपर बुलालाओ मैं यहांपर रहनेके लिये एक बहुत बडा मकान बनवाऊंगी जो बादशाही महलका सा-

मना करेगा मकानके अतिरिक्त किला, बाग, नगरकोट, एक धरमशाला अनुपम तइयार करो। परन्तु उसका एक मानचित्र पहले बनाकर कोई मिस्त्री लावै, जो पसंद किया जाय। फकीरने राजकुमारीकी आज्ञाके अनुसार अच्छे २ कारीगर लाकर मौजूद किये कुछ दिनमें स्थान बनने लगा और अच्छे २ विद्वान लोग नौकर रक्खे जाने लगे।उस बडे स्थान और दुर्गके बननेका समाचार धीरे २ मेरे पितापर जो बादशाह था। पहुँचा सुनकर विस्मित हुए और प्रत्येक व्यक्तिसे पूछने लगे कि यह कौन मनुष्य है जिसने जंगलमें महलोंका बनाना आरंभ कियाहै। कोई इस समाचारको नहीं जानताथा इस कारण कहाकि हे महाराज ! हम दासोंको इसका कुछ भेद ज्ञातनहीं। तब एक अमीरके द्वारा समाचार भेजा कि मैं उन स्थानों को देखनेको आया चाहताहूं और यहभी नहीं जानता कि कहांकी राजकुमारीहो। मैं यह समस्त वृतान्त जानना चाहताहूं। जैसेही राजकुमारीने इस समाचारको सुना, वैसेही अत्यंत प्रसन्नहोकर यह प्रार्थना पत्रलिखा कि " महाराजाधिराज ! श्रीमान्के शुभागमनका समाचार अपनी कुटीपर आनेका सुनकर अत्यंत प्रसन्नता हुई और इससे मुझपर अत्यंत कृपा हुई। धन्यहै उस स्थानको जहाँ श्रीमान्के चरणकमलकी शोभा । मैं आशा करतीहूं और कल पूर्णिमाकी रातभीहै जिसको म मानाजाताहै ; इसलिये श्रीमान् अवश्यही यहाँ पधारें और जो कुछ इस दीनसे होसके उसको ग्रहण करें। ऐसा करनेसे मुझपर अत्यंत कृपाहोगी। " यह प्रार्थना पत्र लिखकर राजदूतको दिया। बादशाहने अरजीपढ़कर कहलाभेजाकि हमने तुम्हारा निमंत्रण स्वीकार किया, अवश्यही आऊंगा। मलकाने

यह समाचार पाकर अपने सेवक और कार्याध्यक्ष लोगोंको आज्ञादीकि निमंत्रणकी सामग्री इस प्रकारसे तइयारहो कि जिस को ग्रहणकरके बादशाह अत्यन्त प्रसन्नहोजाय और जो मित्र या दरवारीलोग उसके साथआवें वह खा पीकर हर्षितहोजाँय। राजकुमारी की आज्ञासे भोजनके समस्त पदार्थ सलोने और मधुर इस प्रकारके स्वादिष्ट तइयार हुए कि मुसलमानों ने कभी काहेकोही खाएहोंगे। सन्ध्या होनेपर बादशाह हिन्दी सिंहासनपर सवारहो राजकुमारीके स्थानपर आया। राजकुमारी अपनी सहेली और सेवकोंको साथले अगौनीके लियेचली जैसेही बादशाहके सिंहासनपर दृष्टिपड़ी वैसेही इस प्रकारके नियम से प्रणाम कियाकि बादशाह अत्यंत चकितहुआ और उसीप्रकार से सभामें लाकर बादशाहको स्वर्ण सिंहासनपर बिठाया। मलकाने सवालाख रुपयेका चोतरा तइयार कराख्खाथा और जवाहरातकी १०१ थाली तथा अशरफी व भांति २ के वस्त्राभूषण सजारक्खेथे। दोहाथी सजे सजाए खड़ेथे। यह समस्त पदार्थ बादशाहको भेंटमेंदिये और आप दोनों हाथबांधे सामने खड़ी रही। बादशाहने अत्यंत कृपासे पूछाकि तुम किसदेशकी राजकुमारीहो? और यहां किसकारणसे आईहो? राजकुमारीने सभ्यता के साथ प्रणाम करके कहाकि यह वही अभागिनी है जो श्रीमान्के क्रोधमें फँसी थी और इस जंगलमें आई। यह सब कौतुक ईश्वरने दिखाए हैं जो आप देख रहे हैं, यह सुनतेही बादशाहका जी भर आया और उठ कर उसको गलेसे लगाया और हाथ पकड़के अपने सिंहासनके निकट कुरसी बिछवाय बैठनेकी आज्ञा दी। परन्तु हृदयमें बड़ा अचंभा माना तदुपरान्त समाचार दूत के द्वारा वेगमके पास समाचार भेजा

कि सम्पूर्ण शाहजादियोंको साथ लेकर शीघ्र यहां आवें। सब राजकुमारियोंने आयकर अपनी इस बहनको पहिचाना और अपनी माताके साथ गले मिलकर रोई और भगवानका धन्यबाद किया। इस राजकुमारीने आनकर अपनी माता और बहनोंके सामने इतने अधिक रत्न रखदिये कि बादशाह का सारा कोष उसके सामने तुच्छ था। फिर बादशाहने सबको अपने पास बिठाकर भोजन किया तदुपरान्त जब तक पिताजी जीवत रहे। कभी २ आप आते और कभी कभी मलका को साथ लेजातेथे। जब बादशाह स्वर्गवासी हुआ तब समस्त राज्य मलकाको प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा राजकरनेके योग्य न था। हे मित्र ! यही वृत्तान्त है जो तुमने सुना। ईश्वर दत्त सम्पत्तिका कभी क्षय नहीं होता। परन्तु आपकीभी इच्छा मार्जि न होनी चाहिये किसी का बचनहे कि।

दोहा—तुलसी पंछिनके पिये, घटे न सरिता नीर।
धर्म किये धन ना घटे, जो सहाय रघुवीर॥

यह कह कर फिर उस दाईने कहा कि "यदि तुम उसभेद का प्रगट करना निश्चय कर चुके हो तो शीघ्र जाओ।" मैंने कहा "जी हां" मैं अभी जाताहूं और ईश्वर चाहे तो शीघ्र लौट आताहूं। ईश्वरके ऊपर भरोसा रखके मैं उस ओर को च- . । एक वर्षके पीछे सैकड़ों विपत्ति झेलता हुआ नीमरोज .रमें जा पहुँचा। जितने आदमी वहां देखे वह सबही का- . कपड़े पहरे हुए थे। जैसा सुनाथा वैसा अपनी आंखों देखा कई दिन पीछे पूर्णिमा हुई। पहली तारीख को उस नगरके सब छोटे बड़े औरत मर्द एक जंगलमें एकत्र हुए मैं भी फकीर का वेषबनाये हुए खड़ा हुआ यह कौतुक देख रहा था कि

न जाने अब क्या होता है। इतनेमें बैलपर चढाहुआ एक जवान मुँहसे कफ निकालता जंगलसे बाहर आया मैं उसको देखतेही विस्मित होकर खडा रहगया। वह जवान पुराने नियमके अनुसार जो जो कार्य करताथा करके फिर चलागया और प्रजानगरको चली गई। चेत आनेपर मैं पछताया कि मुझसे यह क्या कार्य हुआ अब महीनाभर फिर मार्ग देखनापडा बिवश होकर सबके साथ मैंभी लौट आया। तदुपरान्त उस महीनेको गरमीके बडे २ दिनोंकी नाईं कठिनतासे काटा। मनाते २ दूसरी पूर्णिमा आई। मेरे लिये मानो उत्सवकी रात आई। दूसरेदिन नियमानुसार बादशाह जंगलमें आया तब मैंनें पूर्ण निश्चय किया कि अबकी वार जो कुछ हो सो हो अपनेको सावधान रखके इस अद्भुत बातको जान लेना चाहिये। फिर वह युवा उसही प्रकारसे बैलपर चढाहुआ आ पहुँचा और उतरकर घुटुओंके बल बैठगया। उसके एक हाथमें नंगी तलवारथी और दूसरे हाथमें बैलकी नाथ पकडे था। फिर उसने एक पात्र दासको दिया और वह प्रत्येकको दिखाकर लेगया आदमी देखकर रोने लगे। पश्चात् उस युवाने अमृतवानको कोश और दासके एक ऐसा खड्ग मारा कि उसका धड शिरसे अलग होगया और आप बैलपर सवार होकर चला। मैं भी शीघ्रतासे उसके पीछे जाने लगा नगरके आदमियोंने मेरा हाथपकडा और कहाकि यह क्या करताहै, क्यों जानबूझकर मरताहै। यदि ऐसा हो प्राण खोनाही विचाराहै तो मरनेके बहुतसे बहानेहैं मर रहना। मैंने प्रार्थना की और बलभी किया कि किसी प्रकारसे उनके हाथसे छूटूं परन्तु छुटकारा न हुआ। दो चार आदमी लिपट गये और पकडकर नगरकी ओर ले

आये, बडा कलकहुआ। वहां रहते २ महीना भर बीत गया। दूसरे मासकी पहली तारीखको फिर सम्पूर्ण प्रजा वहां एकत्र हुई। मैं पहलेसेही प्रार्थनाके समय उठकर जंगलमें जो संपूर्णतः उस युवाकी राहपर था घुसकर छिपरहा कि यहांपर कोईभी मेरा पीछा न करेगा। बैलवाला उसी नियमके अनुसार आया और नियमित कार्य करके लौटा मैंने उसका पीछा किया और दौड घूम करके साथ हो लिया तब उस युवाने पगाहटसे जाना कि कोई मेरे पीछे चलाआताहै तत्काल बैलकी लगाम खैंच लौटा और झपटकर खड्ग चलायाही चाहता था कि मैंने झुककर प्रणाम किया और हाथ जोडे हुए खडारहा। फिर उसने कहाकि हे फकीर ! तू वृथाही मारागया होता पर बचगया,तेरी आयु अभी शेषहै: जा इधर कहां आया है यह कह कर मोतियों का एक जडाऊ कंठा मेरी ओरफेंका और कहा कि इस समय मेरे पास और कुछ नहीं जो तुझे दूं। इसको बादशाहके पास लेजा जो मांगेगा सो पावेगा। उसका प्रभावऔर भय मेरे ऊपर ऐसा पडा कि मुझसे उठने और चलनेकी सामर्थ न रही पांव सौ सौ मनके होगये। वह तो चलदिया। मैंनें मनमें कहा कि इस समय वहांपर पडे रहजाना मेरेलिये बहुत बुराहै फिर ऐसा समय न मिलेगा।यह ठान अपने प्रानका दाँव लगायमें उसके पीछे२ चला। यह देखकर वह फिर लौटा और मेरे मारडालनेका निश्चय किया। मैंनें शिर झुका दिया और कहा कि "हे ...लवान ! ऐसा खड्गमार कि मेरे दो टुकडे हो जांय खाल लगी हुई न रहे इन कठिन आपत्तियोंमे मेरा छुटकारा हो जायगा, मैंनें अपना प्राण तुझपर वारा। वह बोला कि अरे मूढ ! तू क्यों वृथा अपने प्राणोंको मेरे हाथमे खोता और अपराधी ब-

नता है। जा अपना मार्गले क्या अपने प्राण तुझको भारीहैं? "मैंने उसका कहा न माना और आगेको चरणधरा फिर उसने जान बूझकर कुछ न कहा और मैं पीछे २ हुआ। जंगलमें जाते २ दो कोसतक झाड झंखाडोंमें चलागया। उसके पीछे एक छहरदीवारी दिखाई दी वह युवा द्वारपर गया और पहुँचकर ऐसा शब्द किया कि वह द्वार आपसे आपही खुलगया। वह भीतर गया और मैं बाहर खडा रहा। हे भगवान! अब मैं क्या करूं? व्याकुल था। क्षणभरके पीछे एक दास आया और समाचार लाया कि चलो तुम्हें सरकारने बुलायाहै कदाचित तेरे सिर पै काल आयाहै, क्या तेरी कमबख्ती आई है? मैंने कहा धन्य भाग्य और बेधड़क बागके भीतर चलागया। फिर वह दास मुझे एक मकानमें लेगया जहां वह युवा बैठाथा। मैंने उसे देख झुककर प्रणाम किया और उसने बैठनेको कहा। मैं सभ्यतापूर्वक बैठगया। वह अकेला एक गद्दीपर बैठा है और शस्त्र आगे धरे हैं। वह हीरे पन्नेका एक झाड़ तइयार कर चुका है। जब उसके उठनेका समय आया तब जितने दास उसके सामने वर्त्तमानथे वह सब छिपगये मैंभी मारे घबड़ाहटके साथ एक कोठरीमें जा छिपा। तब वह युवा उठा और सब कोठरियोंकी कुन्डियें लगा दीं और फिर बागके एक कोनेकी ओर चला और अपनी सवारीके बैलको मारने लगा। उसके चिल्लानेका शब्द मेरे कानमें पड़ा, कलेजा कांपनेलगा। परन्तु इस वृत्तान्तको जानने के लिये यह सब आपत्ति सहीथी धीरे २ द्वार खोल एक वृक्षकी आड़में जाकर खड़ा होगया और देखनेलगा। युवाने वह सोंटा जिससे उस बैलको मार रहाथा पृथ्वीपर डालदिया और एक मकानका ताला कुंजीसे खोला और भीतरगया। तदुपरान्त

बाहर निकलकर बैलकी पीठपर हाथ फेरा और मुँह चूमा फिर दाना घास खिलाकर इधरको चला मैं देखतेही दौड़कर शीघ्रही कोठरीमें जा छिपा उस युवाने सब दरवाजोंकी कुंडियें खोल दीं सम्पूर्ण दास बाहर निकले और हाथ मुँह धोनेको पानीले आये वह हाथ मुँह धोकर प्रार्थना करनेके लिये खडा हुआ। प्रार्थना कर चुकने पर पुकारा कि वह फकीर कहाँ है। अपना नाम सुनतेही मैं दौडकर गया और सामने खडा होगया। उसने कहा कि बैठ मैं प्रणाम करके बैठा। भोजनके पदार्थ आये उसने आप खाये और मुझे खिलाये। फिर हाथ मुहँ धोकर दासोंसे कहा कि अब तुम जाकर सो रहो। जब कोई इस स्थानमें न रहा तो मुझसे पूछा कि हे मित्र ! तुझपर ऐसी क्या बिपत्तिपडी जो तू अपनी मृत्युको खोजता फिरता है ?" यह सुनकर मैंने अपना समस्त वृत्तान्त आदिसे अंततक उसको सुना दिया और निवेदन किया कि आपसे मुझको पूर्ण आशा है कि मनोभिलाषाको पाऊंगा। यह सुनतेही उसने ठंढी सांसली और कहने लगा कि हे भगवान ! प्रेमकी पीरको तेरे अतिरिक्त और कौन जानता है? कहाभी है कि "जाके पैर न फटी बिवाई। वह क्या जाने पीर पराई" इस पीरको कोई प्रेमीही जानता है।

दोहा—प्रीतरीत अति कठिन है, ज्यों खाडेकी धार।
जिन कीन्ही तिन फल लह्यो, रोय २ बहुवार॥

कुछ बिलम्बके पश्चात् उस युवाने चेतमें आकर इस शब्दसे हाय करी कि सारा मकान गूंज गया। तब मुझे विश्वास हुआ कि यह भी इस प्रेम रोगसे पीडित है तब तो मैंने साहस करके कहा कि मैंने तो अपना समस्त वृत्तान्त सुनादिया अब कृपा करके अपनी भी सम्पूर्ण व्यवस्था कह सुनाइये तो अपनी सा-

मर्थभर आपके लिये भी परिश्रम करूं। और जीका आशय चेष्टा करके हाथमें लाऊं सिद्धान्त यह है कि वह यथार्थ प्रेमी मुझको अपना मित्र और हमदर्द जानकर इस प्रकारसे बर्णन करनेलगा कि हे मित्र! मैं इस नीमरोज नगरके बादशाहका राजकुमार हूं। पिताजीने मेरे उत्पन्न होनेके पीछे ज्योतिषी रमल फेकने वाले और पंडितगण एकत्र किये और कहा कि राजकुमारके भाग्यको देखो और जन्मपत्रीको बनाओ। और जो कुछ फल निकले वह पूरा २ मुझसे कहो। बादशाहकी आज्ञाके अनुसार सबने एक सम्मति हो अपनी२ विद्यासे गणित करके यह निश्चय किया किईश्वरके अनुग्रहसे ऐसे शुभमुहूर्त और योगमें राजकुमार का जन्म हुआ है कि यह सिकन्दरकी समान राज्य करेगा और न्यायमें नौशेरवाँकी नांई होगा। सब विद्यायोंमें व्युत्पन्न होगा और जिस कार्यमें अपना चित्त लगावेगा वह कार्य बरावर पूरा होजायगा। दानी और उदार ऐसा होगाकि हातिम और रुस्त-मको लोग भूल जावेंगे। परन्तु चौदह वर्ष तक चंद्रमा और सूर्यके देखनेसे एक बडी बिपत्ति दिखाई देती है। वरन ऐसा विश्वास है कि उन्मत्त होकर बहुतसे आदमियोंका बध करेगा। तथा जंगलको निकलकर थलचर और पक्षियोंके साथ दिल लगावेगा। यह सावधानी रहनी योग्य है कि यह किसी समय सूर्य और तारोंको न देखे वरन आकाशकी ओर दृष्टिभी न करे। यदि इतना समय कुशलसे कटे तो फिर समस्त आयुतक आनंद करेगा। यह सुनकर बादशाहने इसही कारणसे इस बारहदरीकी नीव डाली और कई स्थान अपनी रुचिके अनु-सार बनाये। मेरेलिये पृथ्वीके नीचे एक घर बनाया और उसी में पालन पोषण होनेकी आज्ञा दी। ऊपर एक बुर्ज नमदेका

बाहर निकलकर बैलकी पीठपर हाथ फेरा और मुँह चूमा फिर दाना घास खिलाकर इधरको चला मैं देखतेही दौड़कर शीघ्रही कोठरीमें जा छिपा उस युवाने सब दरवाजोंकी कुंडियें खोल दीं सम्पूर्ण दास बाहर निकले और हाथ मुँह धोनेको पानीले आये वह हाथ मुँह धोकर प्रार्थना करनेके लिये खडा हुआ। प्रार्थना कर चुकने पर पुकारा कि वह फकीर कहाँ है। अपना नाम सुनतेही मैं दौडकर गया और सामने खडा होगया। उसने कहा कि बैठ मैं प्रणाम करके बैठा। भोजनके पदार्थ आये उसने आप खाये और मुझे खिलाये। फिर हाथ मुहँ धोकर दासोंसे कहा कि अब तुम जाकर सो रहो। जब कोई उस स्थानमें न रहा तो मुझसे पूछा कि हे मित्र ! तुझपर ऐसी क्या बिपत्तिपडी जो तू अपनी मृत्युको खोजता फिरता है ?" यह सुनकर मैंने अपना समस्त वृत्तान्त आदिसे अंततक उसको सुना दिया और निवेदन किया कि आपसे मुझको पूर्ण आशा है कि मनोभिलाषाको पाऊंगा। यह सुनतेही उसने ठंढी सांसली और कहने लगा कि हे भगवान ! प्रेमकी पीरको तेरे अतिरिक्त और कौन जानता है? कहाभी है कि "जाके पैर न फटी बिवाई। वह क्या जाने पीर पराई" इस पीरको कोई प्रेमीही जानता है।

दोहा—प्रीतरीत अति कठिन है, ज्यों खाडेकी धार।
जिन कीन्ही तिन फल लह्यो, रोय २ बहुवार ॥

कुछ बिलम्बके पश्चात् उस युवाने चेतमें आकर इस शब्दसे हाय करी कि सारा मकान गूंज गया। तब मुझे विश्वास हुआ कि यह भी इस प्रेम रोगसे पीडित है तब तो मैंने साहस करके कहा कि मैंने तो अपना समस्त वृत्तान्त सुनादिया अब कृपा करके अपनी भी सम्पूर्ण व्यवस्था कह सुनाइये तो अपनी सा-

मर्थभर आपके लिये भी परिश्रम करूं। और जीका आशय चेष्टा करके हाथमें लाऊं सिद्धान्त यह है कि वह यथार्थ प्रेमी मुझको अपना मित्र और हमदर्द जानकर इस प्रकारसे वर्णन करनेलगा कि हे मित्र! मैं इस नीमरोज नगरके बादशाहका राजकुमार हूं। पिताजीने मेरे उत्पन्न होनेके पीछे ज्योतिषी रमल फेकने वाले और पंडितगण एकत्र किये और कहा कि राजकुमारके भाग्यको देखो और जन्मपत्रीको बनाओ। और जो कुछ फल निकले वह पूरा २ मुझसे कहो। बादशाहकी आज्ञाके अनुसार सबने एक सम्मति हो अपनी२ विद्यासे गणित करके यह निश्चय किया किईश्वरके अनुग्रहसे ऐसे शुभमुहूर्त और योगमें राजकुमार का जन्म हुआ है कि यह सिकन्दरकी समान राज्य करेगा और न्यायमें नौशेरवाँकी नांई होगा। सब विद्यायोंमें व्युत्पन्न होगा और जिस कार्यमें अपना चित्त लगावेगा वह कार्य बराबर पूरा होजायगा। दानी और उदार ऐसा होगाकि हातिम और रुस्तमको लोग भूल जावेंगे। परन्तु चौदह वर्ष तक चंद्रमा और सूर्यके देखनेसे एक बडी बिपत्ति दिखाई देती है। वरन ऐसा विश्वास है कि उन्मत्त होकर बहुतसे आदमियोंका बध करेगा। तथा जंगलको निकलकर थलचर और पक्षियोंके साथ दिल लगावेगा। यह सावधानी रहनी योग्य है कि यह किसी समय सूर्य और तारोंको न देखे वरन आकाशकी ओर दृष्टिभी न करे। यदि इतना समय कुशलसे कटे तो फिर समस्त आयुतक आनंद करेगा। यह सुनकर बादशाहने इसही कारणसे इस बारहदरीकी नीव डाली और कई स्थान अपनी रुचिके अनुसार बनाये। मेरेलिये पृथ्वीके नीचे एक घर बनाया और उसी में पालन पोषण होनेकी आज्ञा दी। ऊपर एक बुर्ज नमदेका

तइयार कराया। उसमें धूप और चांदनी नहीं छनती थी। मैं धाई, रक्षिका और पालन पोषण करनेवालियोंके साथ आनंदसे पालाजाने लगा। एक शिक्षक मुझको शिक्षा देनेके लिये नियत हुआ, मैं उससे सब प्रकारकी विद्या सीखने लगा। पिताजी सदैव मेरा समाचार लेते रहतेथे। क्षण २ की सूचना उनको मिलती थी। मैं उस मकानकोही सारासंसार समझकर रंग २ के फूल और खिलौनोंसे खेला करताथा। सारे संसारकी वस्तु भोजनके लिये एकत्रथीं जो चाहताथा सो खाताथा। दश वर्ष की अवस्थामें मैंने सबप्रकारकी विद्या सीखली और कला कौशलमें निपुण होगया एक दिन उसही गुंबजके नीचे प्रकाशस्थानसे एक फूल अत्यंत अद्भुत देखा वह देखतेही देखते बडा होताजाताथा। मैंने चाहा कि हाथसे पकडलूं। परन्तु जैसे २ मैं हाथ बढाता जाताथा तैसेही तैसे वह फूल ऊंचा होता जाता था। मैं विस्मित होकर उसको देखही रहाथा कि वैसेही किसी के ठठाकर हँसनेकी आवाज मेरे कानमें आई उसके देखनेको गर्दन उठाई तो क्या देखताहूं किनमदेको चीरकर एकचंद्रमासा निकल रहाहै उसको देखनेसे मेरी बुद्धि लोप होगई और चेत जाता रहा। फिर सँभलकर देखा तो परीजादोंके कन्धे पर एक सुवर्णका सिंहासन रक्खा हुआ है और जो सिंहासन पर विराजमानहै उसके शिरपर रत्नजडित टोपी रक्खी हुई है, शरीरमें चमकीले वस्त्र शोभायमान हैं। हाथमें श्वेत पत्थरका एक पात्र है। वह अप्सरा मदिरा पिये हुए बैठी है। तदुपरान्त वह सिंहासन (विमान) धीरे धीरे उतरकर उस शिखरमें आया तब उस अप्सराने मुझे बुलाया। और अपने निकटबिठाया।प्यारकी बातें करने लगी। फिर मुँहसे मुँह मिलाकर अधरामृत पिलाया

और कहा कि मनुष्यके हृदयमें प्रेमका नाम नहीं होता परन्तु हमारा जी तुम्हें प्यार करता है। एक साथ ऐसी २ प्रेमभरी बातें कही कि मेरा जी मोम होगया और अत्यन्त प्रसन्नता हुई। जीवनका आनन्द पाया और यह समझा कि आज मैं संसारमें आया। विशेष क्या कहूं किसीने ऐसा आनन्द न देखा होगा न सुना होगा। हम दोनों उस आनन्दमें बैठे थे कि इतनेमें चार परीजादोंने आकाशसे उतरकर उस प्यारीके कानमें कुछ कहा। सुनतेही उसका मुँह पीला पडगया तब उसने मुझसे कहा कि हे प्यारे! जी तो चाहता था कि कुछ देरतक तेरे साथ बैठकर जी बहलाऊं और इसही भाँतिसे मैं तुझे अपने साथले जाऊं। परन्तु यह आकाश दो प्रेमियोंको एक स्थानमें बिश्राम और आनन्दसे नहीं रहने देता। लो, परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करे। यह सुनकर मेरा जी उडगया और हाथमले। मैंने कहा "हे प्यारी! अब तुम कब आवोगी! यह तुमने कैसा शोकमय समाचार सुनाया। यदि शीघ्र आवोगी तो मुझे जीता पावोगी नहीं तो पछितावोगी। या अपना ठिकाना नाम धाम बतावो कि मैंही उस पते पर खोज करलूं और अपनेको तुम्हारे पास पहुंचाऊं।" उस परीने कहा कि "भगवान तुम्हारा मंगल करे यदि जीवन है तो फिर साक्षात् हो रहैगा। मैं जिन्नोंके बादशाहकी पुत्रीहूं और काफ पर्वत पर रहती हूं।" यह कहकर विमान उडाया और क्रमशः ऊंची होती गई। जबतक दृष्टि पहुंची मेरी और उसकी दृष्टि एक रही। जब विमान लोप हुआ तब मेरी यह दशा हुई जी पर अद्भुत प्रकारका विस्मय रहता है। बुद्धि और चेतना जाती रही। आंखोंके आगे अन्धकार दिखाई देने लगा। इस प्रकारसे घबडाता, मन मारता,

जी हारता, फूट फूटकर रोता, शिर धुनता, वस्त्र फाडता और अपनी दशा बुरी बनाता हुआ मैं विलाप कलाप करने लगा;–

प्रिया बिन चैन न नेकहु आवै।

बुद्धि गई मुख छई उदासी खान पान नहिं भावै ॥
इत उत डोलत नहिं कछु बोलत मन्मथ ताप सतावै।
भय प्रद भवन भूतसो भाषै बन बन मोंहिं भटकावै ॥
कोयलबोल करेजे सालै मोर वा कहर मचावै ।
पल पल होत बिकल अति भारी चित्त महा अकुलावै ॥
लाल जहाज आज प्रेमोदधि बीच महा भरमावै ।
कृष्णा बेग आयदरशनदो मित्र महा दुख पावै ॥

इस प्रकार मेरा विलाप कलाप सुनकर एकदाईनें यह समाचार मेरे रक्षकों को सुनाया और इस प्रकारसे कहा कि राज कुमार की न जानें कैसी दशाहोगई, भगवान जाने यह कैसा वज्र पड़ा। खाना पीना छूटा। तब, मंत्री, धनी, सभासद् 'ज्योतिषी इत्यादिको साथलेकर बादशाह उस बागमें आया और मेरी यह दशादेख कर महा दुःख उनको प्राप्तहुआ आँसू भरकर मुझ को गलेसे लगालिया और मेरी चिकित्साके लिये आज्ञादी। वैद्योंने मनकी शक्ति और मस्तिक बिकारके लिये औषधें लिखीं, तांत्रिक लोगोंने यंत्र धो धो कर पिलाये ओझा लोग झाड़ फूंक करने लगे और ज्योतिषी लोगोंने कहाकि ग्रहोंके कुपित से यह दुर्दशाहुई, उनकी पूजा कीजिये, सिद्धान्त यह है कि सबही अपनी २ बातें कहतेथे, परन्तु जोकुछ बीततीथी मेरा मनही सहताथा। किसीकी चिकित्सा या झाड़फूंक मेरे काम न आई। प्रतिदिन उन्मत्त होतागया। बिना भोजन पानके मैं निर्बल होताचला। रात दिन चिल्लाना और शिर पटकना मेरा

कामथा इसी प्रकारसे तीनवर्ष व्यतीत होगये। चौथेवर्ष एक व्योपारी भ्रमण करताहुआ यहाँआया और देश देशके अन्मोल पदार्थ बादशाहके पास लाया और शाक्षातकिया! बादशाहने कुशल प्रश्न औरआवभगत करनेके पीछे उससे पूछा कि तुमने बहुतसे देशदेखे परन्तु कहींकोई सिद्ध बैद्यभी पाया। उसने कहा कि हे महाराजाधिराज ! दासने बहुत यात्राकी परन्तु भारत वर्षके मध्यभागमें एक नदी बहतीहै, उसके बीचमें एक मंडपहै वहाँपर एक जटाधारी महातमाने महादेवजीका बड़ामंडप और एकबाग बड़ा बहारका बनायाहै, वहींपर वह रहताहै उसका यह नियमहै कि वर्षभरमें केवल शिवरात्रिके दिन वह अपने स्थानसे निकल कर नदीमें पैरताहै। स्नानके पश्चात् जब अपने आसनपर जानें लगताहै। तब रोगी, दुखपाये, सताये जो दूर २ देशसे आनकर उसके द्वारपर एकत्र होजाते हैं, उनको देखभालकर औषध बतादेताहै फिर अपने आसनपर चलाजाताहै। परमेश्वरने उसको ऐसा अमृतमय हाथदियाहै कि औषधग्रहण करतेही प्रभाव होताहै और रोग जडसे जाता रहताहै यह वृत्तान्त मैंने अपने नेत्रोंसे देखाहै और ईश्वरकी महिमाका धन्यवाद किया कि ऐसे महात्माभी संसारमें वर्त्तमानहै। यदि आज्ञाहो तो राजकुमारको उसकेपास लेजाऊं। और उसको दिखाऊं निश्चयहै किशीघ्रही आरोग्यता प्राप्तहोगी और प्रगटमें उपायभी अच्छाहै किप्रत्येक देशके जलवायुके सेवन करनेसे चित्तमें प्रसन्नता आतीहै। बादशाहने भी उसकी परामर्शको उचित समझा और प्रसन्न होकर आज्ञादी कि "उचितहै? कदाचित उनका हाथ मेरे पुत्रपरभी अमृतकासा काम करे और इसके जीसे भय जाय। एक विश्वासपात्र धनीको मेरे साथ किया और आवश्यकीय सामग्री तइयार करादी

फिर मैं बिदा होकर चला और उस ठिकानेपर जापहुँचा। जल उस वायुके परिवर्त्तनसे चित्त ठहरा परन्तु मौनता उसी भांतिसे रही उस प्यारीका ध्यान एक क्षणभरकोभी चित्तसे दूर नहीं होताथा यदि कभी कुछ कहता तो यह दोहा पढताथा;—

दोहा—रूप रसीली गुनभरी, हे अलबेली नार।
मैं तोबिन अकुलात इति, तू कितगई सिधार॥

इसप्रकारसे दो तीन मास वहाँ व्यतीत होगये और उस पर्वतपर कोई चार हजार रोगी एकत्र हुए। सब यही कहतेथे कि अब भगवाननें चाहा तो महात्माजी अपनी मढीसे निकलेंगे और सबको उनके आशीर्वादसे आरोग्यता प्राप्तहोगी। अतएव जब उनके बाहर आनेकादिन आया तब वह कुटीसे निकलकर नदीमें नहाये, पार जाकर लौट आये सारे शरीरमें भस्म लगाई, चंदन चर्चितकिया। फिर लँगोट बाँध अंगोछा कंधेपर डाला और जटाबांधके निश्चिन्तहुआ। उसके मुखसे ऐसा भावप्रतीत होताथा किमानो सारा संसार उसके आगे कुछभी नहीं है। वह महात्माजी एक जडाऊ लेखनी हाथमें लिये सबकी ओर देखते भालते और नुक्सा लिखते हुए मेरी ओर आये। मुझे देखतेही खडे होगये और कहा कि तुम हमारे साथ आओ। मैं साथ होलिया जब सबको देख भाल चुके तो मुझे अपने साथ बागके भीतर लेगये ौर एक अच्छा दालान दिखाकर बोले कि तुम यहाँपर रहा करो। ार आप अपने स्थानमें चलागया। एक पखवाडा बीतनेपर रे पास आया और पहलेकी अपेक्षा मुझको हर्षित पाया, तब मुस्कुराकर कहा कि इस बागकी सैर किया करो और जिस मेवापर जी चले खाया करो और एक कुलफी चीनींकी भरीहुई मुझेदी कि इसमें से छः मासा प्रतिदिन खाया करो। यह कह-

कर वह तो चलागया और मैंने उसके कहनेके अनुसार औषधि का सेवन आरंभ किया । तब तो शक्ति बढने लगी । परन्तु प्रेम देवता वैसेही रहे । उस परीकी मूर्ति दृष्टिके आगे फिरतीथी । अचानक एक दिन मैंने उस मकानके आलेमें एक पुस्तक रक्खी हुई देखी, मैंने उसे उतार कर पढा तो उसमें सम्पूर्ण संसारकी विद्या भरीहुई देखी ऐसा ज्ञात होताथा कि सागरको गागरमें भर दिया है। मैं प्रत्येक घडी उसको देखा करताथा उसको पढते२ निदान और चिकित्सामें भली भांतिसे विचक्षण होगया । इस प्रकार फिर वही शिवरात्रिका दिन आया और योगी अपने आसनसे उठकर बाहर निकला । बहुतसे मनुष्य प्रार्थना करने लगे । उस दिन वह योगी अथवा महात्मा मुझे भी साथ लेते आएथे, मेरे हाथमें एक कलम दानभीथा । मेरा साथी अमीर और वह व्योपारी मुझे साथ देखकर गुसांईजीके चरणोंपर गिरपडे और धन्यबाद देकर कहने लगे कि आपकी कृपासे इतना तो हुआ वह अपने नियमके अनुसार नदीतक गया और पूजा अर्चनकी । लौटती बार बीमारोंको देखता भालता चला आताथा अचानक उन्मत्त लोगोंके समूहमें एक सुन्दर सुडौल युवा जिसमें निर्बलताके मारे खडे होनेकी सामर्थ न थी दिखाई दिया । मुझसे कहा कि इसको साथ लेजाओ । फिर सबको औषधदे दिलाकर एकान्तमें गया और उस युवाकी थोडीसी खोपडीको चीरकर देखा तो उसके मांसमें एक कानखजूरा चिपका हुआ बैठाथा । महात्माजीने उसको छूरीपर उठालेना चाहा उनके बिचारको जानकर मैं बोलउठा कि जो चिमटा गरम करके इस कानखजूरेकी पीठपर लगाया जाय तो उचित होगा और यह आपसे आप मांसको छोड देगा अगर खैंचोगे तो यह मस्तकके

गूदेको न छोडेगा और फिर जीवनका भी भयहै। यह सुनकर उसने मुझे देखा और अचानक यह कहता हुआ दृष्टिसे लोप होगया कि " अब तेरे द्वारा संसारका भला होगा मैं अब स्वर्गको जाताहूं । मैं उस रोगीकी चिकित्साकर भीतर गया परन्तु भलीभाँतिसे खोजनेपर भी उन महात्माका पता न पाया। उसके आसनपर तालियोंके दोगुच्छे पडेथे उनको उठाकर तालोंमें लगाने लगा परिश्रम करनेके पीछे उन तालियोंसे दो द्वारोंके ताले खुले । देखा तो एक कोठरी भूमिसे लेकर छततक रत्नोंसे भरी हुई है। दूसरी कोठरीमें एक संदूक मखमलसे मढ़ाहुआ रक्खाथा उसके तालेको खोला तो एक किताब देखी ।इस पुस्तकमें ओंकार मंत्र उसकी महिमा, जिन्न, अप्सरा, व मृतक पुरुषोंकी आत्मासे बातचीतका उपाय और छाया पुरुषका बर्णन लिखाथा इस सम्पत्तिके हाथ आनेसे मुझे अत्यंत प्रसन्नताहुई और उनका सिद्ध करना आरंभकिया। बागका द्वार खोला और अपने साथियोंको बाहरसे बुलाकर आज्ञादी कि इस समस्त सम्पत्तिको समस्त पुस्तकोंके साथलेचलो। वहाँसे जलमार्गके द्वारा सबने गमन किया आते २ जब अपने देशके निकट पहुँचा तो पिताजी।को समाचार पहुँचा। वह मुझको लेनेके लिये पहुंचे और अत्यंत [illegible]के साथगलेसे लगालिया। मैंने उनके चरणोंपर गिरकर [illegible]ार्थनाकी कि मुझको अपने पुराने निवास स्थानमें रहनेकी [illegible]ाज्ञाहो। उन्होंने कहाकि हे पुत्र! उस स्थानको मैं असैना समझताहूं। अतएव उसकी मरम्मत और सजावट मैंने रहित करदीहै अब वह स्थान तुम्हारे रहने के योग्य नहींहै और जिस महलमें चाहो उतरो अच्छातो यहहै कि किलेमें कोई स्थान

मनोगत करके मेरी आँखोंके सामनेरहो और जैसा चाहै वैसा बाग तइयार कराले, और कौतुक देखाकरो मैंने हठ करके उस बागको नये सिरेसे सजाया और स्वर्गकी समान बनाय उसमें प्रवेशकिया। फिर अवकाशके अनुसार जिन्नोंके चित्रोंके लिये आराधना करनेबैठा और सबको छोड़ छाड़कर हाजरात करने लगा जब चालीसदिन आराधना करते २ बीतगये तब आधीरातके समय एक ऐसी आँधीआई कि बड़े २ भवन गिरपडे और पुराने पुराने वृक्ष जड़मूलसे उखड़ कर न जाने कहाँ जापड़े, फिर परीजादोंकी सेनाआई और एक बिमान ऊपरसे उतरा उसपर एक व्यक्ति चमकीले मोतियोंका मुकुट धारण किये हुए बैठाथा मैंने सभ्यतासे प्रणाम किया उसने प्रत्युत्तर देकर कहाकि हे मित्र! तूने यह क्या वृथा कुलाहल मचारक्खाहै, हम से तेरा क्या सम्बन्ध? मैंने प्रार्थनाकी कि मैं दीन बहुत समयसे तुम्हारी पुत्रीका अनुरागी हूं और इसी कारणसे दुर्दशाग्रस्तहुआ व जीनेसे हाथ धोबैठाहूं। अपने प्राणोंका दाव लगाकर यह कार्य कियाहै आशा करताहूं कि अपने कृपा कटाक्ष से मेरी कामना पूर्णकरो और उसके दर्शन कराकर आनंद और विश्रामदो तो बड़ा पुण्यहोगा। यह सुनकर उसनेकहाकि मनुष्यपृथ्वीतत्वका उत्पन्न हुआ और हम लोग अग्नितत्वसे उत्पन्न हुए हैं, दोनोंमें मेल होना कठिन है। मैंने शपथकी मैं उसके देखनेका अभिलाषी हूं और कुछ अभिलाषा नहीं है फिर उस बिमानारूढने उत्तर दिया कि मनुष्य अपने वचनका निर्वाह नहीं करता; स्वार्थके समय सब कुछ कहता है परन्तु उसका स्मरण नहीं रखता यह बात मैं तेरेही भलेके लिये कहता हूं कि यदि तैंने कभी कुछ और कामनाकी तो तुम दोनोंका बुरा परिणाम होगा वरन प्राण जानेकाभी स-

न्देह है। मैंने पुनर्वार शपथ करके कहा कि मैं ऐसा कार्य कदापि नहीं करूंगा जिसमें बुराई निकले। मैं तो केवल उसके दर्शनोंकाही अभिलाषी हूं। यह वार्ता होही रहीथी कि वह सुन्दरी जिसका मैं अनुरागी था सिंगार किये हुए आ पहुँची और बादशाहका बिमान वहाँसे चला गया तब मैंने बिवश हो उसबालाको प्राणकी भांति अपने हृदयसे लगा लिया और यह दोहा पढाः—

दोहा—धन्य २ यह शुभघडी, पूरी मनकी आस।
भामिनि तेरे बिरहमें, नित हम रहें उदास॥

प्रसन्नतासे उस सुन्दरीके साथ बागमें रहने लगा। भयके मारे अपने चित्तको सावधान रखता था। आनंदसे उसका मुख देखा करता वह सुन्दरी मुझको शपथ और बचनपर आरूढ देख मनमें चकित रहतीथी और कभी२यह कहतीकि हे प्यारे तुमभी अपने बचनके सच्चे हो। परन्तु एक उपदेश मैं करती हूं कि अपनी पुस्तकसे सावधान रहो नहीं तो जिन्न किसीदिन तुम्हें असावधान पाय उसको चुरा ले जांयगे। मैंने कहा कि उसे मैं अपने प्राणोंकी बराबर रखता हूं। एक दिन मदनने अत्यंत सताया तब जीमें कुछ और आया कि जो कुछ हो सो हो कहांतक अपने लिये थामू। जैसेही उसने मुझे छातीसे लगाया और मैंने लनेंकी इच्छाकी वैसेही एक शब्द हुआ कि यह किताब मुझे इसमें बडे २ मंत्र हैं उनको अपवित्र मतकर। मुझे उन्मत्त ानेके कारण कुछ भी चेत न रहा और पुस्तक बगलसे निकाल विना जाने पहिचाने किसीको देदी और अपने कार्यमें लगा। वह सुकुमारी मेरा यह व्यवहार देखकर बोली कि अरे अदूरदर्शी! चूक गया और मेरे उपदेशको भूला। यह कहकर अचेतहोगई।

फिर मैंने उसके सिरहाने एक देवको देखा जो पुस्तकको लिये हुए खडा था मैंने सोचा कि इसको पकडकर भलीभांतिसे मारूं, इतनेमें दूसरा देव उसके हाथसे वह पुस्तक ले भागा। मैंने जो मंत्र स्मरण किये थे उनको पढना आरम्भ किया उनके प्रभावसे वह देव जो खडा था बैल बन गया। परन्तु शोक है कि उस परीको किंचित् भी चेत न रहा और वह उसी भांतिसे अचेत रही तब मेरा जी घबडाया, सारा आनन्द मिट्टीमें मिलगया, आदमियोंसे उसही दिनसे घृणा उत्पन्न हुई, बस इस बागके एकान्त स्थानमें पडा रहता हूं और जी बहलानेके लिये एक झाड तइयार करता हूं। प्रत्येक मासमें इस बैलपर सवार होकर जाता और अमृतवानको तोड गुलामको बधकर डालता हूं। इस आशापर कि सब मेरी दशापर शोककरें कदाचित् ईश्वरका कोई भक्त कृपालु होकर मेरे लिये प्रार्थना करे तो मैं भी अपनी मनोकामनाको सिद्ध करूं। हे मित्र ! मेरे उद्भ्रान्त होनेका यही कारण है जो मैंने तुझे कह सुनाया। मैं सुनकर आंसू भरलाया और बोला कि हे राजकुमार ! वास्तवमें प्रेमके कारण तुमने अत्यन्त पीर सही मैं ईश्वरकी सौगन्द करता हूं कि जबतक मैं आपकी अभिलाषा पूर्ण न करलूंगा तबतक जंगल पर्वत नदी नालोंमें घूमकर इधर उधर खोजता रहूंगा कि वह तुम्हारी प्यारी कहां है और अपना आशय तुम्हारे कार्यके पीछे सिद्ध करूंगा। मैं यह बचन देकर उस युवासे विदा हुआ और पांच वर्षतक जंगलोंमें धूरि उडाई तथापि कुछ खोज न मिला फिर जी हारकर एक पहाड पर चढ गया और इच्छा की कि यहांसे गिर पडूं और अपने प्राण देदूं। इतनेहीमें मुँहपर पर्दा डाले हुए एक देवदूत आ पहुँचा और कहा कि प्राण मतदे कुछ दिनके पीछे तेरी मनोका-

मना पूर्ण होगी। मैं यह सुनकर चुपचाप इस ओरको चला; न जाने कबतक मेरी अभिलाषा सिद्ध होगी।

जब दूसरा फकीर इस प्रकारसे अपने वृत्तान्तको कह चुका तब आधीरात बीतगई थी। तदुपरान्त बादशाह आजादवख्त चुपचाप महलोंकी ओर चला और वहाँ पहुँचकर प्रभातकालकी उपासनाकी और प्रभात होतेही राजसभामें सिंहासनपर आबैठा और दूतोंको आज्ञा दी कि चार फकीर समाधि स्थानमें एक वृक्षके नीचे बैठे हैं, उनको विनयपूर्वक यहाँपर ले आओ। आज्ञानुसार चोपदार वहाँ गया और देखा कि चारों फकीर हाथ मुँह धो रहेहैं। दूतने उनसे विनयके साथ कहाकि हे महाराज! आप लोगोंको यहांके बादशाहने याद किया है इस कारण मेरे साथ चलिये। चारों फकीर यह सुनकर परस्पर एक दूसरेका मुख देखने लगे और दूतसे कहाकि "बाबा हम तो मन मौजी हैं हमें संसारके बादशाहसे क्या काम है"। दूतने कहाकि महाराज! चलिये उसको दर्शन देनेसे आपकी कौन हानि है। चारों फकीरोंको यह सुनकर देवदूतका उपदेश स्मरण हुआ और राजदूतके साथ होलिये। किलामें बादशाहके निकट पहुँचकर चारों सन्यासियोंने आशीर्वाद दिया कि हे बाबा तुम्हारा भलाहो! बादशाहने बैठनेकी आज्ञा दी और कुशल प्रश्न किया फिर पूछाकि स्थान कहां है? और कहां जानेकी इच्छा है? उन्होंने कहाकि श्रीमान्का मंगल हो और राज्य अटल रहे। हम फकीर बहुत समयसे इसही भांति यात्रा करते फिरतेहैं वही कहावत है कि "जहां संध्या हुई वहीं पड़ रहे" जो कुछ इस असार संसारमें देखा है उसका वर्णन कहां तक करें। बादशाहने समझा बुझाकर धैर्य दिया और भोजन

मँगवाकर अपने सामने उनको खिलाया । निश्चित होने पर कहा कि अब अपना वृत्तान्त मुझे सुनाओ जो कुछ मुझसे होसकेगा उस सेवामें त्रुटि न करूंगा । फकीरोंने उत्तर दिया कि जो कुछ हम पर बीती है, उसका वर्णन करनेकी शक्ति नहीं न आपको उसके श्रवण करनेका अवकाश होगा इस कारण क्षमा कीजिये । तब बादशाहने कहाकि जब आप अपने २ बिछावन पर बैठे हुए रातके समय अपना २ वृत्तान्त कह रहेथे तब मैंभी वहां वर्त्तमान था, दो साधुओंका वृत्तान्त मैंने सुना अब चाहता हूं कि शेष दो भी अपना वृत्तान्त मुझे सुनादें और कुछ दिन सब महात्मा कृपा करके इस दीनकी कुटी पर बिराजमान रहें क्योंकि साधुओंका रहना सदासे मंगलकारी है । बादशाहसे यह सुनतेही चारों महात्मा शिर नीचा करके कांपने लगे और कुछ कहनेकी सामर्थ न रही । उनकी यह दशा देखकर बादशाहने कहा कि इस संसारमें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसपर कोई अपूर्व घटना न हुई हो यद्यपि मैं बादशाह हूं परन्तु मैंने भी ऐसा कौतुक देखा है कि क्या कहूं । पहले मैं उसकोही सुनाताहूं आप लोग कृपा करके सुनें । फकीरोंने कहा कि बहुत अच्छा प्रथम श्रीमान्हीं अपना वृत्तान्त कहैं ।

॥ श्री ॥

अथ तीसरा भाग ।

बादशाह आजादबख्तका वृत्तान्त ।

बादशाहनें इस प्रकार अपना वृतान्त कहना आरंभकिया;—

चौ०—सुनहु सकल वृत्तान्त हमारा । जो कछु देखेउं एहि संसारा ॥
सो सब सत्य निवेदन करिहौं । अति आनंद हिये निज भरिहौं ॥

जब पिता स्वर्गवासी हुए तब मेरी युवा अवस्था थी, उसही समय मैं सिंहासनपर बैठा । रूमका समस्त देश मेरी आज्ञाके अधीनथा । दैवात् एक वर्षके पीछे कोई व्यापारी बदकशाँ देशसे आया और बहुतसा पदार्थ व्यापारका लाया । मैंने उसको बुलाया । वह अनेक देशोंके उत्तम २ पदार्थ लेकर मुझे भेंट देनेके लिये आया । वास्तवमें उसका प्रत्येक पदार्थ बडे मोलका था । उनमेंसे एक लालको मैंने पसंद किया, ऐसा लाल मैंने कभी नहीं देखाथा, तोलमें वह पांचतोले था । उसको लेकर सौदागरको बहुतसा पुरस्कार और उस लालका मोलदिया और मार्गमें व्यापार करनेंका आज्ञापत्र देदिया । कि हमारे सम्पूर्ण देशमें कोई किसी प्रकारका कर न माँगै, और सब प्रकारका आराम .या जाय । इसके मालकी चौकसी रहै और सरकारी कर्म- .ारियोंको उचित है कि वे इसकी हानिको अपनी हानि समझें । वह सौदागर प्रति दिन दरबारमें उपस्थितरहा करताथा और राज्योचित नियमोंका अच्छी भांतिसे जानकार था । उसकी बातें श्रवण करनेके योग्य होती थीं । मैं उस लालको प्रतिदिन अपने धनागारसे मँगवाकर दरबारमें देखा करताथा ।

एक दिन साधारण सभागृहमें बैठाथा, दरबारी और कार्याध्यक्षलोग अपनी २ योग्यतासे बिराजमान थे, प्रत्येक देशके प्रतिनिधि जो धन्यबाद देने आएथे, वर्त्तमानथे। मैंने अपने नियमके अनुसार उस लालको मँगवाया। धनागारका अध्यक्ष उसको लेकर आया मैं हाथमें लेकर उसकी प्रशंसा करने लगा और फरंगदेशके प्रतिनिधिको अवलोकनार्थ दिया, उसने देखकर अत्यन्त प्रशंसाकी फिर तो प्रत्येक व्यक्तिने उस लालको अपने हाथमें लिया और सब एक मुँह होकर कहने लगे कि "हे महाराजाधिराज ! आपही की कृपासे ऐसा रत्न हमें देखनेको मिला और इस प्रकारका मूल्यवान रत्न किसीके यहाँ भी नहीं होगा। उस समय एक प्राचीन मंत्री जो पिता जीके समयसे नियुक्तथा कहने लगा कि यदि अपराध क्षमाहो तो कुछ प्रार्थना करूं मैंने आज्ञादी कि कहो। तब उसने इस प्रकारसे कहा कि हे श्रीमान् महाराजाधिराज ! आप बादशाह हैं बादशाहोंको यह उचित नहीं कि एक पत्थरकी इतनी बडाई करें यद्यपि चालढालमें यह लाल अनोखा मालहै, परन्तु फिर भीतो पत्थरहीहै और इससमय देश २ के प्रतिनिधि दरबारमें वर्तमानहैं अपने २ नगरमें पहुँचकर यहलोग उपहास करेंगे कि अद्भुत बादशाहहै जो दिनभर लालहीलाल पुकारताहै और नित्य उसे दरबारमें मँगाकर देखताहै, न जाने उसने लालको कोई अद्भुत पदार्थ समझाहै ? अतएव जोकोई राजा महाराजा नव्वाब, रईस इस वृतान्तको सुनेगा वह बराबर हँसेगा। हे दया निधान ! नशातपुरके एक सौदागरने लालके बारहदाने जिनमें प्रत्येक दाना सात २ तोलेकाहै पट्टेमें सी कर अपने कुत्तेके गलेमें बांधरक्खा है मुझे सुनतेही क्रोधआया और आज्ञादी कि

इस मंत्रीको बधकरो। बधिक लोगोंने तत्काल उसका हाथपकड़ लिया और चाहाकि जंगलमें लेजाकर बधकरें कि इतनेही में फरंगदेशके बादशाह का प्रतिनिधि हाथजोड़कर सामने आखड़ाहुआ। मैंने पूछाकि तुम्हारा क्या आशयहै? उसने प्रार्थना की कि मैं वजीरके अपराधको जानना चाहताहूं। मैंने कहाकि झूंठबोलने की अपेक्षा और कौनसा अपराध बड़ाहै बिशेष करके बादशाहोंके सामने। प्रतिनिधिने कहा उसका मिथ्या बोलना भी अभी प्रमाणित नहीं कदाचित सत्यही कहताहो। निरपराधी को बधकरना उचित नहीं। मैंने उत्तरदिया कि यह बात किसी भांतिसेभी कल्पनामें नहींआती कि एक सौदागर जो लाभके वास्ते नगर नगर और देश २ में टक्करें मारता फिरता और कौड़ी२ इकट्ठी करताहै; वह बारह दाने लालके "जिनमें से प्रत्येक लाल सात २ तोले भारीहैं" अपने कुत्तेके पट्टेमें लगावै! उसने कहाकि ईश्वरकी मायासे यह कोई विचित्र बात नहीं। बहुधा ऐसे अन्मोलरत्न व्योपारी और फकीरोंके हाथ आजातेहैं वह जहांसे जो कुछ पातेहैं लेआतेहैं। उचित परामर्शतो यह है कि जो मंत्री ऐसाही अपराधीहै तो कारागारमें रक्खाजाय क्योंकि मंत्रीलोग बादशाहके सहायक होतेहैं और यह कर्त्तव्य भले मनुष्योंकी चालढालके विपरीतहै कि वे ऐसी बातोंपर ० बोलें। मंत्री का मिथ्या बोलना अभी प्रमाणित नहीं आ है कि जो वध करनेकी आज्ञा दीजावे और उसकी पुरानी सेवा व सहानुभूतिका ध्यान न किया जावै। हे महाराज! अगले बुद्धिमान राजाओंमें इसही कारणसे कारागारको बनाया कि यदि कोई बादशाह अपने सरदार या और किसी व्यक्ति पर क्रोधकरे तो उसे कारागारमें भिजवादे। कई दिनमें

जब क्रोध जाता रहेगा और वह निरपराध प्रमाणित होगा तो बादशाह निरर्थक हत्याके पापसे बचेगा और ईश्वरके आगे उत्तर देनेमें लज्जित न होगा। मैंने बहुतेरा चाहा कि उसको उत्तर देकर मौनकरूं परन्तु उसने ऐसे समयोचित बचन कहे कि मैं निरुत्तर हुआ और कहा कि अच्छा तुम्हारा कहनाही सही मैं उसको कारागारमेंही भिजवाता हूं यदि एक बर्षके समयमें उसकी बात सच हुई तो वह छोड दिया जायगा और नहीं तो बडी कठोरतासे मारा जायगा। फिर मैंने सेवक लोगोंसे कहा कि मंत्रीको कारागारमें लेजाओ । प्रतिनिधिने यह सुनकर पृथ्वीको चूमा और प्रणाम किया । यह समाचार मंत्रीके घरपर पहुँचतेही हाय २ मचगई और शोक छागया । मंत्रीके अत्यन्त सुन्दरी एक पुत्री १५।१६ बर्षकी थी । उस बुद्धिमतीको उसका पिता बडा प्यार करता था और अपने चौबारेके पीछे एक रंगमहल उसके रहनेको भी बना दिया था, उसके साथमें बहुतसी सखी सहेली रात दिन खेला करती थीं। दैवात् जिस दिन मंत्री कारागारमें गया उस दिन वह लडकी अपनी सहेलियोंमें बैठी हुई गुडियें खेलरही थी, रतजगेकी तइयारी थी ढोलक आदि बाजे बजते थे और कढाई चढरही थी । अचानक उसकी मा सिरनंगा किये बालखोले रोती पीटती नंगे पांव बेटीके घरमें गई और एक दुहत्थड उसके शिरपर मारकर कहने लगी कि "जो तेरे बदले भगवान् अन्धा बेटा देता तो मेरा कलेजा ठंढा होता और उससे बापको सहायता पहुँचती"। कुमारीने कहा कि अन्धा बेटा तुम्हारे किस कामआता, जो कुछ बेटा करता वह मैं भी कर सकती हूं । अम्माने कहा कि खाक पडे तेरे शिरपर बापपर यह विपत्ति पडी कि कहीं

नहीं जाती। आज तेरा पिता कारागारमें गया। बादशाहके सामने कुछ ऐसी बात कही कि उसने अप्रसन्न होकर यह दंड दिया। उसने कहा वह क्या बात थी कुछ मैं भी तो सुनूं। उसकी माता कही कि तेरे पिताने कदाचित यह कहा है कि नशातपुरमें कोई सौदागर है जिसने बारह लाल जो बडे मोलके हैं अपने कुत्तेके गलेमें पहिनाया है बादशाहको विश्वास न हुआ और उसने झूंठ माना। और तेरे पिताको कारागारमें डाला, आजके दिन बेटा होता तो अत्यंत परिश्रम करके इस बातका निश्चय करता कि यह बात सही है और बादशाहको प्रमाण देकर अपने पिताको छुटाता। कुमारीने कहा कि "माता! भाग्यसे लडा नहीं जाता वह चाहे तो क्षणमात्रमें मनुष्यको बिपत्तिसागरमें डुबा दे भगवानका नाम दयानिधान है, वह सदा किसी पर कठिनाई नहीं रखता और रोना धोना ठीक नहीं, न जाने शत्रु लोग बादशाहसे जाकर क्या लगा दें और चुगलखोर चुगली खाँय फिर संभव है कि बादशाह अधिक क्रोधित होजाय मेरी सम्मति है कि बादशाहकी आज्ञाको स्वीकार करके उसके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करो, वही क्रोधित हुआ, है वही दयालु होगा। उस लडकीने ऐसी बुद्धिमानीसे माताको समझाया कि उसको धीरज हुआ" फिर अपने महलमें गई और चुपकी होरही।

रात होने पर मंत्रीकी पुत्रीने अपने एक वृद्ध सेवकको बुला॰ । और उससे विनय की "मैं चाहती हूं कि अम्माका ताना झ . न रहे और पिताजीका उद्धार हो जो तुम मेरे साथ चलो तो मैं नशातपुरकी तइयारी करूं और उस सौदागरको जिसके कुत्तेके गलेमें बारह लाल पडेहैं देखकर जो बनपडै तो उसको साथ लेकर आऊं पहले तो उस पुरुषने अस्वीकार किया

फिर बहुत कहने सुननेसे राजी हुआ तब कुमारीने आज्ञा दी कि तुम चुपके २ यात्राकी तइयारी करो और पदार्थ व्यौपारके योग्य जो बादशाहोंको भेंटमेंभी दिये जासकें मोलले, दास दासी जितने आवश्यक हों साथले परन्तु यह बात किसीको ज्ञात न हो। सेवकने स्वीकार किया और यात्राका सामान करने लगा यह सब असबाब इकट्ठा किया फिर ऊंट और खच्चरों पर लादकर चला और मंत्रीकी पुत्रीभी पुरुष बेष बनाय कर उसके साथ जा मिली। किसीको भी घरमें यह समाचार ज्ञात न हुआ। प्रभात होतेही मंत्रीके घरमें चरचा हुई कि मंत्रीकी पुत्रीका पता नहीं है न जाने कहाँ चलीगई। इसके उपरान्त दुर्नामताके डरसे माताने अपनी बेटीके चले जानेका समाचार गुप्त रक्खा। उधर मंत्रीकी पुत्रीने अपना नाम सौदागर बच्चा धरा और शीघ्रतासे चलती हुई नशातपुरमें जा पहुँची और एक सरायमें ठहरी। प्रभात होतेही रूमके निवासियोंकी नांई वस्त्र पहरकर नगरको देखनेके वास्ते निकली। जब चौकमें पहुंची तब वहां खडी हुई। वहां एक रत्न बणिक्की दूकान देखी जिस पर रत्नोंका ढेर पड़ा हुआथा। इधर उधर दास लोग अच्छे २ कपडे पहने हुए खडे थे। एक व्यक्ति जो उनका सरदार जान पडताथा पचास बर्षकी उमर का था उसका पहिरावा भले पुरुषोंकासाथा कई मित्र पास बैठेहुए थे। परस्पर वार्त्तालाप होरहीथी। मंत्रीकी पुत्री जिसने अपने को सौदागर बच्चा प्रसिद्ध कियाथा उसे देखकर विस्मितहुई और मनमें प्रसन्नहोकर बोली कि परमेश्वर मिथ्या न करे। मेरे पिताने बादशाहसे जिसबातका वर्णनकियाथा क्या आश्चर्यहै कि यह वही हो, हे भगवान! इसका वृत्तान्त मुझको प्रगटकर? अच न

दूसरी ओरदेखातो एक दूकानमें दो पींजरे जिनमें दो आदमी बंदथे लटकतेहुए दिखाईदिये। वह दोनों मनुष्य अत्यंत दुर्बल होरहेथे, शिरके केश और नख बढ़रहेहैं। इस कारण वे गरदन झुकाए बैठे हैं। पींजरोंकी दोनों ओर दो हवशी डटेहुए खड़ेहैं इस छद्मबेशी सौदागरको अचंभा हुआ हाय २ करके दूसरी ओर की दूकानमें देखाकि कालीन बिछेहैं; उसपर हाथीदांतकी एक चौकीपर मखमल का एक गद्दाबिछाहै; उसगद्दीपर एककुत्ता जिसके पट्टेमें लाल सिये हुएहैं, सुवर्णकी जंजीरसे बँधाहुआ बैठाहै और दो सुन्दर सेवक उसकी सुश्रूषा करतेहैं। एक सेवक जड़ाऊ मोरछल लिये मक्खी उड़ाताहै और दूसरा तारकशीका रूमाल हाथमें लिये उसका मुँह पोंछताजाताहै। सौदागरने ध्यानसे देखातो कुत्ते के पट्टेमें लालके बारहदाने सियेहुएपाये परमेश्वरका धन्यबादकिया और विचारा कि अब किस प्रकार से इसको बादशाहके पासलेजाऊं और दिखाकर अपने पिताको छुड़ाऊं। यहतो इसप्रकारकी घबड़ाहटमें था और इधर इसकी सुन्दरता देखकर नगर निवासी चकित और विस्मितथे सब लोग इस प्रकारसे परस्पर बातचीत करतेथे कि आजतक इस रूपरंगका आदमी नहींदेखा। नगरके उस सौदागरने अपने एक सेवकको भेजाकि तू जाकर इस सौदागर बच्चेको अपने पास बुलाला। वह दास आया और नगरके सौदागर का समाचार लायाकि हमारे स्वामी आपको बुलातेहैं कृपा पूर्बक चलिये। सौदागर बच्चातो यह चाहताहीथा बोलाकि बहुत अच्छा जैसेही वह निकट आया नगरके सौदागरने उसको देखा। प्रेम की बरछीसी हियेके पारहोगई। आदर करनेके लिये उठा परन्तु चित्त ठिकाने न था। छद्मबेशी सौदागर बच्चेने समझाकि अब

यह मेरे बशमें आया दोनों परस्पर मिले। उस सौदागरने छद्म-बेशी सौदागरकी बहुत प्रतिष्ठाकी और अपने पास बिठाया फिर कोमल बाणीसे पूछाकि आप अपना नाम धाम बताइये कि कहां से आगमन हुआ और कहाँ जानेकी इच्छाहै। छद्मवेशी सौदागर बच्चा बोला कि मैं रूम नगरका निवासी हूं, परन्तु आजकल अस्तंबोल नगरमें व्यापार करताहूं। मेरे पिता सौदागर हैं। वृद्ध होनेके कारण उनमें चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रही इस कारण मुझे बिदाकियाहै कि व्यापार करना सीखो आज तक मैंने घरसे पांव नहीं निकालाथा, यह पहलीही यात्राहै। जल मार्गसे चलनेका साहस न हुआ इस कारण थल मार्गसे आयाहूं। परन्तु मैंने दूर २ तक आपका नाम सुना और जैसा सुना वैसाही पाया मैं केवल आपसे साक्षात् करनेके लियेही यहाँतक आयाहूं। धन्य है ईश्वरको कि आपके दर्शनपाये मनभाएहुए अब यहाँसे जानेकी इच्छाहै। यह सुनतेही नागरिक सौदागरके ऊपर मानो वज्र टूट पडा और बोला कि हे पुत्र! मुझे ऐसी बातें न सुनाओ कोई दिन दीनकी कुटीको पवित्र करते रहो। भला यह तो बताओ कि तुह्मारा असबाब और नौकर चाकर कहाँ हैं? सौदागर बच्चेने कहाकि मुसाफिरका घर तो सरायही है। सबको छोडकर मैं यहाँपर आयाहूँ। नगरके सौदागरने कहाकि भठियार खानेमें रहना उचित नहीं मेरा इस नगरमें बिश्वासहै और बडा नामहै। सबको यहीं बुलालो मैं एक मकान तुह्मारे लिये खाली करे देताहूं जो कुछ पदार्थ लाएहो उसे मैंभी तो देखलूं। मैं ऐसा उपाय करूंगा कि जिस्से यहीं पर तुह्में बहुतसा लाभ होजाय तब तुमभी प्रसन्न होगे और यात्राके परिश्रमसे बचोगे और तुह्मारे यहाँ रहनेसे मैं भी उपकृत हूंगा।

छद्मवेशी सौदागरने ऊपरके जीसे कहाकि मेरे ठहरनेसे पिताको चिन्ता होगी परन्तु नगरके सौदागरने न माना और अपने सेवकगणको आज्ञादी कि इनका असबाब मंगा कर मकानमें रखवाओ। तब सौदागर बच्चेने अपने एक सेवकको भी उसके सेवकोंके साथ कर दिया कि सब मालको सावधानीसे लद-वाकर अपने साथ लेआओ और आप संध्याकालतक सौदा-गरके साथ बैठा रहा। उस समय नगरके सौदागरने दूकान बढाई और घरको चला तब दोनों दासोंमेंसे एक दासने उस कुत्तेको बगलमे लिया और दूसरेने कुरसी और गलीचा उठा लिया तब उन दासोंने जो हबशी थे उन पींजरोंको मजदूरोंके सिरपर धर दिया और आप शस्त्र बांधे हुए साथ हो लिये। नगरका सौदागर उस सौदागर बच्चेको अपने साथ लिये बातें क-रता हुआ हवेलीमें आया। सौदागर बच्चेने देखा कि एक मकान बहुत बडा धनवानों और राजाओंके योग्यहै, उसमें चांदनी बिछी हुई है, और गद्दीके पास आनंदकी सामग्री एकत्र है। कुत्तेकी चौकीभी वहीं बिछाई गई और सौदागर इस सौदागर बच्चेको लेकर बैठा दोनों ओरसे शराब उडने लगी। जब सरा-बोर हुए तब नगरके सौदागरनें भोजन मांगा और सब सामग्री एकत्र हुई। पहले एक सुवर्णकी थालीमें कुत्तेके लिये खाना भे-[illegible]। [illegible], कुत्तेने चौकीसे उतरकर जितना चाहा उतना खा-[illegible]। और सोनेकी थालीमें पानी पिया और फिर चौकीपर [illegible]। दासोंने वस्त्रसे उसका मुँह पोंछ दिया। तदुपरान्त [illegible]के जूँठे उन पात्रोंको पींजरोंके निकट लेगये और सौदागरसे ताली माँगकर पींजरोंका ताला खोला फिर उन दोनों मनुष्यों-को बाहर निकालकर सोंटोंसे पीटा और कुत्तेकी जूंठन उन्हें

खिलाई और वही पानी पिलाया फिर पींजरेमें घुसायतालाबंद किया और तालियें सौदागरको देदीं। इस कार्यके हो चुकनेपर सौदागरने भोजन करनेका बिचार किया। सौदागर बच्चेको यह कार्य अच्छा न लगा, इस कारणसे उसने भोजनको छुआतक नहीं। सौदागरने बहुतेरा कहा परन्तु उसने अस्वीकारही किया। नगरके सौदागरने कारण पूछा तब सौदागर बच्चेने कहा कि तुह्मारी यह करतूत मुझको नहीं भाई। कारण कि मनुष्यको ईश्वरने अपनी कृत्यमें सर्व श्रेष्ठ बनाया है और कुत्ता घृणित जीव है। अतएव ईश्वरके दो प्राणियोंको कुत्तेकी जूंठन खिलाना। किस जातिमें उचित समझा गया है? केवल इतनाही बस नहीं समझते कि वह तुह्मारे यहां कैद हैं। नहीं तो तुम और वह बराबरहो। मैं नहीं कह सक्ता कि तुम मुसलमान होकर किस कारणसे इस कुत्तेकी पूजा करते हो। इस कारण मैं तुह्मारे दिये हुए इस भोजनको अच्छा नहीं समझता। नगरके सौदागरने कहा कि तुह्मारे कहनेको मैं भली भांतिसे समझताहूं और इसही लिये बदनामहूं। इस नगरके निवासियोंने मेरा नाम श्वानपूजक सौदागर रक्खा है और इसही नामसे मुझको पुकारते हैं तथा इसही नामसे मुझको विख्यात किया है। तब सौदागर बच्चेने कहा कि यदि आप सच्चे मुसलमान हैं तो किस कारण ऐसी करतूत करके अपनेको दुर्नाम किया है। सौदागरने कहा कि हेपुत्र! मेरा नामभी खोटा है और इस नगरमें दूना राजकरभी इसही कारणसे देताहूं कि मेरा भेद किसीपर प्रगट न हो। मेरे अद्भुत वृत्तान्तको जो कोई सुने उसे क्रोध और शोकके अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त न हो। इस कारणसे तुमभी मुझे क्षमा करो, क्योंकि मुझमें कहनेकी सामर्थ नहीं और तु-

मकोभी श्रवण करनेका अवकाश नहीं। सौदागर बच्चेने अपने मनमें विचार किया कि मुझे अपने कामसे काम है, क्या आवश्यकता है जो इसको वृत्तान्त कहनेपर बिवश करूं यह सोचकर कहा अच्छा जाने दीजिये कहनेके योग्य नहीं तो न कहिये यह कहकर भोजनमें हाथ डाला और ग्रास उठाकर खाने लगा। दो मास तक सौदागर बच्चेने इस सावधानी और बुद्धिमानीसे उस सौदागरके साथ निर्वाह किया कि किसीको भी इसके पुरुष होनेमें सन्देह नहीं हुआ उस सौदागरसे यहांतक प्रेम बढाया कि वह एक पलके लिये इसको आँख ओट नहीं करता था एक दिन दोनों साथ बैठेथे कि अचानक सौदागर बच्चेने रोना आरंभ किया, नगरका सौदागर यह देखकर घबडाया और वस्त्रसे उसके आँसू पोंछने लगा और रोनेका कारण पूछा सौदागर बच्चेने कहा कि क्या कहूं! यदि आपसे साक्षात् न हुआ होता और यह कृपा जो आप मेरे पर रखते हैं न करते तो भला था। मेरे ऊपर इस समय दो आपत्ति आपडी है। न तुह्मारी सेवासे अलग होनेको जी चाहता है और न यहां रहनेका बनाव हो सकता है अब निश्चयही जाना होगा परन्तु आपके अदर्शनसे जीवनकी आशा दिखाई नहीं देती। यह सुनकर सौदागर रोने लगा और हिचकी बँधगई और कहने लगा कि हे पुत्र! सी जलदी अपने वृद्ध सेवकसे अप्रसन्न होगये कि निराश किये ते हो, जानेकी इच्छाजीसे दूरकरो, जबतक मैं जीवित रहूं आँखोंके सामने रहो तुह्मारे वियोगसे मैं जीवित नहीं रहूंगा और विना मृत्युके मर जाऊंगा। इस फारिशदेशका जल वायु बहुत अच्छा है उचित यह है कि एक आदमी विश्वासपात्र भेजकर अपने पिताजीको असबाब सहित यहीं बुलालो

जो कुछ सवारी इत्यादि दरकार हो मंगाये देता हूं, जब सब लोग यहांपर आजाँय तो प्रसन्नता सहित कारबार किया करो। मैंने इस अवस्थाके समयमें बहुतसी कठिनाई उठाई हैं और देश२ फिराहूं अब बूढा होगया बेटा कोई है नहीं तुझे अपने पुत्रसे अधिक समझताहूं और अपना सत्त्वाधिकारी और मुखतार समझताहूं मेरे कारबारसे भी सावधान रहो, जबतक जीवितहूं एक टुकडा खानेको दिये जाइयो और फिर मेरी समस्त संपत्तिले लेना। यह सुनकर सौदागर बच्चेने उत्तर दिया कि निःसन्देह आपने पितासेभी अधिक मेरा लालन पालन किया कि जिस्से मैं अपने माबापको भूल गया। परन्तु मैंने अपने पितासे एक वर्षकी बिदाली थी अब अगर देर लगाऊंगा तो वह इस बुढापेमें रोते२मर जाँयगे अतएव पिताकी सम्मति और ईश्वरकी इच्छा है। उनकी अप्रसन्नतासे मैं डरता हूं कि कदाचित् वह क्रोधित हों और मेरा लोक परलोक बिगडे अब आपको उचित है कि मुझे आज्ञा दीजिये जिस्से मैं पिताका आज्ञाकारी रहूं जब तक मैं जीवित रहूंगा आपका धन्यबाद किया करूंगा। मैं सदा अपने देशमें आपको स्मरण रक्खूंगा। भगवान मालिक है यदि फिर कोई ऐसा कारण हो तो अवश्य चरणसरोजका दर्शन करूंगा। सौदागर बच्चेने ऐसी मीठी २ बातें सौदागरको सुनाई कि वह विवश होकर शिर पकडे हुए रहा। उस पर अत्यंत अनुरागी होनेके कारण वह कहने लगा कि अच्छा जो तुम नहीं रहते तो मैंही तुम्हारे साथ चलता हूं। मैं तुमको अपने प्राणकी बराबर समझता हूं। यदि प्राण चले जांयगे तो रीता शरीर किस काम आवैगा? यदि तुमारी इच्छा हो तो चलो और मुझको भी ले चलो सौदागर बच्चेसे यह कहकर वह अपनी यात्राकी तइयारी करने

लगा और मुनीम लोगोंको आज्ञा दी कि शीघ्रतासे सब सामान करो। जब सौदागरकी यात्राका समाचार प्रसिद्धहुआ तो और सौदागरोंनेभी यात्राकी तइयारी की। इधर उस नगर के सौदागरने बहुतसा धन, बहुतसे दास, अनेक लाल जवाहर साथ लिये और नगरके बाहर डेरे गड़वाकर उनमें प्रवेश किया जितने सौदागर थे अपनी २ बिसातके अनुसार सौदागरी माल लेकर साथ हुए, छोटीसी एक सेना होगई। एक दिन योगनीको पीठदेकर सौदागरने वहांसे गमनकिया। सहस्रों ऊटोंपर सलीते और सन्दूक खच्चरोंपर लादकर पाँचसौ बड़े २ बलवान दास पाँचौं अस्त्र शस्त्र बांधे अनेक प्रकारके घोड़ोंपर चढे हुए चलने लगे। सबके पीछे नगरका वह सौदागर और सौदागरबच्चा पालकीपर चढे हुए चले और एक सिंहासन बुगदादी ऊँटपर कसा गया जिस पर वह कुत्ता पाँव पसारकर बैठा। फिर उन दोनों कैदियोंके पींजरे एक ऊंटके ऊपर लटकाये गये जिस पडावपर पहुँचतेथे, वहींपर भोजनादिका प्रबन्ध होजाताथा और सब लोग मदिरापान करतेथे। नागरिक सौदागरके साथ होनेसे छद्मवेशी सौदागर अत्यंत प्रसन्नथा और बराबर ईश्वरका धन्यवाद करताथा इसप्रकार कुशल मंगलके साथ कुस्तुन्तुनिया नगरके निकट आपहुँचे। नगरके बाहर डेरेडाले ...दागर बच्चेने कहाकि हे महाशय! यदि बिदादोतो मैं जाकर ...पने माता पिताको देखूं और आपके लिये स्थानादिका प्रबन्धकरूं फिर जब इच्छाहो नगरमें प्रवेश कीजिये। नगरके सौदागरने कहाकि मैं तुम्हारी प्रीतिसे यहांतक आयाहूं, अच्छा जल्दी उनसे मिलकर मेरेपास आओ और अपने निकटही मेरे ठहरनेका प्रबन्ध करादो। छद्मवेशी सौदागर बिदाहोकर अपने

घर आया । उसको देखकर वजीरके सब घरवाले बिस्मित हुए कि यह कौन मनुष्य घरमें चलाआया । तब वह सौदागर बच्चा अर्थात् मंत्रीकी पुत्री माताके पांवपर गिरी और रोकर बोलीकि मैं तुम्हारी जाई जनीहूं । यह सुनतेही मंत्रीकी स्त्री उसको दुर्वचन कहनेलगी कि अरी अभागिन ! तूतो बड़ीही दुष्टा निकली तैनें अपना मुँह कालाकिया और परिवारको कलंक लगाया । हमतो तुझे रो पीटकर संतोष करचुकीथी । तब मंत्रीकी पुत्रीने सिरसे पगड़ी उतारकर फेंकदी और बोली कि हे माता ! मैं बुरी जगह नहींगई न कुछकिया परन्तु तुम्हारी आज्ञाके अनुसार पिताजीको कारागारसे छुटानेकेलिये यह युक्तिकी । धन्यहै भगवानको ! कि तुम्हारे आशीर्बाद और अनुग्रहसे कार्य पूर्ण करके आईहूं कि नशातपुरसे उस सौदागरको कुत्तेकेसाथ जिसके गलेमें वे लाल पड़ेहैं अपने साथलेआई और तुम्हारी प्रतिष्ठाको किसी भांतिका कलंक नहीं लगाया । मर्दाने रूपसे यह सब कार्य कियाहै अब दो एकदिनका कार्य और शेषहै, उसको करके पिताजीको कारागारसे छुड़ातीहूं । यदि आज्ञाहोतो फिर जाऊं और एकदिन बाहर रहकर फिर सेवामें आऊं । माताने जब भलीभांतिसे जानलियाकि मेरी पुत्रीने मरदोंका काम किया और अपनेको कलंकसे बचायाहै तब ईश्वरका धन्यबाद किया और प्रसन्नहोकर बेटीको छातीसे लगालिया, मुँहचूमा वारीगई, आशीर्वाद देकर बिदाकिया । मंत्रीकी पुत्री पुनर्वार मर्दाना वेष बनाय नागरिक सौदागरके पास चली । वहां वह इसके विना तड़परहाथा और बेवश होकर नगरकी ओर चला अचानक नगरके निकटही दोनोंसे मिलाप हुआ, सौदागर ने देखतेही कहाकि मुझबूढ़ेको अकेला छोड़कर कहाँ गयेथे ? सौ-

दागर बच्चेने कहाकिमैं तो आपसे आज्ञालेकर अपने घरगयाथा। तथापि वहाँ अधिक बिलंब तक नहीं रहसका और सेवामें आया। फिर नगरके किनारे एक फले फूले बागमें सौदागरने डेरा किया और दोनों मित्र भोजनपान करनेमें दत्त चित्त हुए। संध्या समय होनेपर प्रकृतिका कौतुक देखनेके लिये डेरेसे बाहर निकलकर दोनों कुर्सियोंपर बैठे। इसही अवसरमें बादशाहका एक दूत उधरसे आनिकला और सौदागरके इस राजसी ठाटको देख भौचक हुआ और बिचारने लगा कि कदाचित् यह किसी बादशाहका प्रतिनिधि आया है। वह यह सोचता हुआ कौतुक देख रहाथा कि नागरिक सौदागरके एक कर्मचारीने उसको बुलाया और पूछा कि आप कौन हैं? उसने कहा कि मैं राजदूतहूं। कर्मचारीने सौदागरसे उसका समाचार कहा सौदागरने कहाकि राजदूतसे कहो कि हम यात्री हैं यदि जी चाहे तो आओ बैठो, आज्ञा करो सब कुछ प्रस्तुत हैं। राजदूतने जब यह समाचार सुना तो उसकी ओरफिरा और उस कर्मचारीके साथ सौदागरके पास आया। उसने सौदागरको प्रणाम किया और उसका ठाट देखकर विस्मित होगया । कुत्तेकी अचिन्तनीय प्रतिष्ठा देखकर उसको बडा अचंभा हुआ।सौदागरने उसे बिठलाकर कुशल प्रश्न किया और भोजन कराया । फिर दामाँगी तब सौदागरने रेशमी वस्त्रोंके कई थाल और कुछ देकर उसको बिदा किया प्रभात होनेपर जब बादशाहकी सभामें गया तब सभासदोंसे सौदागरका वर्णन किया। धीरे२ मुझपर समाचार पहुँचा औरमैंने उस दूतको बुलाकर वृत्तान्त पूछा उसने सब ब्योरा कह सुनाया। आदमियोंके पींजरेमें बंदी होने और कुत्तेकी प्रतिष्ठाका वृत्तान्त सुनकर मुझको क्रोध आया और

बधिक लोगोंको आज्ञा दी कि उस दुष्ट सौदागरका शिर काट-कर मेरे पास लेआओ।ईश्वरेच्छासे फरंगदेशका वह प्रतिनिधि भी सभामें वर्तमान था, मेरी आज्ञाको सुनकर वह मुसकुराया तब मेरा क्रोध बढा और कहा कि "रे असभ्य ! बादशाहोंके सन्मुख इस प्रकार असभ्यतासे हँसना उचित नहीं इसकी अपेक्षा रोना बहुत अच्छाहै। उसने विनयकी कि इस समय कई बातोंका ध्यान आगया। प्रथम तो यह कि मंत्रीका कथन सत्य है, अब कारागारसे उसको छुटकारा मिलेगा। दूसरे बादशाह सलामत हत्यासे बचे, तीसरी बात यह कि श्रीमान्नें बिना कारण निरपराध उस सौदागरको बध करनेकी आज्ञादेदी। इन बातोंका बिचार करके मैं अचंभे में आया कि बिना सोचे बिचारे आप प्रत्येक को वध करनेंकी आज्ञादे बैठते हैं। भगवान जाने कि वास्तवमें उस सौदागरका क्या वृतान्तहै उसे यहाँ पर बुलाइये और उसका वृतान्त पूछिये यदि अपराधी ठहरे तो जो इच्छा हो दंड दीजिये। जब प्रतिनिधिने इस प्रकारसे समझाया तो मुझे भी मंत्रीका कहना याद आया और आज्ञादी कि शीघ्रही उस सौदागरको उसके साथियों सहित और कुत्ते व पींजरोंको साथ ले आओ। दूत शीघ्र उसके बुलानेको दौडे और क्षणभरमें सबको ले आये। मैंने सामने बुलाया। वह दोनों अच्छे वस्त्र पहरे हुए आये। सौदागर बच्चेकी सुन्दरताई देखनेसे सब लोग विस्मित हुए। सौदागरने एक थाली रत्नादिसे भरी हुई। मुझे भेंट की सौदागर बच्चेने उस थालीको अपने हाथसे मेरे सिंहासनके पास रक्खा और पश्चात् दोनोंने पृथ्वीको चूमा। सौदागर बच्चा इस उत्तमतासे बोलता था जैसे श्यामापक्षी बोलता हो मैंने उन दोनोंकी योग्यताको अत्युत्तम समझा परन्तु कुत्यका

बिचारकर सौदागरसे कहाकि " अरे पापी ! तैंने यह क्या जाल फैलाया है ? और अपने मार्गमें कांटा बोया है ! तेरीक्या जाति है, तू किसकी पूजा करता है, तेरा नाम क्या है, उसने कहाकि श्रीमान्की सम्पत्ति बढती रहे, मैं पक्का मुसलमान हूं, ईश्वर एक है और उसका कोई सहायक नहीं। मैं पांचों समयकी उपासना करताहूं। और व्रतभी करताहूं, बडी २ यात्राभी कर आयाहूं, मालके ऊपर सरकारको कर देता हूं प्रति दिन मुसलमानोंको भोजन कराता हूं। परन्तु प्रगटमें जो यह सम्पूर्ण दोष मुझमें भरे हैं, जिनके कारण श्रीमान् अप्रसन्न हुए हैं और संसारमें दुर्नामता पा रहाहूं, इसका कारण मैं प्रगट नहीं कर सकता। श्वानपूजक कहलाताहूं और इसके लिये बिशेष राजको कर देता हूं, इन सब आपत्तियोंको स्वीकार किया है, परन्तु मनका भेद किसीसे नहीं कहता। सौदागरके इस प्रकार टालनेसे मेरा क्रोध औरभी दूनाहुआ और उससे कहाकि तू मुझे बातोंमें बहलाता है। मैं नहीं माननेका जब तक इस अनीतिके कार्यका पूरा २ बर्णन नहीं करेगा जो मेरे मनको निश्चय हो। फिर तू इस प्राणसे नहीं बचेगा इस अपराधके दंडमें तेरा पेट फडवाया जायगा जिस्सेफिर कोई ऐसा कार्य न करे। सौदागरने कहा कि हे बादशाह ! मेरा अपराध क्षमा करो। मेरी सम्पत्ति जो अनन्त है राज्यमें ले लीये मुझे और इस मेरे पुत्रको अपने सिंहासनके ऊपर लेहारी करके छोड दीजिये। तब मैंने अत्यंत क्रोधमें आनकर कहा कि हे मूर्ख ! मुझे अपनी सम्पत्तिका लोभ दिखाता है सत्य बोलनेके अतिरिक्त तेरा निस्तार नहीं होसकता यह सुनतेही सौदागरकी आँखोंसे आँसू टपकने लगे और सौदागर बच्चेकी ओर देखकर हाय शब्द किया और बोला कि मैं तो

बादशाहके सामने अपराधी ठहरा, मारा जाऊंगा अब क्या करूं
और तुझे किसको सौंपूं? मैंने डाटकर कहा कि अरे मक्कार
कपटी! टालाटूली बहुत होचुकी अब जो कुछ कहना है जल्दी
कह। तब उस पुरुषने आगे बढकर सिंहासनके पास आय
उसके पायेको चूमलिया और इसप्रकारसे कहने लगा कि हे
महाराज! जो मेरे लिये बधकी आज्ञा न होती तो मैं किसी
प्रकार अपना वृत्तान्त न कहता परन्तु प्राण सबसे अधिक प्यारा
होता है, कोई स्वयं कुएमें नहीं गिरता अतएव प्राणकी रक्षा
उचित है और उसका देदेना ईश्वरकी आज्ञाके विरुद्ध है अस्तु
जो यही इच्छा श्रीमान्‌की है तो मुझ दीनका वृतान्त सुनिये;–

स्वानपूजक सौदागरका वृतान्त।

पहले तो यह आज्ञा हो कि मैं वह दोनों पींजरे जिनमें वह
दोनों मनुष्य बंद हैं यहां लाकर रक्खूँ; मैं अपना वृतान्त कह-
ताहूं यदि कहीं मिथ्या समझाजाय तो उनसे पूछकर मुझे मि-
थ्यावादी ठहराइये और न्याय कीजिये। उसकी बात मुझे भली
लगी। पींजरेसे निकलवाय उन दोनोंको एक ओर बिठलाया।
तब उस सौदागरने कहा कि हे महाराजाधिराज! यह पुरुष जो
दक्षिण ओर बैठा है इस दीनका बडा भाई और बांई ओरका
मझला भाई है। मैं इन दोनोंसे छोटा हूं। मेरा बाप पारस्व दे-
शमें एक बडा भारी सौदागर था। मैं जब चौदह वर्षका था
पिता परलोकवासी हुए, जब क्रिया कर्मसे छुटकारा पाया तब
एक दिन इन दोनों भाइयोंने मुझसे कहा कि पिताकी सम्प-
त्ति को बांटलीजिये. जिसका जी चाहे वह कार्य करे। मैंने सुन
कर कहाकि हे मित्रों! हे भाइयो! यह क्या बातहै मैंतो तुम्हारा

दासहूँ, भाईचारेका दावा नहींरखता। एक पिता परलोक गये। अब तुम दोनों उनके स्थानापन्न हो। मैं तो केवल नामको चाहताहूं जिसमें जीवनभर निर्वाह होजाय। मुझे हिस्से उस्से से क्या काम है। तुह्मारे आगेके जूँठेसे अपना पेट भरलूंगा और तुह्मारे पास रहूंगा। मैं लडकाहूं कुछ पढा लिखा भी नहीं मुझसे क्या होसकता है, अभी तुम मुझे शिक्षा दो। यह सुनकर इन्होंने उत्तर दिया कि तू अपने साथ हमें भी निर्धन और दरिद्र बनाया चाहता है। मैं चुपका हो एक कोनेमें जाकर रोने लगा फिर जीको समझाया कि भाई बडे दरजेके हैं कदाचित मेरी शिक्षाके लिये यह रूखापन करते हैं कि कुछ सीख साख जाय। यही बिचारते २ मैं सो गया प्रभात होनेपर काजीजीका एक चपरासी आया और मुझे उनके पास लेगया। वहां अपने दोनों भाइयोंको भी बैठा हुआ पाया। काजीजीने मुझसे कहा कि अपने बापका भाग क्यों नहीं बांट बूँट देता मैंने जो घरमें कहा था वही प्रार्थना उनसेकी। तब इन दोनोंने कहा कि जो तू यह बात कहता है तो पक्का लेख लिख दे कि बापकी धन सम्पत्तिसे मेरा कुछ संबंध नहीं न उसपर मेरा अधिकार है। तब भी मैं यही समझा कि यह दोनों मेरे बडे हैं, मेरी भलाईकोही कहते हैं कि बापकी संपत्तिका यह अपव्यय न करे। उनकी आज्ञानुसार पिताकी संपत्तिका एक त्यागपत्र लिख दिया काजीने उसपर छाप लगादी। फिर मैं घरपर आया। दूसरे दिन वह मुझसे कहने लगे कि हे भाई! यह मकान जिसमें तू रहता है हमें चाहिये, तू अपने रहनेके लिये कोई दूसरा स्थान ढूँढले। उनकी आज्ञामान विवश होकर मैंने उठ जानेकी इच्छाकी। हे महाराज! जब पिताजी जीवित थे और यात्रासे आया करते थे तो

देश २ की उत्तम २ वस्तु मुझे लाकर दिया करते थे, इस कारण कि छोटे पुत्रको प्रत्येक व्यक्ति अधिक प्यार करता है, मैंने उनको बेच बाचकर थोडीसी सम्पत्ति निजकी एकत्र करली थी उससे व्यौपार किया करता था। एकबार पिताजी तुर्किस्तानसे एक दासी मेरे लिये लाये और एक बार एक घोडी जो उत्तम थी मुझे दी तथा एक बछेडा नाकन्द जो कि होनहार था! वह भी मुझे दिया मैं अपने हाथसे दाना घास उसको खिलाता था परन्तु वह पोष नहीं मानता था इस कारण उसे बेच दिया इन्हीं वस्तुओंको बेचनेसे जो सम्पत्ति एकत्र हुई उसहीसे एक हवेली मोललेली और उसमें जा रहा। यह कुत्ताभी मेरे साथ चला आया। आवश्यकीय वस्तु बाजारसे मोललेली और दो दास भी सेवा करनेके लिये मोल लिये। और शेष धनसे एक दूकान बजाजीकी करके अपना निर्वाह करने लगा। मैं अपने भाग्यपर प्रसन्न था। यद्यपि भाइयोंने पिताकी संपत्तिसे वंचित किया परन्तु ईश्वरके दयालु होनेसे तीन वर्षके समयमेंही ऐसी दूकान जमी कि हाटमें मेरा विश्वास होगया। राजा या बादशाहके यहां जिस उत्तम वस्त्रकी आवश्यकता होती वह मेरेही यहांसे जाता इस प्रकारसे बहुत रुपये कमाये और उत्तमतासे मैं अपना निर्वाह करने लगा बारम्बार ईश्वरका धन्यवाद किया करता और आनंदसे रहता था कभी कभी यह कवित्त भी पढ दिया करता—;

कवित्त—रूठै क्यो न राजा वातें कछु नाहिं काजा एक तूही महाराजा और कौन को सराहिये। रूठे क्यों न भाई वाते कछू न बसाई एक तूही है सहाई और कौन पास जाइये॥ रूठे क्यो न मित्र शत्रु आठो

याम एक मुझ रावरे चरणके नेहको निवाहिये। संसार रूठा एक तू है अनूठा सब चूमेंगे अँगूठा एक तू न रूठा चाहिये॥

एक दिन शुक्रवारको मैं अपने घर बैठाथा और मेरा एक दास सौदा सुलफ लेनेके लिये बाजारको गयाथा, कुछ देर पीछे वह रोता हुआ आया। मैंने कहा क्या हुआ, अप्रसन्न होकर बोलाकि तुम्हें क्या कामहै तुमतो प्रसन्नरहो परन्तु परलोकमें क्या उत्तर दोगे। मैंने कहाकि बतातो ऐसी कौन विपत्ति तुझपर आई? उसने कहाकि बड़े शोककी बातहै कि तुम्हारे बड़े भाइयोंको चौकके बाजारमें एक यहूदीने बांधलियाहै और ऊपरसेबेंत मारताहै और कहताहैकि जो मेरे रुपये न दोगे तो मारही डालूंगा तुम्हारे मारनेसे मुझे पुण्यहोगा। अब तुम्हारे भाइयोंकी तो यह दशा हुई और तुम निश्चिन्त बैठेहो। यह बात अच्छी नहींहै लोग क्या कहेंगे। दाससे यह बात सुनतेही हृदय उमड़ आया और शीघ्रतासे बाजारकी ओर चला, दासोंको आज्ञादी कि अभी रुपये लाओ। जैसेही वहांगया तो दासका कहा हुआ सत्यदेखा! भाइयोंपर मार पड़रहीहै। मैंनेकहाकि जरा ठहरजाओ और बतलाओकि इन्होंने ऐसा कौनसा अपराध कियाहै जो आज शुक्रवारके दिन इनको माररहाहै उसने उत्तरदिया कि जो इनका पक्षकरतेहो तो इनपर जो रुपये मेरे चाहिये वह तुम देदो ःहीं तोअपने घरका मार्गलो। मैंने कहाकि रुपयोंका लेख दिखा मैं अभी रुपये देताहूँ, उसने कहाकि लेखतो मैं न्यायाधीशको दे आयाहूँ, तुम चलकर देखलो और मेरे हजार रुपये देदो। इसही अवसरमें मेरेदास बहुतसा रुपया लेआये मैंने एक हजार रुपया उस यहूदीको देदिया और भाइयोंको छुड़ाया इनकीयह सूरत होगई कि शरीरसे नंगे और भूखे प्यासेथे घरमें लेआया

स्नान कराय नये वस्त्र पहराये और भोजन कराया। इन लोगोंसे इतनाभी न पूछाकि बापकी इतनी सम्पत्तिको तुमने क्याकिया? इसलियेकि कदाचित लजावें। हे महाराज! आप इनसे पूछली- जिये यदि मैं कुछभी असत्य कहताहूं। अस्तु जब इसप्रकारसे कई दिनमें चंगेहुये तब एक दिन मैंने कहाकि हे भाइयों! इस नगर में तुम्हारा विश्वास जातारहाहै, उचित यहहै कि कुछदिन तक यात्राकरो, यह सुनकर वह चुपहोरहे, मैंने जानाकि ये राजीहैं; यात्राकी तइयारी करनेलगा और २०००० रुपयेकी सामग्री उनको मोललेकरदी। व्यौपारियों का एक समूह बुखारे को जाताथा मैंने वह सम्पूर्ण सामग्री अपने भाइयोंकेसाथ उन- को सौंपदी। एक सालके पीछे वह समूह लौट आया परन्तु भाइयोंका कुछभी समाचार न पाया। पश्चात् एकमित्रसे सौग- न्द देकर पूछा तब उसने कहाकि बुखारेमें पहुँचनेपर एकने तो अपनी समस्त सम्पत्ति जुएमें हारदी और अब वह वहींपर झाड़ी बुहारी दिया करताहै तथा ज्वारीलोग जो एकत्रहोतेहैं उनकी सेवाकरताहै, वह इसको पुण्यकी रीतिपर कुछ देदेतेहैं, वहां वह दिनरात टहलुआ बना पड़ा रहताहै। दूसरेने एक मे- हतरानी के प्रेममें अपनी सारी सम्पत्ति खो दी, अब वहभी एक सरायमें पड़ा रहताहै। व्यौपारीलोग तुम्हारे लज्जित होनेके कारणसे यह वृतान्त नहीं कहतेहैं यह वृतान्त सुनकरमैं अत्यंत शोकि- तहुआ। चिन्ताके मारे भूँख प्यास जातीरही। बुखारे की यात्राका विचाराकिया। जब वहां पहुँचातो दोनोंको खोज खाजकर अ- पने निवास स्थानमें लाया। और स्नान कराकर नये वस्त्र पहराये और कुछभी उनसे न कहा फिर इन लोगोंके लिये सौदागरीका माल खरीदा और घर चलनेकी इच्छा करी। जब नेशापुरके

धोरे आया तब माल असबाबके साथ एक गांवमें दोनों भाइ-योंको छोडकर मैं इस कारणसे घरमें गया कि मेरे आनेका समाचार किसीपर प्रगट न हो। दो दिनके पीछे यह प्रगट किया कि मेरे भाई यात्रासे आएहैं, कल उनको लानेके लिये जाऊंगा। प्रभातको चाहा कि चलूं तब एक भला आदमी उसही गांवका मेरे पास आया। मैं उसकी पुकार सुनकर बाहर निकला उसे रोता देखकर पूछा कि भाई तू क्यों रोताहै? उसने कहा कि तुह्मारे भाइयोंके कारण हमारे घर भी लुटगये यदि तुम उनको वहाँपर न छोडते तो अच्छा था। मैंने कहा कि सब वृत्तान्त कहो उसने कहा कि रातको डांका आया और उनका माल लूट लाटकर फिर हमारे घर लूट लिये मैंने शोकके साथ पूछा कि अब वह दोनों कहाँ हैं उसने उत्तर दिया कि नगरके बाहर टूटी फूटी अवस्थामें पडेहैं। मैं तत्काल कपडोंके दो जोडे साथ लेकर गया और पहनाकर उनको घर ले आया लोग उनसे मिलनेको आतेथे परन्तु यह मारे लाजके घरसे बाहर नहीं निकलतेथे। इस प्रकारसे तीन मास व्यतीत हुए तब मैंने अपने जीमें विचार किया कि यह यहाँपर कबतलक छुबकेहुए बैठे रहेंगे। यदि होसके तो इनको अपने साथ यात्रामें ले जाऊं। ह सोचकर भाइयोंसे कहा कि यदि आज्ञा हो तो यह दास ।:के साथ चले वह चुप होरहे। मैं फिर सौदागरीका सामान ४। करके चला और उनको साथ लिया। जिस समय माल-का कर देकर असबाब नावपर चढाया, नाव चलदी। यह कुत्ता किनारेपर सो रहाथा। जब जागा तो जहाजको बीच धारमें देखा। घबडाकर भोंका और नदीमें कूदकर पैरने लगा। मैंने जहाजसे एक डोंगा दौडाया और कुत्तेको अपने पास बुला

लिया। मँझले भाईसाहब! मेरी एक दासीपर मोहित होगये एक दिन बडे भाईसे बोले कि छोटे भाईके इस उपकारसे हम लोग बहुतही दब गएहैं और लज्जितहैं इसका क्या उपाय करें बडेने उत्तर दिया कि एक युक्ति सोचीहै, यदि होजाय तो बडी बातहै। फिर दोनोंने परामर्श करके निश्चय किया कि इसे मारडालें और समस्त धन सम्पत्तिको अधिकारमें करें। एक दिन मैं जहाजकी एक कोठरीमें सो रहाथा और दासी पाँव दाब रहीथी इतनेहीमें मझले भाईने आकरमुझे जगायामैं तत्कालहड़बड़ाकरबाहर निकला यह कुत्ताभी मेरे साथ होलियामैं जाकर देखता क्या हूं कि बडा भाई जहाजकी पाटपर हाथ टेके हुए नदीका कौतुक देख रहा है। मैंने पास जाकर कहा कि क्या देखते हो कुशल तो है? वह बोलाकि अद्भुत कौतुक होरहा है। जल मनुष्य मोतियोंकी दीप और मूंगेके वृक्ष हाथमें लिये हुए नाचतेहैं। यदि कोई दूसरा ऐसी अद्भुत बात कहता तो मैं भी न मानता बडे भाईके कहनेपर विश्वास किया और देखनेको शिर झुकाया। बहुतेरा मैंने देखा पर कुछ दिखाई न दिया और वह यही कहता रहा कि अब देखो, परन्तु कुछ हो तो देखूं इतनेहीमें मुझे असावधान पाकर मझले भाईने पीछेसे आनकर ऐसा धक्का दिया कि मैं तत्काल पानीमें गिरपडा तब वह दोनों रोने लगे और पुकारेकि दौडियो हमारा भाई नदीमें गिरकर डूब गया इतनेमें नाव बढ गई और नदीकी लहर मुझे कहींको ले गई गोतेपर गोते खाताथा और तरंगोंके साथ बहा चला जाताथा। फिर थकगया कुछ वश नहीं चलताथा एक साथ किसी वस्तुपर हाथ पडा आंख खोलकर देखा तो इसी कुत्तेकोसाथ पाया। मैं जानता हूं कि मेरे गिरनेके समय यहभी कूदा और पैरता हुआमेरे साथ

लिपटा चला आताथा। मैंने उसकी पूँछ पकडली भगवानने उसको मेरे जीवनका सहारा किया सात दिन और सात रात यही दशा रही, आठवें दिन किनारेपर पहुंचा सामर्थका नाम न था। लेटे २ करवटें बदलकर जैसे तैसे अपनेको स्थलमें पहुंचाया। एक दिन अचेत पडा रहा। दूसरे दिन कुत्तेका शब्द कानमें पडा तब चैतन्य हुआ भगवानका धन्यबाद किया इधर उधर देखने लगा। दूरसे नगरके चिन्ह देखे परन्तु सामर्थ नहीं देखी कि वहां चलनेकी इच्छा करूं। इच्छा न रहनेपरभी एक२ पग चला और संध्या होनेपर एक कोसभरका मार्ग काटा। बीचमें एक पहाड मिला, रातको वहां पडरहा प्रभातको नगरमें पहुंचा जब बाजारमें गया नानबाई और हलवाईकी दुकाने दिखाई दीं मन भटकने लगा परन्तु पैसा तो पास नहींथा जो खरीद करता और सेंतमें मांगा नहीं जाता किसी प्रकारसे जी को समझाता हुआ चला जाता था, अंतमें सामर्थ न रही और क्षुधाके मारे व्याकुल होगया, प्राण निकलनाही चाहते थे कि मैंने दो युवा पुरुषोंको एक ओरसे आते हुए देखा वह हमारे देश कासा पहिरावा पहरे हुए थे। उनको देखकर मैं प्रसन्नहुआ कि अपने देशके निवासी हैं कदाचित मुझे जानतेहो, निकट आ-[illegible] जाना कि दोनो मेरे सगे भाई हैं। देखकर अत्यन्त प्रसन्न [illegible] कि भगवानने मान रख लिया और किसी अपरिचितसे [illegible] माँगना न पडा। निकट जाकर सलाम किया और बडे [illegible]ईका हाथ चूमा। इन दोनोंने मुझे देखतेही द्वन्द मचाया और मझले भाईने थप्पड मारा मैं लडखडाकर गिर पडा फिर बडे भाईका दामन पकडा कि कदाचित बचावै, तब उसने भी लात मारी। सिद्धान्त यह है कि दोनोंने मुझे भलीभाँतिसे

धुँगला और वह कार्य किया जो श्रीमान् यूसुफके भ्राताओंने किया था, मैंने बहुतेरी कसमें दीं और गिडगिडाया परन्तु उन को दया न आई। जब बहुतसे लोग इकट्ठे हुए तब सबने पूछा कि इसका क्या अपराध है तब भाइयोंने कहा कि यह दुष्ट हमारे भाईका सेवक था उसको नदीमें डाल दिया और उसका सम्पूर्ण धन ले लिया हम बरसोंसे खोजमें थे आज बहुत दिनमें इसे पाया है फिर वह मुझसे पूछने लगे कि अरे क्रूर! तेरे मनमें यह क्या आई जो हमारे भाईको मारडाला क्या उसने तेरे साथ कोई अनभल किया था जो अपना कर्मचारी बनाया। यह कहकर उन्होंने अपने कपडे फाडडाले और भाई २ कहकर रोने लगे। इसही अवसरमें सरकारी सिपाहीने इन्हें आनकर डपटा कि इसको क्यों मारतेहो? फिर वह मेरा हाथ पकडकर कोतवालके पास ले गये। सिपाही भी साथ था। भाइयोंने जाकर कुतवालसे भी यही कहा और घूसकी भाँति उसे कुछ देकर अपना अभियोग कहा और हत्याका अपराध लगाया। कुतवालने पूछा कि अपना हाल वर्णन कर। परन्तु भूँख प्यासके मारे मुझमें बोलनेकी सामर्थ न थी शिर नीचा किये खडा था, उत्तर न देसका, तब न्यायाधीशको भी मेरे अपराधी होनेका पूरा विश्वास हुआ और आज्ञा दी कि इसको जंगलमें ले जाकर फांसी देदो। हे महाराज! मैंने रुपये देकर इनको यहूदीकी कैदसे छुडाया था इन्होंने बदलेमें मेरे प्राणलेने विचारे। आप इनसे पूछ लीजिये यदि मैं इसमें कुछ भी असत्य कहता हूं। अस्तु मुझको फाँसी देनेके लिये जंगलमें लेगये, फाँसीके चौखटेको देखतेही प्राणोंसे हाथधोये इस कुत्तेके अतिरिक्त और कोई भी मेरे लिये रोनेवाला न था इसकी यह दशा थी कि

प्रत्येक आदमीके पांवपर लोटता और चिल्लाता था, यद्यपि
कोई २ इसको लकडी और पत्थरसे मराता था, परन्तु
यह उस जगहसे नहीं हिलताथा। मैं उस जंगलमें खडा हुआ
भगवानसे प्रार्थना कररहाथा कि इस समय तेरे अतिरिक्त मेरा
और कोई भी नहीं है जो सहायता करे और मुझ निरपराधको
बचावै। यह कहकर परमेश्वरका ध्यान करने लगा। ईश्वरकी म-
हिमा देखियेकि वहाँके बादशाहको पक्षाघात हुआ बहुतसे वैद्य
लोगोंनेचिकित्साकी परन्तु लाभ न पहुंचा तब एक बूढेने कहा
कि सबसे अच्छी तो यह औषधिहै कि दीनोंको कुछ पुण्य करो
और कैदिओंको छोडदो औषधकी अपेक्षा आशीर्वादमें बडा
प्रभाव है। बादशाहने तत्काल ऐसा करनेकी आज्ञादी। दूत
कारागारकी ओर दौडे ,दैवात् एक उस ओरको भी आनिकला
और भीड देखकर जाना कि किसीको फाँसीदी जायगी । यह
सुनतेही घोडा दौडाकर मेरे पास आया और तलवारसे गरद-
नकी रस्सी काटदी। सरकारी सिपाहियोंको डपटा और कहा
कि ऐसे समयमें बादशाहकी यह दशा है और तुम ईश्वरके प्रा-
णीका बध करतेहो यह कहकर मुझे छुटा दिया तब यह दोनों
भाई पुनर्वार न्यायाधीशके पास गये और मुझको मरवा डाल-
नेके लिये कहा उसने घूस खाईथी इस कारण इनके कहनेमेंथा
तएव कहने लगा कि निःसन्देह रहो अब मैं इसे कैद करताहूं
हाँ स्वयंही भूख प्यासके मारे मरजायगा। तदुपरान्त सिपाही
फिर मुझे पकड लाये और एकान्तमें रक्खा । उस नगरसे बा-
हर तीन कोसपर एक पहाडथा जिसपर श्रीमान् सुलेमानके
समयमें देवोंने एक क्षुद्र कूप खोदा और उसका नाम सुलेमान-
का कारागार रक्खा। जिसपर बादशाही क्रोध होता वह वहाँपर

कैद होकर स्वयं मरजाता था। अतएव रातके समय मेरे दोनोंभाई और कोतवालके सिपाही मुझे उस पहाडपर लेगये और मुझे वहां कैद करके लौटे। हे महाराज! यह कुत्ताभी मेरे साथ चला गया। जब मुझे उस कुएमें कैद किया तो यह उसकी जगतपर लेट रहा। मैं उसके भीतर अचेत पडारहा। जब कुछ चेत हुआ तो मैंने अपने लिये मुरदा समझा और उस स्थानको समाधि जाना। इसही अवसरमें दो मनुष्योंके बात करनेको शब्द मेरे कानमें पडा मैंने जाना कि देव दूत मुझसे प्रश्न करने आये हैं। इतनेमें रस्सीकी सरसराहट इस प्रकारसे हुई कि जैसे उसको किसीने कुएमें लटकाया मैं आश्चर्यमें था पृथ्वीको टटोला तो हड्डियें हाथमें आईं। कुछ देरके पीछे चपड २ की आवाज आई कि जैसे कोई कुछ खाता हो। मैंने पूछा कि हे महाशयो! तुम कौनहो, ईश्वरके लिये बताओ तो। वह हँसकर बोले कि यह सुलेमानका कारागारहे और हम यहाँ पर बन्धुएहैं। मैंने पूछा क्या मैं अभी जीवितहूं वह खिल खिलाकर हँसे और कहा कि अबतक तो जीवितहे परन्तु आगे मरेगा। मैंने कहा तुम क्या खातेहो मुझेभी थोडासा दो, तब झुंझलाकर रूखा उत्तर दिया और कुछ न बोले। वह तो खा पीकर सो रहे और मैं आसक्त होकर रो रहाथा। हे जगतपिता! सात दिन नदीमें और इतने दिनतक भाइयोंकी आपत्तिके मारे एक दानाभी मुँहमें नहीं पडा, वरनः भोजनके बदलेमें मार खानी पडी और ऐसे कारणमें फँसा कि छुटकारेका होना असंभव दिखाई देताथा। फिर तो प्राण जानेका समय आया, कभी तो दम आता और कभी निकल जाताथा। परन्तु कभी २ आधीरातके समय कोई व्यक्ति आता, और रोटियोंको रुमालमें

बाँधकर रस्सीसे लटकाय देताथा। उन रोटियोंको वह आदमी खा लेतेथे। कुत्तेनें यह चाल देख २ कर बुद्धि दौडाई कि जिस भाँति यह व्यक्ति रोटियोंको कुएमें लटका देताहै, इसही प्रकारसे मुझको भी अपने स्वामीका उपाय करना चाहिये तो उसका जीव बचे। यह विचारकर नगरमें गया और नानबाईकी दूकानपर जहाँ रोटियोंका थाल भराहुआ रक्खा था, कूदकर एक रोटी मुँहमें दबाई और ले भागा। लोग पीछेसे ढेले मारते दौडे आतेथे, परन्तु उसने रोटीको न छोडा। फिर नगरके कुत्ते पीछे लगे उनसेभी लडता भिडता रोटीको बचाकर उस कुएपर आया। और रोटीको डालदिया। प्रकाश सूरजका कुएमें आताथा इस कारणसे रोटीको मैंने अपने पास पडाहुआ देखा। फिर यहकुत्ता रोटीको फेंककर पानीकी खोजमें गया। किसी गांवके किनारे एक बुढियाकी झोंपडी थी वहाँ उसका बँधना और एक छोटा सा घडा(कुल्हड)पानीसे भराहुआ धराथा,बुढिया चरखा कात रहीथी, कुत्ता घडे(कुल्हड)के धोरे गया और चाहाकि उसको उठावे।बुढियाने डाटा तब उसके मुँहसे वह छोटासा घडा (कुल्हड) छूटगया। जिस्से घडे भी लुढक गये और मिट्टीके दो एक बरतनभी टूटे पानी वह चला बुढिया लकडी लेकर मारनेको उठी। कुत्तेने उसके दामनको पकडलिया और पाँवोंमें लोटकर दुमको हिलाने लगा ‍ पहाडकी ओरको मुँह करके दौडा। फिर उसके पास आकर भी रस्सी उठाता, कभी डोल मुँहमें पकडकर दिखाता और शिर उसके पांवोंपर रखता, फिर चद्दरका अंचल पकडकर खेंचा भगवानने उस स्त्रीकी मनमें दया प्रगटकी और डोल रस्सीको लेकर उसके साथ चली। यह उसका आंचल पकडकर घरसे बाहर हो आगे २ होलिया और उसको पहाडपर लेगया। उस स्त्री-

के जीमें उस कुत्तेकी ओरसे यह सन्देह हुआ कि इसका स्वामी निःसन्देह इस कारागारमें बन्द है कदाचित यह उसहीके लिये पानी मांगता हो। तब वह उसके साथ २ वहांतक आई और पानीका भरा हुआ लोटा रस्सीसे लटकाया मैंने पानीका लोटा लेकर फिर रोटी खाई और पानीके दो तीन घूंट पिये। पश्चात् ईश्वरका धन्यबाद करके एक किनारे बैठा और कहने लगा कि देखिये अब उसकी महिमासे क्या होता है। यदि कुत्ता इसही भांतिसे प्रति दिन रोटी ले आता था और बुढिया पानी देती थी जब भटियारोंने देखा कि कुत्ता नहीं मानता हैं तो इसे देखकर प्रतिदिन एक रोटी फेंक देतेथे और यदि बुढिया पानी न लाती तो यह उसके वरतन फोड डालता था बिवश होकर वह भी प्रतिदिन पानीका एक लोटा दे जातीथी, अतएव इसमित्रने मुझको जीवदान दिया और आप उस कुएकी जगतपर पडा रहताथा इस भांतिसे छः मास व्यतीत होगये परन्तु ऐसे कारागारके बंधुयेको जिसको संसारकी पवन भी न लगे कैसा दुःख होता होगा। मुझमें केवल हड्डियेंही शेष रहीं, जीवन भारी ज्ञात होने लगा. सोचता रहा कि प्राण निकल जावे तो भला है एक दिन रातको जब कि वह दोनों बन्धुए सोतेथे, मेरा जी उमड आया और फूट२ कर रोने लगा। पिछले पहर क्या देखता हूं एक रस्सी नीचे लटकी और यह शब्द हुआ कि अभागे रस्सीका सिरा दृढतासे अपने हाथमें बांध और यहांसे निकल। मैंने सोचा कि भाई ही हैं अब मुझपर कृपालु हो उद्धारके लिये आये हैं। अत्यन्त प्रसन्नतासे उस रस्सीको अपनी कमरमें कसा; तब किसीने मुझको ऊपर खेंचा। अत्यंत अंधेरी रात्रि होनेसे मैंने अपने खेंचनेवालेको नहीं पहचाना। मेरे बाहर आनेपर उसने कहा कि

शीघ्र यहां पर आ। खडे होनेका यह समय नहीं है। मुझमें शक्ति नहीं थी परन्तु मारे भयके लुढकता लुढकता पहाडके नीचे आया वहाँपर कसे हुए दो घोडे खडे थे उस व्यक्तिने एक पर मुझे चढाया और दूसरे पर आप चढलिया। चलते२ एक नदीके किनारे पर पहुंचा. प्रभात होगया, उस नगरसे दस बारह कोस निकल आये तब मैंने देखा कि वह युवा वर्म पहने घोडेपर चढा हुआ मेरी ओर क्रोधकी दृष्टिसे देख रहा है फिर उसने म्यानसे तलवार निकाली और मुझपर चलाई। मैंने जानबूझकर अपने लिये घोडेसे गिरा दिया और विनय करने लगा कि मैं निरपराधी हूं, मुझे क्यों मारतेहो? कहाँ तो मुझे दया करके कारागारसे उद्धार किया, और अब यह बर्त्ताव करतेहो? उसने कहा कि तू कौनहै, मैंने कहा यात्री हूं आपत्तिमें फँसगया था, तुह्मारी कृपासे उद्धार पायाहै। जब मैंने बहुतही विनयकी तब वह प्रसन्न हुआ और खड्गको कोषमें डाला। फिर कहा अच्छा तुझे छोडा परन्तु जल्दी घोडेपर चढ, यहाँ बिलंब करनेका काम नहीं है, घोडेको शीघ्रतासे चलाया। मार्गमें अछताता पछिताता संध्याके समय एक टापूमें पहुंचा। वहाँ घोडेसे उतरा मैं भी नीचे आया। घोडे चरनेको छोडे गये और अपनीभी कमरसे हथियार खोल डाले। तब उसने मुझसे कहा कि " अभागे! मुझसे अपना वृतान्त तो कह और नाम बता। मैंने उसको ना नाम बताया और अपना शोकमय वृत्तान्त पूरा २ ा। वह युवा मेरी पूर्ण दशा सुनकर रोने लगा और कहा कि हे मित्र! अब मेरा वृत्तान्त सुनो। जेरबाददेशका एक राजा है मैं उसकी कन्या हूं। और वह युवा जो सुलेमानके कारागारमें बन्द है उसका नाम बहरेहिन्द है और वह मंत्रीका पुत्र

है। एक दिन महाराजने आज्ञादी कि जितने राजा और कुं-
वरहै छिद्रोंमें आनकर लक्ष्य बेधकरें। और अपने २ करतब
दिखावें में अपनी माताके साथ एक अटारीपर परदा जालीका
डाले हुए बैठीथी, तथा दाइयें व सहेलियां भी साथ बैठीहुई त-
माशा देखती थीं। मंत्रीका यह पुत्र सबसे सुन्दरथा इसके कर-
तब भी बहुतही अच्छे हुए, इस कारण मेराजी उसपर आगया
बहुत दिनोंतक इस बातको छिपाए रही अंतमें जब बहुत व्या-
कुल हुई तब दाईसे कहा और बहुतसा पुरस्कार दिया। दाई
किसी ढबसे इसको लेआई तब यहभी मुझसे प्रीति करने लगा
बहुत दिन रीति प्रीतिमें कटगये एक दिन चौकीदारोंने
आधी रातके समय जब हथियार बांधकर यह महलमें आ-
रहाथा पकड लिया, राजाने अपराधकी जांचकरके वध कर-
नेकी आज्ञा देदी। तब राज्यके बडे २ पदाधिकारियोंने प्राण
बचवाये तब बादशाहने इसको सुलेमानके इस कारागारमें बंद
करा दिया और दूसरा युवा जो उस कारागारमें कैद है उसका
मित्र है यह भी उस रातको उसके साथ था। उस कारागारमें
गये हुए इन दोनोंको तीनबर्ष होगये परन्तु किसीने इस बातका
अनुसन्धान नहीं किया कि शाहके घरमें वह किस कारणसे
आता था। भगवानने मेरी लाज रखली उस धन्यवादके बदले
मैंने अपना कर्त्तव्य समझा है कि उसको अन्न जल पहुँचाया
करूं तबसे अठवाडेमें एक दिन जाती हूं और आठों दिनका
भोजन एक साथ दे आती हूं। रातको स्वप्नमें ऐसा देखा जैसे
कोई कहता है कि प्रभातको उठ, घोडा और जोडा और मार्ग
व्ययके वास्ते कुछ रुपये लेकर उस कारागार पर जा और उस
बिचारेको वहांसे निकाल। यह सुनकर मैं चौंक पडी और

मगन होकर मरदानारूप धारण किया, खर्चके लिये एक संदूकको लाल जवाहरसे भरली और यह जोडा घोडा लेकर वहां गई कि रस्सी डालकर उसे खैंचूं, परन्तु भाग्यमें तो तेरे था कि ऐसे बन्धनसे इस प्रकारसे छुटकारा पाया, मेरे कामको कोई नहीं जानता। कदाचित वह कोई देवता था कि जिसने तेरा उद्धार करनेके लिये मुझे पहुँचाया। अच्छा जो मेरे भाग्यमें था वह हुआ। यह कहकर भोजनके पदार्थ अँगोछेसे खोले। फिर थोडासा कन्द निकालकर एक कटोरेमें घोला और अरक वेदमुश्कका उसमें डाला पश्चात् मुझे पीनेके लिये दिया। मैंने उसके हाथसे लेकर वह पिया और तदनन्तर कुछ खानेको भी खाया। कुछ बिलम्ब पीछे मुझे धोती पहराकर नदीमें लेगई, कैंचीसे मेरे शिरके बाल कतरे,नख काटे, निहला धुलाकर कपडे पहराये, नये सिरेसे आदमी बनाया। मैं प्रसन्न होकर उस भगवानका धन्यवाद करने लगा वह सुकुमारी मेरे इस कृत्यको देखने लगी जब उपासनासे निश्चिन्त हुआ तब पूछा कि तुमने यह क्या किया? मैंने उत्तर दिया कि जिस जगतिपताने सारी सृष्टिको उत्पन्न किया और तुमसी सुकुमारीके द्वारा मेरी सेवा करवाई और तुम्हारे जीको मुझपर कृपालु किया, कारागारसे छुटाया वह किसीकी सहायता नहीं चाहता, मैंने इस समय उसहीकी उपासनाकी और उसहीका गुणानुवाद गाया। तब वह यहूदन कहने लगी कि क्या तुम मुसलमानहो? मैंने कहा हां। फिर बोली कि तुम्हारी बातोंसे मेरा जी प्रसन्न हुआ अब मैं भी मुसलमान होना चाहती हूं, अस्तु मैंने उसको भी मुसलमान बनाया। तदनन्तर घोडेपर सवार होकर हम दोनों चलदिये। रातको पडावमें ठहरकर वह भांति २ की बातें किया करती थी।

हे महाराज! इस प्रकारसे चलते २ दो मास पीछे एक विलायतमें पहुँचे जो जेरबाद और सरंदीपकी सीमा कहलातीथी वहां एक ऐसा नगर दिखाई दिया जो जलवायुमें अच्छा और असंवोल नगरसे बडा था वहांके बादशाहको प्रजापालक जानकर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ एक स्थान मोल लेकर वहां रहने लगे. जब कई दिन पीछे यात्राकी थकावट उतरगई कुछ असबाब ठीक करके उस राज कुमारीसे मुसलमानी धर्मके अनुसार विवाह किया और प्रसन्नतासे रहने लगा तीन बरसतक वहांके निवासियोंसे मिलकर उनका विश्वासपात्र हुआ और व्यौपार का ठाट फैलाया सिद्धान्त यह है कि वहांके सब सौदागरोंसे अपर होगया एक दिन सलाम करनेके लिये मंत्रीके पास गया। मार्गमें देखा कि बडी भारी भीड होरही है किसीसे पूछा कि इतनी भीड यहांपर किस कारणसे इकठी है, तब एक आदमीने कहाकि दो मनुष्य व्यभिचार और चोरी करते पकडे गयेहैं, कदाचित् उन्होंने किसीकी हत्याभीकी है। यह नहीं कह सकता कि वह दोषीहैं या निर्दोषी? मैं भीडको फाडकर भीतर घुसा क्या देखता हूं कि वही मेरे दोनों भाई हैं जो वहां बँधेहुए खडे हैं उनकी सूरत देखतेही मोह आगया और कलेजा जला। सिपाहियोंको एक मुठी अशरफियें दी और कहा कि क्षणभर ठहरो। यह कह मैं वहांसे घोडेको सरपट दौडाता हुआ हाकिमके पासगया और एक अनमोल रत्न उसको भेंटदिया और भाइयोंको बचानेका अनुरोध किया। हाकिमने कहा कि एक व्यक्तिवादी है और दोनोंका अपराध प्रमाणित होचुकाहै। बादशाहनेभी आज्ञा दे दीहै इस लिये मैं विवशहूं। तदुपरान्त मंत्रीके अनुरोधसे हाकिमने वादीको बुलाकर पांच हजार रु-

येपर सम्मत किया कि तुम वधका अभियोग उठा लो। मैंने रुपये गिन दिये और भाइयोंको छुटा लिया।

हे महाराज! इनसे पूछियेतोसही कि मैं कुछ मिथ्यातो नहीं कहताहूं।वह दोनोंभाई सिरनीचेकिये लाजसे खड़ेथे अस्तु इनको छुटाकर मैं घरमेंलाया और न्हिला धुलाकर नए कपड़े पहनाये। अपनी बैठकमें रहनेंको स्थानदिया। अबकीवार इनको भीतर जानेका निषेधथा परन्तु सेवामें सब समय बनारहताथा इस प्रकारसे तीनवर्ष व्यतीत होगये, और इस समयमें इन्होंने किसी प्रकारकी मीनमेख न की कि जिससे मुझे कुछ सन्देह होता। जो मैं कहीं सवारहोकर जातातो यह घरमेंरहते। दैवात् वह भ-लीमानस बीबी एकदिन नहानेको गई; दीवानखानेकी ओर आई और किसीको वहां न देखकर घूंघट मुँहसे उतारलिया। कदाचित मँझलेभाई साहब जागरहेथे मुँहदेखतेही उसपर मो-हित हुए और बडे भाईसे कहा, तब दोनोंने मेरे मारडालनेकी सम्मतिकी, मुझको इस बातका किञ्चित भी ध्यान न था कि वरन मनमें यह कहता था कि धन्य है उस परमात्माकी लीला-को कि इन दोनोंने अबतक कोई उत्पात नहीं किया अब इ-नका चाल चलन सुधरा क्या कुछ लाज आगई? एक दिन भोजन करनेके उपरान्त बडे भाई साहबको अपने देश की याद ाई और वह आँखोंमें आँसू भरकर ईरान देशकी प्रशंसा करने ागे। उनकी यह दशा देखकर दूसरे भी बिसूरने लगे। मैंने कहा किजो देशमें चलनेकी इच्छाहै तो मैं प्रस्तुतहूं मेरी भी यही इच्छाहै। अच्छा मैं भी आपके साथ चलताहूं। उस बीबीसे दोनों भाइयोंके उदास रहनेका वृत्तान्त कहा और अपनी भी इच्छा प्रगटकी उसबुद्धिमतीने कहा कि तुम जानो परन्तु यह दोनों फिर कुछ

विश्वासघात किया चाहतेहैं, यह तुह्मारे प्राण लेवाहैं और तुमने यह साँप अपनी बगलमें पाले हैं। जो उनकी मित्रताका भरोसा रखते हो तो जो इच्छा हो सो करो, आगे भाग्यहै। कुछ दिनोंमें यात्राकी तइयारी करके जंगलमें डेरा गाड दिया और बहुतसे सौदागर एकत्र होगये और मेरे साथ चलना स्वीकार किया। शुभ घडी महूरत देखकर चला, परन्तु इनकी ओरसे सदैव सावधान रहा करता था तथा सब कार्य इनकीआज्ञाके अनुसारही हुआ करतेथे एक दिन एक पडावपर मझले भाईने कहाकि यहांसे एक कोसपर एक सोता बहता है उसका जल अत्युत्तम है और उसके निकटस्थ जंगलमें कोसोंतक चंपा चँबेली, जाही, जुही, गुलाब और मदारके फूल खिले हुए हैं। निश्चयही वह स्थान सुन्दरताका सागरहै यदि स्वतंत्र होते तो कल वहीं ठहर कर जीको बहलाते। उसकी यह बात सुनकर मैंने समस्त समूहमें आज्ञा फिरवादी कि कल भी यहीं ठहरेंगे और रसोइयेको आज्ञादी कि भांति २ के पदार्थ तइयार करो कल हम भ्रमण करने जांयगे। प्रभात होनेपर इन दोनों भाइयोंने मुझे स्मरण दिलाया कि ठंढे ठंढेमेंही चले चलिये और भ्रमण कीजियेमैंने सवारी मांगी तब कहने लगे कि सवारीमें भली भांतिसे शोभा नहीं दिखाई देती। सेवकोंसे कह दो कि घोड़ोंको तइयार करके ले आवें। दो दास कुछ आवश्यकीय सामग्री लेकर साथ चले। मार्गमें तीर चलाते जाते थे। जब समूहसे दूर निकल गये एक दासको किसी कामके लिये भेजा। थोड़ी दूरतक आगे चलकर दूसरे दासको उसके बुलानेको भेजा, अभाग्यकेमारे मुझसे कुछभी न बोला-गया जो वह चाहते थे,वही करते थे और मुझे बातोंमें उलझाये हुये लिये चले जातेथे परन्तु यह कुत्तासाथ रहगया था। बहुत

दूरतक चले जाने परभी वह सोता दिखाई नहीं दिया न बाग देखा केवल बड़े २ करार वाला मयदान था, वहां मुझे पेशाब लगा और मैं एक जगह बैठगया इतनेहीमें मेरे पीछे तलवारसी चमकी लौटकर देखा तो मझले भाई साहबने मेरे ऊपर खड्ग प्रहार किया, सिर फटगया। मैं कहनाही चाहता था कि अरे अत्याचारी! मुझको किस कारणसे मारताहै कि बडे भाईने भी कन्धे पर तलवार मारी, दोनों घाव कठिन लगे, तिलमिलाकर गिर पड़ा तब दोनों कठोर पुरुषोंने भली भांतिसे मुझको घायल किया। कुत्ता यह गति मेरी देखकर इनपर भोंका तब उन्होंने उसको भी घायल किया। फिर अपने शरीरमें चिन्ह किये और नंगे धडंगे समूह में पहुंचे और प्रगट किया कि चोरोंने हमारे भाईको उस जंगलमें मार डाला और हमारे भी घाव लगेहैं, जलदी यहांसे चलो नहीं तो वह तुम्हें भी आनकर लूट लेंगे और प्राण लेंगे। चोर और डाकुओंका नाम सुनतेही समूहके मनुष्य घबड़ाये और व्याकुल होकर चलनिकले। मेरी स्त्री मेरे भाइयोंके कार्यको भली भांतिसे जानती थी कि जिस २ भांतिसे इन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया था, इन दुष्टोंसे यह वृत्तान्त सुनकर छूरीमारी और अपनेको मार डाला। जब वह सौदागर यहां तक अपना वृत्तान्त कहचुका तो मैं फूट २ कर रोने लगा फिर [illegible] कहा कि हे जगतपिता! यदि असभ्यता न होती तो नंगा [illegible] अपना सारा शरीर दिखादेता। यह कहकर सिरका दुपट्टा उता[illegible] तब मैंने देखा कि उसके शरीरका कोई भाग ऐसा नहीं है जिसपर कोई घाव न लगाहो। खोपड़ीमें ऐसा बड़ा गढ़ा पड़ा था कि एक अनार उसमें साबित समाजाय। जितने दरबारी वहां थे वह सब चकित होगये। वह उस सौदागरने इस

प्रकारसे अपनी व्यवस्था कहनी आरंभकी। हे महाराज! जब यह दोनों अपने विश्वाससे मुझको मारकरही चलेगये तब एक ओरको मैं और दूसरी ओर यह कुत्ता मेरे निकट घायल पडा था। इतना अधिक रुधिर शरीरसे निकला था कि उठने बैठनेकी सामर्थ्य न रही। न जाने यह प्राण कहां अटकगए थे जहाँ मैं पडाथा वह सरन्दीप देशकी सीमा थी वहांका वृत्तान्त इस भांतिसे है:—

सरन्द्वीपकी रानीका वृत्तान्त।

इस द्वीपमें एक बडा नगर था और एक देवालयभी दूर २ तक विख्यात् था। वहांके वादशाहकी पुत्री अत्यंत सुन्दर और बुद्धिमती थी। बहुतसे बादशाह और राज्यकुमार उसके प्रेममें इधर उधर भटकते फिरते थे। वहांपर किसी प्रकारकी लाज नहीं की जाती थी इस कारणसे वह राजकुमारी अपनी सखी सहेलियोंके साथ बाग बगीचोंकी शोभा देखती फिरती थी बादशाहसे आज्ञा लेकर वह प्रतिदिन वागमें जाया करती और अपना जी बहलाया करती थी। एक दिन वह घूमती हुई वहां आ निकली जहां मैं पडा था मेरा हाय २ करना देखकर एक दासी पास आ खडी हुई और मेरी यह दुर्दशा देखकर भागी। फिर शाहजादीसे कहा कि एक मनुष्य और एक कुत्ता रुधिरमें सरावोर पडा है। उससे यह सुनकर शाहजादी मेरे पास आई और शोकके साथ कहा कि देखो तो कुछ प्राण हैं? दो चार दाइयोंने उतरकर देखा और प्रार्थनाकी कि अबतक तो जीता है. आज्ञादी कि एक पालकीमें डालकर बागको ले चलो; मेरे वहाँ पहुंचने पर अस्त्र चिकित्सक बुलाकर और मेरा कुत्तेका इलाज कराया। चिकित्सकने मेरा सम्पूर्ण शरीर पोंछपां-

छकर साफ किया और नीमके पानीसे धो धोकर घावोंपर मलहम लगाया, टाँके दिये। मुश्कबेदका अर्क पानीके बदले मेरे मुँहमें डाला। शाहजादी सिरहाने बैठी रहती थी और मेरी सेवा कराती थी बहुधा औषध तइयार करके अपने हाथसे देती। चेत आनेपर मैंने देखा कि शाहजादी पश्चातापके साथ कहतीहै कि किस अत्याचारी और हिंसकने तुझपर यह कष्ट पहुंचायाहै, देवतासे भी न डरा। दश दिन पीछे कुछ शक्ति आनेपर मैंने आँख खोली, देखा तो अप्सराओंका झुण्ड मेरे पास एकत्र है। शाहजादी सिरहाने खडी है। हाय निकलगई चाहा कि कुछ कहूं परन्तु शक्ति न थी। शाहजादीने दयापूर्वक कहा कि हे मनुष्य! दुखित मतहो यद्यपि किसी अत्याचारीने तुझको यह कष्ट पहुंचाया पर ईश्वरने मुझे तेरे ऊपर कृपालु किया। अब चंगा होजायगा। मैं उस भुवन मोहिनीको देखकर पुनर्बार अचेत होगया। शाहजादी भी इसबातको समझी और मेरे ऊपर गुलाब छिडका वीसदिनके पीछे मेरे घाव भर आये। सबके सो जानेपर रात्रिके समय मलका मेरे पास आती और खिला पिला जाती। संक्षेप यहहै कि चालीस दिन पीछे स्नान किया शाहजादीने अत्यंत प्रसन्न होकर चिकित्सकको बहुतसा पुरस्कार दिया और मुझको वस्त्र पहरवाये। ईश्वरकी कृपा और इस रक्षाद्वारा मैं भलीभाँतिसे हृष्ट पुष्ट हुआ और मेरा यह कुत्ताभी रोग्य होगया। शाहजादी प्रतिदिन मुझको शराब पिलाती और देख २ कर प्रसन्न होतीथी। मैंभी अद्भुत २ कहानी सुना२ कर उसके जीको बहलाता। एकदिन पूछने लगी कि अपना वृत्तान्त सुनाओ कि तुम कौनहो और किस भाँतिसे यह दुःख पाया। मैंने आदिसे अंततक अपना वृत्तान्त कह सुनाया वह,

सुनकर रोने लगी और बोली कि मैं अब तुझसे ऐसा व्यवहार करूंगी कि जिससे अपना सारा कष्ट भूल जायगा। मैंने कहा ईश्वर आपका भलाकरे आपने नये सिरेसे मुझे प्राणदान दिया है अब मैं आपका मोललिया दासहूं, ईश्वरके लिये सदैव मुझपर कृपा दृष्टि रखना। वह इस प्रकारसे सारी रात अकेली मेरे पास बैठी रहती, किसी दिन कोई दाईभी आजाती। उसके चले जानेपर मैं चुपके २ उपासना (नमाज) करलिया। करताथा क्योंकि वह पारसी बादशाहकी बेटीथी। एकदिन ऐसा हुआ कि शाहजादी अपने बापके पासगई। तब मैं हाथ मुहँ धो नमाज पढने लगा। इसही अवसरमें शाहजादी यह कहती हुई वहाँ आगई कि देखें इस समय वह मनुष्य क्या करताहै, सोताहै या जागताहै। मुझे अपनी जगहपर न देखकर बिस्मितहुई और बोली कि वह कहाँ चलागया, किसीसे दृष्टि तो नहीं लडाई, फिर प्रत्येक स्थानमें खोजने लगी। फिर वहाँ आ निकली जहाँ मैं नमाज पढ रहाथा उसने काहेको यह बात देखीथी इस लिये खडी २ देखती रही, जब मैंने उपासना समाप्त करके आशीर्वाद माँगा और ऊपरको हाथ उठाया तब खिलखिलाकर हँसने लगी और बोली कि यह मनुष्य पागल तो नहीं होगया है? यह कैसे २ इशारे कर रहा है? फिर मेरे आगे आनकर बोली कि हे महाशय! तुम यह क्या करते हो? मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। फिर उसकी धाय यह कहने लगी कि हे शाहजादी! मुझे तो यह व्यक्ति मुसलमान जान पडता है- जो जाति हमारी शत्रु है, यह विना देखे हुए ईश्वरकी पूजा करता है यह सुनतेही उसने हाथपर हाथ मारा और बहुत क्रोधित हुई और बोली कि "मैं क्या जानती थी

कि यह निगोडा तुरक है मूर्त्तिका शत्रु है, तब तो इसपर ईश्वरी क्रोध हुआ था मैंने वृथा इसकी रक्षाकी और अपने घरमें रक्खा यह कहती हुई चली गई। यह सुनतेही मैं घबडा गया, कि देखिये अब यह क्या बर्त्ताव करे। भयके मारे नींद उचटगई, तीन दिन तीन रात तक भयसे अभिभूत रहा आँख न लगी। तीसरी रातको शाहजादी मदिराके नशेमें उन्मत्त होकर एक दाईको लिये हुए मेरे पास आई। उसके हाथमें तीर कमान थी उसने बैठकर दाईसे शराबका प्याला माँगा और उसको पीकर कहा कि यह तुरक जो हमारी जातिका निन्दक है क्या अबतक जीता है? धायने कहा कि अभी थोडासा दमबाकी है। बोली कि अच्छा अब वह हमारी दृष्टिसे गिरा अच्छा उसको बाहर बुलाओ। दाईने मुझे पुकारा, मैंने आनकर देखा कि शाहजादी अत्यन्त क्रोधमें बैठीहै मुँह लाल होरहा है। मैंने डरते २ सलाम किया और हाथ जोडकर खडा होगया। क्रोधकी दृष्टिसे मुझे देखकर दाईसे बोली कि जो मैं इस जातिके शत्रुको तीरसे मारूं तो मेरा अपराध क्षमा होगा या नहीं? मुझसे यह बडा भारी अपराध हुआ है कि मैंने इसे अपने घर रखकर रक्षाकी। दाईने कहा कि इसमें आपका क्या अपराध है, तुमने शत्रु जानकर तो नहीं रक्खा था, तुमने तो इसपर दया की तुमको ईके बदलेमें भलाई मिलेगी और यह अपनी बदीका फल देवतासे पावेगा। फिर शाहजादीने दाईसे कहा कि इसको ठनेके लिये कह दाईने मुझे बैठनेका संकेत किया। मैं बैठगया। फर शाहजादीने दाईसे कहा कि इसको भी शराबका प्यालादे तो सरलतासे मारा जायगा। दाईने प्याला दिया। मैंने सलाम करके ले लिया उसने मेरी ओर नहीं देखा परन्तु कनअँखि-

योंसे चुपचुपाते हुए देखती रही। नशा हो आने पर मैंने यह दोहा पढा कि;—

दोहा—अमी हलाहल मद भरे, स्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुक २ परत, जेहि चितवत एकबार॥

वह यह सुनकर हँसी और दाईकी ओर देखकर बोली कि क्या तुमको नींद आतीहै दाईने जी पाकर कहा हां, वह तो विदा होकर काला मुँह करगई। फिर क्षणके पीछे राजकुमारीने मुझसे प्याला मांगा मैं शीघ्रतासेभरकर उसके सामने लेगया, उसने कटाक्ष करके लेलिया, तब मैं उसके चरणोंपर गिरा, मलकाने मुझपर हाथ झाडा और कहने लगी कि अरे मूर्ख! हमारे देवतामें क्या बुराई है जो तू निर्गुणकी उपासना करताहै। मैंने कहा कि न्याय कीजिये कि पूजाके योग्य वही ईश्वरहै जिसने एक बूंद पानीसे तुझसी सुकुमारीको उत्पन्न किया और यह लावण्य दिया कि जो क्षणभरमें लाखों मनुष्योंके जीको बावला बना देताहै, मैं नहीं कह सकता कि पारसी लोग किस देवताकी पूजा करतेहैं मेरी यह बात सुनकर शाहजादीके मनमें दया आई और कहने लगी कि जबतक कोई सगुणकी उपासना नहीं सीखलेता तबतक उसपर निर्गुणका ध्यान नहीं कर सकता क्या विना वर्णमालाके सीखे लिखना पढना आसकताहै? परन्तु मैं तुह्मारी अनुरागिनी हूं। इस कारण अपने सत्य धर्मको भी तेरे ऊपर नेवछावर करती हूं, यह कहकर मुसलमान होगई और मुझसे कहा कि मैं तो तुह्माराधर्म अंगीकार करचुकी परन्तु मातापिता क्या कहेंगे इस कारण मेरी इच्छाहै कि भागचलो मैंने कहा किस प्रकारसे भागोगी? और कहांको भागोगी? उत्तर दिया कि पहले तो तुम यहांसे चले जाओ और मुसल-

मानोंके साथ सरांयमें जा रहो फिर जहाजको देखते रहियो कि यहांसे कब रवानां होगा जब अवसर पावो तो सूचना दीजो। मैं वहुधा इसदाईको तुह्मारेपास भेजा करूंगी। जब तुम कहोगे तबही यहां आय किश्तीपर सवार हो तुह्मारे साथ चलदूंगी तब इन लोगोंके हाथसे छुटकारा मिलैगा। मैंनें कहा कि तुह्मारे प्राणके ऊपर बलिहार! दाईका क्या करोगी? इसकी युक्ति सहजसे होजायगी? इसको एक प्याला जहर का देनेसे सब हिसाब बेवाक होजायगा यह निश्चय करके मैं प्रभात होतेही सरांयमें गया और वहाँ एक मकान किरायेको लिया उसके बिरहमें केवल मिलनकी आश रहती थी। जब दो मासमें बहुतसे सौदागर एकत्र होगये तब जहाज छूटनेकी तइयारीहुई, असबाब लादागया। वह सब मुझसे कहने लगे कि क्यों साहब! आप भी चलिये, इस नर्कमें कबतक रहोगे। मैंने उत्तर दिया कि मेरेपास क्याहै? जो अपने घरको जाऊं। यही एक लौंडी और एक कुत्ता मेरेपास है थोडीसी जगह मुझको भी बैठनेको दो और उसका मोल नियत करो। सौदागरोंने कृपा करके एक कोठरी मेरे बैठनेके लिये देदी मैंने उसके किरायेका रुपया देदिया। फिर मैं उस दाईके घर आया और कहा कि "अम्मा! मैं तुझसे विदा होने आया हूं, अब जन्मभूमिमें जानेकी इच्छा है, जो तेरी दया हो तो एक दृष्टिसे हजादीको देखूं तो बडी बात है, दाईने इस बातको स्वीकार मैंने कहा कि अमुक स्थानपर रातको खडा रहूंगा। वह ली अच्छा मैं यह कहकर सरांयमें आया और संदूक उठाकर जहाजमें लाया और कप्तानको सौंपकर कहा कि कल सवेरेको मैं अपनी बांदीके साथ आऊंगा, उसने कहा जल्दी आना। रात होनेपर मैं उस मकानके निकट खडा रहा जहां दाईसे खडे

होनेको कह आया था। उस समय मलका मैले कुचैले कपडे पहने जवाहरका एक सन्दूक लिये बाहर निकली और वह पिटारी मुझे देदी, प्रभात होतेही एक नदीके किनारे पहुँचे और एक अगिनबोटपर सवार होकर जहाजमें जा उतरे। यह स्वामी भक्त कुत्ताभी मेरे साथ था। प्रभात होनेपर जहाजका लंगर उठाया, निश्चय पूर्वक चले जातेथे कि एक ओरसे तोपोंकी आवाज आई, सब लोग घबडाये, जहाजको ठहराया और परस्पर यह चरचा होने लगी कि क्या यहांका बादशाह कुछ बिश्वास घात करेगा ? तोप छूटनेका क्या कारण है ? जितने सौदागरथे उन सबके पास सुन्दर २ दासियां थीं, इन सबने इस डरसे कि बादशाह इनको छीन न ले बांदियोंको संदूकमें बन्दकर दिया। इसही समयमें शाह एक छोटी किश्तीपर बैठा हुआ नौकरके साथ आया। मैं जानता हूं कि दाईके मरने पर शाहजादीके भागनेका समाचार बादशाहको पहुंचा तब मारे लाजके उसका नाम तो न लिया परन्तु शाहबन्दरको आज्ञादी कि अजमके रहनेवाले सौदागरोंके पास सुन्दर२ दासियें हैं, मैं शाहजादीकी सेवाके लिये उनको लिया चाहताहूं तुम उनको रोककर जितनी दासियें जहाजमें हों उन सबको यहाँ ले आओ जो मेरे मन भावेगी उसका मूल्य देदिया जायगा। बादशाहकी आज्ञा पायकर टापूका अध्यक्ष जहाजपर आया। मेरे निकट एक और मनुष्य था उसके पासभी एक दासी सन्दूकमें बन्दथी; टापूका अध्यक्ष उसही सन्दूकपर आनकर बैठगया और दासियोंको निकलवाने लगा। मैंने ईश्वरका धन्यवाद किया कि बादशाहजादीकी खोज तो नहीं है। सिद्धान्त यहहै कि जितनी दासी पाई उस अध्यक्षने नावोंपर

चढाली। फिर जिस सन्दूकपर वह बैठाथा उसके मालिकसे पूछा कि तुह्मारे पासभी तो एक दासीथी। उस मूर्खने कहा "भगवानकी सौगन्द मैंने यह काम नहीं किया"। सब लोगोंने आपके डरसे अपनी दासियोंको सन्दूकोंमें छिपाया पर मेरे पास तो कोईथीही नहीं, छिपाता किसको ? टापूके अध्यक्षने यह सुनकर सन्दूकोंकी तलाशी लेना आरम्भ किया, सबके साथ मेरा सन्दूक भी खोला, और मलकाको भी निकाल कर बांदियोंके साथ ले गया बडा पश्चाताप हुआ, कहने लगा कि इस कार्यसे अवश्यही मेरी बदनामी होगी और शाहजादी पर न जाने कैसी बीते। उसकी चिन्ताके मारे मुझे अपने प्राणोंका डरभी न रहा, सारी रात ईश्वरसे प्रार्थना करता रहा। प्रभात होतेही टापूका अध्यक्ष सबकी दासियोंको नावपर चढाकर फेरलाया, सौदागर प्रसन्न हुए। सबकी दासियें आगईं, परन्तु मेरी प्राणप्यारी उसमें न थी। अध्यक्षसे पूछा कि मेरी दासी क्यों नहीं आई, परन्तु वह कुछ न बोला। दूसरे समस्त व्योपारी मुझको समझाने लगे कि अच्छा जो हुआ सो हुआ तुम दुःखित मत हो, उसका मूल्य हम सब भरदेंगे। मेरा चेत जाता रहा। मैंने कहा कि अब आगे न जाऊंगा। नाव वालोंसे कहा कि ...ई हमें भी साथ लेते चलो और किनारे पर उतार दीजो, ... सम्मत हुए। मैं जहाजसे उतर कर नावमें आपहुँचा वह ... भी मेरे साथ चला आया। जब टापूमें पहुँचा तब एक ...तोंकी भरी हुई संदूक जो मलका अपने साथ लाई थी उसे अपने साथ रख लिया और सब सामग्री नावके अध्यक्षोंको देदी। और मलकाकी खोजमें फिरने लगा कि शायद उसका पता लगजाय परन्तु कहीं भी उसका पता न पाया। एक रा-

तको किसी प्रकारसे बादशाहके स्थानमें गया परन्तु कुछ समाचार नहीं मिला। एक मासतक नगरकी अली गली और हाटवाटमें देखा और शोकके मारे अपनेको महादुर्बल बनाया और पागलोंकी नाईं फिरने लगा। एक दिन अपने मनमें यह बिचारा कि कदाचित टापूके अध्यक्षने मेरी प्राणप्यारीको अपने घरमें रखलिया हो इस कारण मैं उसकी हवेलीके इधर उधर घूमा करता था कि किसी ओरसे मार्ग पाऊं तो भीतर जाऊं। वहाँपर एक पतनाला देखा जिसमें होकर आदमी भलीभांतिसे बाहर आ जा सकता है परन्तु उसके दाँये भागमें लोहेका जाल सटा हुआ है। चाहा कि इस पतनालेकी राहसे चलूं यह बिचार कर कपडे उतारे और बडे परिश्रमसे उस जालीको तोडा और संडासकी राहसे महलमें गया औरतोंकीसी सूरत बनाकर सब ओर देखनेलगा। इतनेहीमें एक शब्द प्रार्थना करनेका कानमें पडा, वहां जाकर देखा तो मलका खडी हुई प्रार्थना करती और रोती है और कहती है कि हे भगवान्! मुझे मेरे प्यारेसे मिला। में देखतेही दौडा और उसके पावोंपर गिरा,मलकाने मुझे गले लगाया परन्तु बेसुध होगया। चेत आनेपर मैंने सब समाचार पूछा, उसने कहा कि जब टापूका अध्यक्ष सब दासियोंको किनारेपर लेगया तो मैं ईश्वरसे यही प्रार्थना करती थी कि भेद न खुलजाय और मैं पहिचानी न जाऊं और तुम्हारी जानपर कोई आपत्ति न आवै।ईश्वरने मेरी प्रार्थनासुनी किसीने मुझे नहींजाना कि यहमलका है टापूका अध्यक्ष प्रत्येकको मोल लेनेकी दृष्टिसे देखता था मुझे देखतेही पसंद करके अपने घरमें चुपकेसे भिजवादिया और शेषको बादशाहके सामने लेगया। मेरे बापने जब मुझे उनमें न देखा तो सबको बिदाकिया। यह

सबचाल मेरेही लिये चली गई थी अब यह विख्यात किया है कि शाहजादी बहुत बीमारहै, यदि मैं न गई तो कोई दिनमें मेरे मरनेका समाचार सारे देशमें फैलजायगा। ऐसा करनेसे बादशाहकी दुर्नामता न होगी परन्तु अब मुझको यह सन्देह है कि टापूका अध्यक्ष मुझसे कुछ और आशा रखता है तथा सदाही साथ सोनेको बुलाता है मैं सम्मत नहीं होती। वह कहता होगा कि एक न एक दिन यह सम्मत होही रहैगी। परन्तु मैं घबडाती हूं कि ऐसे कहाँ तक निबहैगी? अतएव मैंने भी यह निश्चय कर लिया है कि यदि मुझसे वह कुछ और मीन मेख करेगा तो अपने प्राण देदूंगी परन्तु तुम्हारे मिलजानेसे एक और युक्ति सूझी है। इस युक्तिके सिवाय दूसरा कोई उपाय उद्धारका दिखाई नहीं देता। मैंने कहा बतलाओ तो सही वह कौनसी युक्ति है तो उसको किया जायगा। उत्तर दिया कि परिश्रम और चेष्टा करोगे तो सब कुछ हो जायगा। मैंने कहा कि मैं आज्ञाकारी हूं, कहो तो आगमें कूदपडूं, सीढी पाऊं तो तुह्मारे लिये अकाशमें चला जाऊं। मलकाने कहा कि तुम यहांके उस बडे मन्दिरमें जाओ जहां हमारे बडे देवता विराजमान हैं। लोग जहांपर जूते उतारते हैं वहां एक काला टाट पडा रहता है इस देशकी यह रीतिहै कि जो कोई निर्धन या दीन जाता है उस टाटको ओढकर वह जूतियां रखनेकी उसजगपर वैठ जाता है। जो लोग दर्शनको आते हैं अपनी सामर्थके अनुसार उसे कुछ देते हैं जब दो चार दिनमें धन एकत्र होता है तब बडे देवताकी ओरसे उसको सिरोपाव देकर विदा कर देते हैं और वह व्यक्ति धनवान होकर चला जाताहै टाट ओढनेके कारण कोई नहीं जानता कि यह कौन था। तू भी जाकर वहीं

बैठ और हाथ मुँह छिपाले, किसीसे बोलनाभी मत तीन दिनके पीछे पुजारी और अधिष्ठाता कैसाही तुझको धन सम्पत्ति दें पर तू वहांसे कदापि मत उठियो और कहना कि मुझे रुपये पैसेकी आवश्यकता नहीं मैं तो अपना न्याय कराने आया हूं यदि पुजारी लोगोंकी देवमाता न्यायकरे तो भला है नहीं तो बडे देवता मेरी पुकार सुनेंगे। जबतक वह देवमाता तेरे पास न आवै तबतक तू किसीके माननेसे मत मानियो। फिर बिवश होकर वह स्वयं तुझारे पास आवेगी। उस वृद्धाकी आयु २४० वर्षकी है और उसके ३६ पुत्र इस बडे मंदिरके अधिकारी हैं। देवताकी वह बडी भक्ति रखती है और मंत्र जपकर सिद्ध होगई है। यही कारण है जो सब छोटेबडोंपर उसकी आज्ञा चलती है। उसका दामन पकडकर कहना कि हे माता! यदि आप मुझे सताये हुए यात्रीका न्याय दयादृष्टिसे न करैंगी तो मैं बडे देवताजीसे पुकार करूंगा फिर वह कृपा करके तुमसे कहेंगे कि इसके ऊपर दया करो। फिर तू उससे इस प्रकार अपना वृत्तान्त कहना कि मैं अजमदेशका रहनेवालाहूँ. बडे देवताजीका दर्शन करनेके लिये चले कोसों से यहां पर आया। कई दिन तक आनंद पूर्वक रहा। मेरी बीबीभी मेरे पास आई थी, वह भी युवाहै और सूरत शकलकी भी अच्छीहै. नहीं कह सकता कि टापूके अध्यक्षनें उसे क्यों कर देखा? और मुझसे छीनकर उसे अपने घरमें डाललिया हम लोगोंका यह नियम है कि जो व्यक्ति हमारी स्त्रीको देखे या हरण करले जैसे बनै वैसे हम उसको मार डालते हैं और उससे स्त्रीको ले लेतेहैं वश नहीं चलता तो भोजन पान छोड देतेहैं, क्यों कि जबतलक वह जीतारहै वह औरत अपने पति के साथहै, मैं विवश होकर यहां आयाहूं, देखो अब तुम क्या

न्याय करती हो? जब शाहजादीने यह सब बातें मुझे लिखा पढ़ा दीं, तो मैं विदा होकर उस पतनालेके मार्गसे निकलगया और जाली ज्यों की त्यों लगादी। प्रभात होतेही मन्दिरमें गया और काले टाटको ओढ़कर बैठा तीन दिनमें इतना कपड़ा रुपया और सोना चांदी मेरे निकट इकट्ठा होगया कि ढेर लग गया। चौथे दिन वहांके पुजारी गाते बजाते हुए मेरे लिये शिरोपाव लाये और विदा करने लगे। मैं सम्मत न हुआ और बड़े देवताकी दुहाई दी और कहा कि मैं धनका अभिलाषी नहीं वरन न्यायके लिये यहांके पुजारी और देव माताके पास आयाहूं। जब तलक अपनी मनोकामना न पाऊंगा यहांसे न जाऊंगा। यह सुनकर पुजारी लोग उस वृद्धमाताके पास गये और मेरा वृतान्त सुनाया पश्चात उसके एक पुजारी आनकर मुझसे कहने लगा कि चलो तुम्हें माता बुलातीहै। उस टाटको उसही भांतिसे ओढे हुए मैं मन्दिरकी ओरगया तो क्या देखताहूं कि एक रत्नजटित सिंहासनपर देवताकी मूर्ति प्रतिष्ठितहै। वहां एक सुन्दर कुरसी बिछीथी उसके ऊपर देवमाता विराजमान थी, इधर उधर तकिये लग रहे थे। दांई बांई ओर दो लडके खडे थे वृद्धामाताने मुझे आगे बुलाया मैं विनय पूर्वक गया और हाथ जोडकर खडा होगया। उसने मेरा वृत्तान्त पूछा, मैंने शाहजा- की शिक्षाके अनुसार सब कह सुनाया। सुनकर उसने कहा .. निःसन्देह तुम लोग अपनी स्त्रियोंको परदेमें रखते हो। ने कहा ईश्वर तुह्मारा भलाकरे। वृद्धा बोली कि मैं अभी आज्ञा देती हूं कि टापूका अध्यक्ष तत्काल तेरी स्त्रीको साथ लेकर आवेगा। उसको मैं ऐसी शिक्षा दूंगी कि दूसरी बार कोई ऐसा कार्य न करे और डरे। अपने लोगोंसे पूछने लगी कि टापूका

अध्यक्ष कौन है उसको इतना साहस होगया कि पराई स्त्रीको बरजोरी हरण करले। लोगोंने उसका नाम बताया। फिर अपने निकटस्थ लडकोंसे कहाकि जल्दी इस मनुष्यको साथ लेकर बादशाहके पास जाओ और मेरी ओरसे कहो कि " बडे देवताजीकी आज्ञा है कि टापूका अध्यक्ष मनुष्योंपर अत्याचार करता है, इस दीनकी स्त्रीको उसने छीन लिया, वह बडा अपराधी है। शीघ्र इसका माल इसको दिलाया जावे। यदि इस आज्ञाका पालन नहीं होगातो आजही रातको सर्वनास होजायगा और हमारे कोपमें पड़ेगा "। वे दोनों लडके उठकर मंडपसे बाहर आये और सवार हुए बहुतसे मनुष्योंके साथ धूमसे सवारीउठी। जहांपर उन लडकोंका पांव पडता था, वहांकी धूरिको सब लोग उठाकर अपने माथेपर रखते थे इस प्रकारसे बादशाहके किले तक गये,उस समय बादशाह नंगे पांव सत्कार करनेके लिये आया और उनको अत्यंत प्रतिष्ठाके साथ लेजाकर अपने निकट सिंहासन पर विराजमान किया फिर पूछाकि आजके शुभागमनका क्या कारण है? आज्ञा कीजिये। तब उन दोनों सुकुमारोंने देवमाताका सन्देशा कहा और देवताके क्रोधसे राजाको डराया। बादशाहने भयभीत होकर कहाकि बहुत अच्छा यह कहकर सेवक लोगोंको आज्ञा दी कि उस स्त्रीके सहित टापूके अध्यक्षको यहां लेआओ तब मैं उसअध्यक्षको दंड दूंगा यह सुनकर मैं घबडाया और सोचनेलगाकि यह बात अच्छी नहीं हुई जो अध्यक्ष शाहजादीको साथ लावेगा तो भेद खुल जायगा और मुझपर बडी आपत्ति आवेगी। यह विचार कर ईश्वरको मनाने लगा परन्तु मुँह पीला पडगया और शरीर कांपने लगा लडकोंने मेरी यह गति देखकर सोचाकि यह आज्ञा इसकी

अभिलाषाके अनुसार नहीं हुई इसलिये उठ खडे हुए और झिडक-
कर बादशाहसे कहाकि क्या तू पागल होगयाहै जो देवताकी आ-
ज्ञा भंग करताहै जो दोनोंको बुलाकर खोजकरेगा-क्या हमारे बच-
नको झूंठ समझा? सावधान अब तुझपर ईश्वरी मार पडेगी। अब तू
जान और तेरा काम जानें, हमने तो अपना सँदेशा भुगता दिया
लडकोंके ऐसा कहने से बादशाहकी बडी दुर्दशा हुई वह हाथ-
जोड कर खडा होगया और अत्यंत गिडगिडा कर बिनय करने
लगा परन्तु वह दोनों लडके तबभी नहीं बैठे और खडे रहे। उस
समय वहांपर जितने सभ्य या नौकर चाकर बर्त्तमान थे वह
सबही टापूके अध्यक्षकी निन्दा इस प्रकारसे करने लगे कि वह
बड़ा अत्याचारी, कुटिल और व्यभिचारी है। उसके क्रूर करमों
का वरणन करते हुए लाजकोभी लाजआती है। जो कुछ देव-
माताने कहला भेजा वह उचितहै इसलिये कि बडे देवताकी आ-
ज्ञाहै उसमें कुछ भी मिथ्या नहीं। बादशाहने जब सबसे एकही
बातसुनी तब अपनी समझपर पश्चाताप करने लगा और मुझे
वस्त्राभूषण भेंटमें दे एक परवाना मोहर सहित लिखदिया और
एक परचा देवमाताको लिखा उन लड़कोंके आगे बहुतसी
भेंट रक्खी मैं प्रसन्न होकर मन्दिरमें आया और उस वृद्धाके पास
गया बादशाह का जो पत्र देवमाता के पास आयाथा उ-
.. यह आशय था कि आज्ञाके अनुसार इस व्यक्ति को टापू
, अध्यक्षको मारडालने का अधिकार दिया गया और उस
.ी सम्पत्तिकाभी यही स्वामी हुआ आशाकरताहूं कि मेरा अ-
पराध क्षमा हो। देवमाताने प्रसन्न होकर आज्ञादी की मन्दिर-
में उत्सव हो और पाँचसौ सिपाही मेरे साथ करके कहाकि टा-
पूके अध्यक्षको पकड़के इस व्यक्तिको सौंपदो, फिर जैसी इस-

की इच्छा हो उसके साथ वर्त्ताव करे। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति महलमें न जाय और अध्यक्षकी समस्त सम्पत्ति इसको मिलै। जब यह तुम लोगोंको विदा करै तब इससे एक पत्र लिखवालाना। यह कह देवताजी की ओरसे मुझको शिरोपावदिया और बिदाकिया। जब मैं टापूमें पहुंचा तब एक आदमी टापूके अध्यक्षको समाचारदिया, वह घबड़ागया। मैं क्रोधमें भर रहाथा इस कारण वहां पहुंचतेही उसकी गर्दन पर एक तलवार जमाई कि उसका शिर धड से अलग होगया फिर वहांके कर्मचारियों को पकडवाकर सब कागज पत्र लेलिये और मैं महलमें पहुंचा। शाहजादीसे साक्षात् हुआ परस्पर गले मिलकर रोये और ईश्वरका धन्यवादकिया मैंने उसके और उसने मेरे आसूं पोंछे। फिर बाहर गद्दी पर बैठकर कर्मचारियों को पुरस्कार दिया और सबको उनके पदपर स्थित किया। और बादशाहकी भेंटकेलिये उत्तमोत्तम वस्त्र और बहुतसी धन सम्पत्ति भेजी। मंदिरके पुजारियोंकोभी बहुतसा धन दिया। फिर एक सप्ताहके पीछे मैं उस मन्दिरमें गया और देवमाताके आगे भेंट रक्खी तब उसनेभी मेरा बहुत सन्मान किया। तदुपरान्त मैं बादशाहके दरबारमें गया और वह सब अत्याचार उसको सुनादिये जो टापूके अध्यक्षने प्रजापर कर रक्खेथे, इस कारणसे बादशाहके समस्त दरबारी और कर्मचारी मुझसे प्रसन्नहुए। बादशाहनेभी थोड़ीसी भूमि मुझकोदी। दरबारसे बाहर आनेके समय कर्मचारियोंको मैंने इतना धन देकर प्रसन्नकिया कि वह मेरा राग गानेलगे विशेष कहनेसे क्याहै मैं मालामाल होगया और आनंद पूर्वक मलकाके साथ रहने लगा। मेरे न्यायसे समस्त प्रजा प्रसन्नथी। महीनेमें एक-

बार उस मंदिरके दर्शनको जाता और बादशाहके पासभी जाया करताथा दिन २ बादशाहकी ओरसे अधिक सत्कार होताथा फिर मुझे अपने दरबारियोंमें लेलिया बिना मेरी सम्मतिके कोई भी कार्य नहीं होताथा, निश्चिन्ततासे जीवन व्यतीत होनेलगा परन्तु ईश्वर जानताहै कि सदा इन दोनों भाइयोंकी चिन्ता जीमें रहतीथी मैं बिचारताथा कि वह कहां होंगे और किस प्रकार होंगे। दो वर्ष पीछे सौदागरों का एक समूह जेरबादसे उस देश में आया वह सब आजमके देशको जाया चाहतेथे उन्होंने चाहा कि नदीके मार्गसे अपने देशको जाँय वहां का यह नियमथा जो कोई सौदागर आता वह प्रत्येक देशका उत्तमोत्तम पदार्थ मेरे पासलाता। दूसरे दिन मैं उसके मकानपर जाता और उस की प्रतिष्ठा करके यात्राका परवाना देदेताथा। इसही भांति से वह जेरबाद देशके सौदागरभी मुझसे मिलने आये दूसरे दिन मैंभी उनके डेरेमें गया देखाकि दो आदमी फटे पुराने कपड़े पहने गठरियां सिरपर उठाकर मेरे सामने लाते और मेरे देख-लेनेपर फिर उनको उठाकर लेजातेहैं और बड़ा परिश्रम कररहे हैं मैंने ध्यानसे देखकर अपने दोनों भाइयोंको पहचाना। लाज आई और अपने घरको चलागया। आदमियों से कहाकि इन दोनों मनुष्यों को मेरेपास लेआना। जब आगये तो फिर उन-को अच्छे २ वस्त्र पहराये और अपने पास रक्खा। इन दुष्टों ने पुनर्वार मेरे मारनेका बिचारकिया एकदिन आधीरातके समय सबको असावधान पाकर चोरोंकी भांति यह मेरे सिरहाने आ पहुँचे मैंने प्राणजाने के डरसे चौकीदारोंका पहरा द्वारपर रक्खा था और यह स्वामिभक्त कुत्ताभी मेरी खाटकी पट्टीके तले सो-ताथा जैसेही इन्होंनें म्यानसे तलवार निकाली वैसेही कुत्तेने

भोंककर इनपर आक्रमणकिया उसके शब्दसे सब जागपड़े मैं भी घबड़ाकर चौंका। आदमियोंने इनको पकड़ा तो ज्ञातहुआ कि यही भाई साहबहैं, सबही इनको धिक्कार देने लगे, इतने सन्मानपर भी जब इनका यह चाल चलन रहा तबमैं भी डरगया। कहावतहै कि एक अपराध! दो अपराध!! तीन अपराध!!! फिर यह निश्चयकिया कि अब इनको कैदकरूं। कारागार में भेजूं तो कौन इनकी खोजखबर लेगा? बिचारे भूँख प्यासके मारे मरजांयगे या कोई और रूप लांयेंगे। पींजरेमें इसही कारणसे रक्खाहै कि सदा मेरी आंखोंके आगे रहेंगे, यदि आगे न रक्खूं तो न जाने क्या सोचें समझें। इस स्वानकी प्रतिष्ठा इसही कारणसे कीगई कि इसने कईबार मेरे प्राण बचाये और सब अवस्थाओंमें साथरहा। मेरा यही वृतान्तहै जो श्रीमान् को सुनाया अब आप को अधिकार है कि वधकीजिये अथवा छोड़िये!

मैंने यह सुनकर उस सौदागरकी वडी प्रशंसा की और कहा कि तेरे प्रेममें कोई सन्देह नहीं और इनकी निर्लज्जता व क्रूरपनमेंभी कोई त्रुटि नहीं है। सत्यहै कुत्तेकी पूंछको बारह वर्ष तक नलकीमें रक्खो परन्तु वह टेढीही निकलतीहै। फिर मैंने कहा कि कुत्तेके गलेमें जो यह बारह लाल पडेहैं अब मैं इनका वृत्तान्तभी श्रवण किया चाहताहूं।

आजुरवाव जानके सौदागर वच्चेकी कहानी।

सौदागरने कहा कि हे महाराज! आप दीर्घायुहो। उसी टापूमें जहांका मैं हाकिमथा· तीन चार वर्षके पश्चात् एक दिन अपने ऊंचेवाले स्थानेपर बैठाहुआ प्रकृतिका कौतुक देख रहाथा अचानक उस जंगलमें जहाँ आदमीका नामभी नहीं था दो

आदमी दिखाई दिये। मैंने दुरवीन लेकर देखा तो उन मनुष्योंका आकार कुछ अद्भुत प्रकारकाथा। सेवकलोगोंको उनके बुलानेके लिये भेजा जब वे आये तो स्त्रीको तो मलकाके पास भेज दिया और मर्दको सामने बुलाया वह जवान बीस बाईस वर्षकाथा, पूरी २ रेखभी नहीं निकलीथीं परन्तु धूपकी गरमीसे उसका रंग कालासा होरहाथा। उसके कंधेपर तीन चार बर्षका एक लडका बैठाथा, केश और नखके बढ जानेसे उसका आकार वनमानुषकी समान ज्ञात होताथा। मैंने उससे बिस्मित होकर पूछा कि तू कौनहै और किस देशका निवासीहै और तेरी यह अवस्था क्याहै तब वह मनुष्य फूट २ कर रोने लगा और हमियानी खोलकर मेरे आगे पटकदी और बोला कि ईश्वरके वास्ते मुझे कुछ भोजन तो दो। बहुत दिनसे घास पात खाता चला आताहूं, शक्तिका मुझमें नामभी नहीं है मैंने तत्काल उसको भोजन मँगवा दिये वह खाने लगा। इसही अवसरमें मेरा भण्डारी उसकी स्त्रीके पाससे जो महलमें बैठीहुईथी कई थैलियें ले आया मैंने उन सबको खुलवाया तो उनमें बडे२ मोलके रत्न और लाल देखे। उसमेंका एक २ लाल एक २ बडे राज्यके मोलकाथा। लालके प्रकाशसे मेरा सम्पूर्ण स्थान प्रकाशमान होगया जब उसने भोजन किया और मदिराका एक ... पिया तब सावधान हुआ मैंने पूछा यह पत्थर कहाँसे ... पास आये तब उसने उत्तर दिया कि मेरा स्थान आज़रबाव जाँ विलायतमें है, मा बापसे अलग होकर मैंने बडी २ कठिनाई उठाई और बहुत समयतक टक्कर मारतारहा, कईबार मौतके साथ जूझ २ कर बचाहूं। मैंने कहा कि अपना पूरा२ वृत्तान्त कह तब मैं समझूं तब वह इस प्रकारसे कहने लगा कि मेरा बाप

एक सौदागरथा। वह सदैव भारतवर्ष, रूम, रूस और इङ्गलैण्डकी यात्रा किया करताथा जब मैं दशबर्षका हुआ तब बाप हिन्दुस्थानको चला। मुझे अपने साथ ले जाना चाहा। माता, भाई और बुआने बहुतेरा समझाया कि अभी यह लडका यात्राके योग्य नहीं हुआ; पिताजीने नहीं माना और कहा कि मैं बूढा हुआ जो यह मेरे सामनेही नहीं सीखा तो कब सीखेगा? यह कहकर मुझे साथ ले गमन किया मार्ग अतिक्रमण करके जब भारतवर्षमें पहुँचे तब कुछ सौदा वहाँ बेंचा फिर मैं वहांके उत्तमोत्तम पदार्थ लेकर जेरबादके देशको गया यहभी यात्रा मंगलसे बीती। वहां भी कुछ बेंच कुछ खरीद करके जेरबादके देशको गया, कुछ मार्ग अच्छी तरह कटगया. एक दिन आधीरातको आँधी आई, मूसलधार पानी पडने लगा। आकाश और पृथ्वीमें अंधकार आगया, जहाजके पाल टूटगये, खिवइये शिर पीटने लगे। दशदिनतक हवा और लहर जिधर चाहती थी उधर जहाजको लेजाती थी। ग्यारहवें दिन एक पहाडसे टक्कर खाकर जहाज खंड २ होगया यह नहीं ज्ञात हुआ कि बाप और नौकर चाकर आदिक कहां गये मैंने अपने लिये एक तख्तेपर बैठे देखा तीन दिन तीन रात तक वह तख्ता बराबर बहता हुआ चलागया चौथे दिन किनारे जा लगा। मुझमें केवल प्राणही शेषथा। तख्तेसे उतरकर घुटनों चला और किसी न किसी प्रकार पृथ्वीपर पहुँचा. दूरसे खेत दिखाई दिया, वहां बहुतसे आदमी एकत्र थे। वह काले और नंगे धड़ंगे थे। मुझसे कुछ नबोले, इसके अतिरिक्त मेरीसमझमें उनकी भाषाभी नहीं आती थी। वह खेत चनोंका था वे आदमी आगका अलाओ जलाकर चनोंके होलेकररहेथे और खातेथे संकेतसे कहा

कि तुम भी खालो मैंने भी एक मुट्ठी उखाड़कर भूने और खाने लगा, थोड़ासा पानी पीकर एक कोनेमें सो रहा कुछ देरके पीछे जब जागा तो उनमेंसे एक व्यक्ति मेरे पास आया और राह दिखाने लगा मने थोडेसे चने और उखाड लिये और उस मार्ग-पर चला। वहां एक बड़ा भारी रेतीका मयदान था जिसको प्रलयका लीन सूर्यका तपा हुआ मार्ग कहना चाहिये, मैं वही चना खाता हुआ चला जाता था। चार दिन पीछे एक किला नजर आया जब पास गया तो पत्थरका एक बहुतही ऊंचा कोट देखा। उसकी लम्बाई चौड़ाई दो कोसकी थी द्वारपर बड़े २ किवाड़ लगरहे थे, ताला पड़ा था, परन्तु मनुष्यका चिन्ह भी नहीं पाया वहांसे आगे चलकर एक टीला देखा, उसकी धूरि सुरमेके रंगकीसी थी, उस टीलेके पार होतेही एक बड़ा नगर दिखाई दिया। चारों ओर परकोटा बना हुआ था। बहुतसे कंगूरे बने थे। नगरकी एक ओरको एक रमणीक नदी बहती थी। मैं जाते २ द्वारपर गया और ईश्वरका नाम लेकर चरण उसके भीतर रक्खा वहां एक व्यक्तिको देखा जो उत्तम पहरावा पहिर रहाथा जैसेही मुझको अपरिचित यात्री देखा औरईश्वरका नाम सुना तो मुझे बुलाया मैंने जाकर प्रणाम किया अत्यंत कृपासे प्रणामका उत्तर दिया और खानेके समस्त पदार्थ मंगवाकर कहा कि इसमेंसे कुछ [illegible]। मैंने थोडासा खाया और पानीपीकर फिर सोरहा। रात [illegible]नेपर मैं उठा और पुनर्वार भोजन किया फिर मुझसे कहा कि [illegible]म्हारा वृतान्त क्याहै सो मुझसे कहो। मैंने यथार्थ२सब वृतान्त [illegible]न दिया। तब उसने कहा कितू यहां क्यों आया? मैंने कहा कदाचित यह दिवाना है मैं बहुत दिन के पीछेबस्ती की सूरत देखी है, ईश्वरने यहां तक पहुंचायाहै और तू कहता है कि क्यों

आया, उसने उत्तर दिया कि अबतो तुम आराम करो कल जो कुछ कहना होगा सो कह लेना। प्रभात होतेही उसने मुझसे कहा कि कोठरी में फावड़ा चलनी और तोबड़ा है उसको बाहर लेआ। मैंने सोचा कि हे भगवान! यह भोजन खिला कर न जाने अब क्या परिश्रम करावेगा? बिवशहो फावड़ा आदि निकाल कर उसके सामने लाया तब उसने आज्ञादी कि उस टीलेपर जा गढ़ा खोद वहाँसे जो कुछ निकले उसे चलनी में छान। यदि नहीं छाना जायतो इस तोबड़े में भर कर मेरे पास ले आना। मैं वहांपर गया और गढ़ा खोदा जो कुछ निकला उसे छानकर तोबड़े में डाला तो देखा कि रंग २ के लाल हैं, उनके प्रकाश से आंखें चकाचौंध खा गई, मैं उस थैलेको मुंह तक भर कर उस मित्रके पास लेगया देख कर बोला जो इसमें भरा है सो तू ले और यहांसे चला जा क्योंकि तेरा रहना इस नगर में भला नहीं। मैंने उत्तर दिया कि आपने अपनी ओर से बड़ी कृपा की, कंकड, पत्थर तो दिया, परन्तु यह मेरे किस अर्थका है जब भूंख लगेगी तो क्या खाऊंगा। यह तो खाने पीनेके कामके नहीं तब वह मर्द हँसकर कहने लगा कि मुझको तुझपर शोक होता है तू भी हमारेही नगर का निवासी ज्ञात होता है इस कारण कहता हूँ कि यहाँ मत रह। जो तेरी इच्छा नगरमेंही जानेकी है तो मेरी अंगूठी लेजा बाजार के चौकमें एक व्यक्ति स्वेत वस्त्र पहरे हुए बैठा होगा. उसकी सूरत मुझसे मिलती है. मेरे उस बडे भाईको तुम यह मोहर दे देना तो वह तुह्मारी रक्षा करेगा। जैसा वह कहै वैसा करना, नहीं वृथाही मारा जायगा। मेरी आज्ञा यहीं तक है नगर मेरी सीमासे बाहर है। मैं वह अंगूठी लेकर और प्रणाम कर नगरमें

गया; नगर बहुत अच्छाथा, गली कूंचे साफ़ थे, स्त्री पुरुषों में लाज बाज नहीं सबही परस्पर लेन देन करते थे मैं यह कौतुक देखता हुआ जब चौराहेमें पहुंचा तो वहां ऐसी धूम थी कि थाली एक पारसे दूसरी पारतक फेंकने से चली जाय। इतने आदमी एकत्र थे कि मार्ग चलना कठिन था। कुछ कमभीड होने पर मैं ठेलमठेला करता हुआ आगेको गया और उस पुरुषको देखा, वह जड़ाऊ चौकी पर बैठा हुआ था, उसके सामने एक चकमक रक्खा था मैंने प्रणाम करके वह मोहरकी अंगूठी उसको दी; उसने क्रोध की दृष्टिसे मेरी ओर देखा और कहने लगा कि तू क्यों यहांपर आया, और अपने लिये बिपत्तिमें डाला, मेरे मूर्ख भाईने तुझे निषेध नहीं किया। तब मैंने कहा कि साहब! उन्होंने तो बरजा था पर मैंने नहीं माना और सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। तब वह व्यक्ति उठा और मुझे साथ लेकर घरकी ओर चला उसका स्थान राजभवनकी तुल्य था और बहुतसे सेवक अपने२ कार्यमें दत्तचित्त थे। फिर एकान्तमें जाय उसने कोमल वाणीसे कहा कि हे बेटा! तैंने यह क्या मूर्खताकी अपने पांवमें आपही कुल्हाडी मारी। कोई भी इस मायापुरीमें आता है? मैंने कहा कि अपना वृत्तान्त मैं प्रथमही कह चुकाहूं, भाग्य यहांपर ले आया, परन्तु कृपा करके यहांकी रीति नीति मुझे बतला दीजिये तो जानलूं कि इस वास्ते आप यहां पर मेरा रहना भला नहीं समझते। तब उस महाशयने इस प्रकारसे कहा कि इस नगरके समस्त सम्भ्रान्त लोग बादशाहके साथ मधे हुए हैं इनका विचार और सम्प्रदाय भाव अद्भुत प्रकारका है। यहांके मन्दिरोंमें बहुतसी ऐसी मूर्तियें हैं कि वे प्रत्येक व्यक्तिका नाम धाम व जाति इत्यादिक बता देती हैं। अतएव जो कोई दीन

यात्री आता है, बादशाहको समाचार पहुँचता है वह उसे मंडपमें ले जाकर मूर्तिके आगे वमन कराता है। उसने दंडवतकी तब तो भला नहीं तो उस यात्रीको नदीमें डुबा देता है। यदि यात्री नदीसे निकलकर भागना चाहै तो उसके दो अंग ऐसे बडे हो जाते हैं कि बोझके मारे वह कदापि चल फिर नहीं सकता, न जाने यह क्या जादू है। मुझको तेरी युवा अवस्थापर दया आती है इस लिये एक ऐसी युक्ति करताहूं कि जिस्से कुछ दिन तक तो तू जीवित रहै और विपत्तिसे बचे। मैंने पूछा कि उद्धार की क्या युक्ति सोचीहै तब उसने कहा कि मैं मंत्रीकी पुत्रीसे तेरा विवाह कराटूंगा मैंने उत्तर दिया कि मंत्री अपनी पुत्रीको मुझसे दीन यात्रीको किस प्रकार देगा? वह कहने लगा कि बादशाहका धर्म स्वीकार कर लेनेपर मंत्रीकी पुत्री तो क्या स्वयं बादशाहकी बेटी भी उसको मिल सकती है। मेरा बादशाहके यहां बहुत विश्वास है, इसही लिये वहांके समस्त कर्मचारी मेरा आदर सत्कार करतेहैं। वे सब सप्ताहमें दो दिन मंदिरोंमें दर्शनकेलिये जातेहैं और पूजा अर्चन करते हैं। कल सब लोग इकठ्ठे होंगे मैं तुझे भी लेजाऊंगा यह कह खिला पिलाकर सुलारक्खा और प्रभातहोतेही मुझे साथले मंदिर की ओर चला वहां जाकर बहुतसे आदमियों को आतेजाते हुए पाया कोई पूजा करताथा कोई प्रणाम करताथा। बादशाहभी धनीलोगों के साथ बैठा पूजाकरनेमें दत्तचित्तथा। बहुतसे सुन्दर २ लड़की लड़के चारोंओर श्रेणीबद्ध खड़ेथे तब उस मित्रने मुझसे कहाकि अबजो मैं कहूं सो कर मैंने स्वीकार किया तब उसने कहाकि पहले बादशाहके चरणोंको चुम्बनकर फिर मंत्री का वस्त्र पकड़। मैंने वैसाही किया, उस समय बादशाहने पूछाकि यह कौनहै और क्या कहताहै? तब उस युवाने

कहा कि यह मेरे कुटुम्ब का मनुष्य श्रीमान्के चरणों का दर्शन करने के लिये बड़ीदूरसे आयाहै इस अभिलाषासे कि मंत्रीउसको अपना दास बनाले। यदि देवताकी आज्ञा और आपकी इच्छाहो? बादशाहने कहाकि यह हमारे धर्मको स्वीकार करेगा तो उचितहै। उनके ऐसा कहतेही नगाड़े बजने लगे और मुझे शिरोपावदिया। फिर एक काली रस्सी मेरे गलेमें डाल खेंचते हुए उस मूर्तिके सिंहासन के आगे लेजाय प्रणाम कराकर सन्मुख खड़ाकिया तब उस प्रतिमासे यह शब्द निकले कि "हे यवन! अच्छा हुआ जो तू हमारे धर्ममें आया।" यह सुनकर सबलोग पुकारे कि धन्यहो! धन्यहो!! संध्याकालके होनेपर बादशाह और मंत्री एकसाथ मंत्रीके स्थानमें आये और मंत्रीने अपनी पुत्रीको अपने कुलकी रीतिके अनुसार मुझे देदिया, दान दहेजभी बहुतसा मिला और इस प्रकारसे कहने लगे कि देवताकी आज्ञाके अनुसार इसको हमने तुम्हारी सेवामें दिया फिर एक स्थानमें हम दोनों को रक्खा। उस सुन्दरीको मैंने देखा तो वास्तवमें वह अप्सराकी भांति सुन्दरथी, अधिक क्याहै जिसको पद्मिनी कहते हैं, वह वही थी। मैं उसके साथ आनंदसे रहा दूसरे दिन प्रभात होतेही बादशाहकी सभामें गया। बादशाहने शिरोपाव दिया और आज्ञादी कि सदैव दरबारमें वर्त्तमान रहा ॱ। कुछदिन पीछे मुझे बादशाहने अपना अन्तरंग बनालि- और बहुधा मुझे पुरस्कारभी दिया करतेथे। यद्यपि किसी ॱतिकी मुझको अपेक्षा न थी, क्योंकि मेरी स्त्रीके पास बहुत ॱ धनथा। दो वर्ष बड़े आनंदके साथ व्यतीतहुए। ईश्वर की कृपा से स्त्री गर्भवती हुई। पूरेदिन होनेपर दाई जनानेको आई तो पेटमेंसे मरा लड़का उत्पन्नहुआ। उसका विष पेटमें फैलने के

कारण जच्चाभी मरगई । शोकके मारे मैं पागल होगया कि यह क्या विपत्ति आई उसके सिरहाने बैठाहुआ रोताथा कि महलमें से रोनेका बडा भारी कुलाहल हुआ । और चारों ओरसे स्त्रियें आने लगीं; जो आती एक दुहत्थड मेरे शिरपर मारती और सब शरीरको नंगा करके मेरे सामने खडी रहतीं । इतनी स्त्रियें इकट्ठी होगईं कि मैं उनके झुंडमें छिपगया, प्राण निकलनेहीकोथे इतनेमें पीछेसे किसीने वस्त्र पकडकर खेंचा पीछे फिरकर देखा तो उसही अजमके मनुष्यको पाया जिसने मेरा विवाह करायाथा वह मुझसे कहने लगा कि अरे मूर्ख ! तू किसलिये रोताहै ? मैंने कहा मेरी तो समस्त संपत्ति लुटगई, घरका विश्राम गया फिर क्यों न रोऊंगा ? फिर कहतेहो कि क्यों रोताहै ? तब उसने आक्षेप करके कहा कि अब अपनी मृत्युके लिये रो मैंने पहलेही तुझसे कहाथा कि इस नगरमें तुझे तेरी मृत्यु ले आई है, अब तेरा छुटकारा नहीं; अब तुझे मरनाही पडेगा । फिर बहुतसे लोग मुझको पकडकर देवालयमें लेगये । देखा तो बादशाह मंत्री और बहुतसी प्रजा वहाँ एकत्रहैं और मंत्री कुमारीकी सम्पत्ति भी सब धरीहै. जिस बस्तुको जो चाहताहै वह लेजाताहै और उस का मूल्य धर देताहै; इस प्रकारसे सब सामग्रीके विकजानेपर बहुत सा धन एकत्र हुआ, उस धनसे रत्न मोल लिये गये, फिर दूसरे सन्दूकमें भोजनके पदार्थ अनेक भांतिके धरे और उस स्त्रीका शरीर एक सन्दूकमें रखकर, द्रव्यका सन्दूक ऊंटपर लदवाया और मुझे भी उसपर सवार किया और रत्नकी पोटली मेरे हाथमें दी । आगे २ बाजा बजता जाता था और पीछे २ बहुतसे मनुष्य एकत्र थे । इस भांतिसे उसही द्वारसे जिसमें होकर मैं पहले दिन आया था नगरके बाहर निकला. जैसेही बाहरके प-

रिचित अध्यक्षने मुझको देखा रोने लगा, और बोला कि अरे अभागे मृत्युग्रस्त ! पहले मेरीबात न सुनी, मैंने बरजाथा। पर तेरी तो मौत आगईथी तू काहेको सुनता। मैं कुछ न बोला क्यों कि मुझपर दो शोक आन पडेथे। प्राणप्यारीका शोक अलगही कलेजेको छीलता था औरसबसे अधिक प्राणोंका भय व्याकुल कर रहा था पश्चात् उस दुर्गके पास जिसका द्वार उस दिन बंद देखा था लेगये। बहुतसे आदमियोंने मिलकर ताला खोला तब वह अरथीका संदूक व भोजन पदार्थका संदूक भीतर लेगये। फिर एक विद्वान मेरे समीप आया और समझाने लगा कि एक दिन मनुष्य उत्पन्न होता है और एक दिन मर जाता है, आवागमनका यही नियम है अब तू, तेरी स्त्री, चालीस दिनका भोजन यहाँ पर वर्तमान है इसको ले और यहाँ पर रह जबतककि देवता तुझपर कृपालु हो। मैंने क्रोधित होकर कहाकि उस देवता पर और यहां के निवासियों पर लाख बार धिक्कार है। द्वन्द होनेसे किसीके कानमें मेरा शब्द नहीं गया, परन्तु उस अज़मीने अपनी भाषामें कहा कि चुप रह ! जो कुछभी कहेगा तो अभी तुझको जला देंगे, जो तेरे भाग्यमें था सो हुआ अब ईश्वर की कृपा का अभिलाषी रह। कदाचित परमेश्वर तुझे जीवित निकाले अंतमें सब लोग मुझको उस कारागारमें छोड़ कर ..र निकले और उस द्वार को बंद कर दिया उस कालमें अ.. पृथक्त्व और विवशता पर फूट २ कर रोने लगा और मृ..क पुत्रके उद्देशसे कहा कि अरे दुर्भाग्य ! जो तुझे माको मारनाही था तो इसके पेटसे किस कारण जन्म लिया फिर रोरा कर चुप का होगया। दिन चढने लगा और धूप तीखी हुई सिर चकराने लगा, प्राण निकलने लगे जिधर देखा उधर रत्नोंके

संदूक और मुरदों की हड्डियों के ढेर लगे थे तब कई एक पुराने सन्दूक ऊपर नीचे रक्खे तब दिनको धूपसे और रातको ओससे बचाव हुआ, फिर मैं पानी की खोज करने लगा। एक ओर झरनासा देखा जो दुर्ग की भीतिसे काटा गया था, मुँह उसका घड़ेकासा था कई दिन तक उस भोजन पानसे जीवन हुआ खानेके पदार्थ जो लाया था वह समाप्त होनेपर आये, ईश्वरसे प्रार्थना की वह बडा दयालु है। एक दिन फिर कोटका द्वार खुला और एक मुर्दा आया, उसके साथ एक बुड्ढा आया, जब उसे भी छोड गये तो जीमें आया कि इस बुड्ढे को मारकर इसका भोजन छीन लिया जाय। मैं एक सन्दूक का पाया लेकर उसके पास गया वह बिचारा जांघ पर शिर धरे हुए शोकाकुल बैठा था, मैंने वह पाया ऐसे बलसे उसके शिरमें मारा कि सिर फटगया और वह परलोक वासी हुआ! उसका भोजन लेकर मैं खाने लगा, बहुत दिनतक यही कार्य करता रहा। मुरदे केसाथ जो कोई जीवित आता उसे मैं मार डालता और भोजन पदार्थ लेकर आनंद के साथ खाता। बहुत दिन के पीछे एक लड़की शव(मूर्दा)के साथ आई अत्यंत सुन्दरी होनेके कारण उसको नहीं मारना चाहा उसने मुझे देखा और डरके मारे अचेतहोगई। मैं उसका भोजन उठाकर अपने पास ले आया परन्तु अकेला न खाता भूंख लगनेपर भोजन उसके निकट ले जाता और साथ मिलकर खाता-जब उस सुन्दरीने जाना कि यह मुझे नहीं सताता, तब दिन दिन उसका भय न्यून होता गया और मेरे निकट आने जाने लगी मैंने एक दिन उससे पूछा कि तू कौन है? उसने उत्तर दिया कि मैं बादशाहकेवकीलकी बेटी अपने चचाके बेटेके साथ व्याही गई। कुछ दिन पीछे उसके करेजेमें दर्द हुआ

और वह तडफ २ कर मरगया;मुझे उसके शवके साथ लाकर यहां छोड़ गएहैं। तब उसने मेरा व्यौरा पूछा,मैंने भी सब आप बीती हुई सुना दी और कहा कि भगवाननें तुझे मेरे लिये भेजाहै, वह हँसकर चुप की होरही इसही भांतिसे कई दिनमें परस्पर प्रीतिकी अधिकाई होगई और मैंने उसे अपनी जातिमें ले लिया, हम दोनों वर दुलहिनकी नांई रहने लगे, तब उसका पांव भारी हुआ और एक लडका जना,तीन बरस इसही भांतिसे बीतगए। लड़केने दूध पीना छोडा तब एक दिन बीबीसे कहा कि यहां कब तलक रहेंगे और कैसे यहांसे निकलेंगे। वह बोली भगवान निकाले तो निकलें नहीं तो एकदिन इसही रीतिसे मरजांयगे। मुझे उसके ऐसा कहने और अपने वहां रहनेपर बडी घिन आई और रोते २ सो गया, स्वप्नमें देखा कि कोई यह कहता है कि पतनालेकी राहसे निकलता है तो निकल। यह सुपना देखतेही मैं खुसीके मारे चौंकपडा और बहूसे कहाकि लोहेकी कीलें जो पुराने सन्दूक में हैं इकठ्ठी करके ले आ तो मैं भीतको फोडकर चौडा करूं। मूलबात यहहै कि मोरीके ऊपर कीलोंको रखकर मैं पत्थरोंसे ठोकता था। इस रीतिसे दिन २ ठोंकता रहा जब थक जाता तब कामको छोड देता था। एक बरसतक जान मारनेसे वह मोकला इतना बडा हुआ कि उसमें से आ-[illegible]ी निकल सके फिर मुरदोंके बक्सुकोंसे अच्छे २ लाल जवा-[illegible]बीनकर भरे और उसही रस्तेसे हम तीनों बाहर निकले। [illegible] नका नाम लिया और बेटेको कंधेपर बैठाया एक महीना हुआ कि मार्गको छोडकर डरके मारे हम जंगल पहाडोंके रस्तेसे चले आते हैं,। भूंख लगने पर घास पात खाते हैं, बात करनेकी शक्ति नहीं है, बस यही मेरी कहानी है जो तुमने सुनी।

हे महाराज! मुझे उसकी दशापर बडी दया आई निहला धुलाकर अच्छे कपडे पहराये और अपना नायब बनालिया। इधर मेरे यहां शाहजादीसे कई लडके उत्पन्न हुए परन्तु वह छुटपनमेंही मरगये एक बेटा पांच बरसका होकर मरा उसही के शोकमें मलका भी चलबसी, मुझे अत्यंत शोकहुआ और कठिनाईसे दिन काटनेलगा। जी उदास होगया और अपने देशमें जाने की इच्छा की। तब बादशाहसे प्रार्थना करके उस टापूका राज्यपाट उस युवाको देदिया जो मेरा नायबथा। इसही समयमें बादशाहभी मरगया। मैं इस स्वामिभक्त कुत्तेको और सब धन सम्पत्ति साथ लेकर नेशापूरमें आया। इस कारण कि कोई भी मेरे भाइयोंका वृतान्त न जाने मैं स्वान पूजक सौदागर के नामसे विख्यात हूं।और इसदुर्नामतासे दूना राजकर ईरान के महाराजको देताहूं। अचानक यह सौदागर बच्चा वहां गया, इसकेही द्वारा श्रीमान्के चरण कमलका दर्शन हुआ। मैंने पूछा कि तुम्हारे कोई लडका नहीं। सौदागरने कहा कि हे महाराज!यह मेरा पुत्र नहीं यह है आपहीकी प्रजा परन्तु अब मेरा स्वामी, स्वत्वाधिकारी या जो कुछ कहिये सो यही है। यह सुनकर मैंने सौदागर बच्चेसे पूछा कि तू किस सौदागर का बेटा है और तेरे मा बाप कहां रहते हैं उस लडके ने पृथ्वी को चूमा, क्षमा प्रार्थी हुआ और बोला कि दासी, श्रीमानके मंत्री की पुत्री है। मेरा पिता श्रीमान् के क्रोधसे इन्हीं लालोंके कारण "जो सौदागरका कुत्तागलेमें पहरे है" कैद में पडा है और आज्ञा यह हुई है कि जो एक वर्ष तक वह अपनी बात का प्रमाण न देगातो जानसे माराजायगा। मैंने यह सुनकर वेष बनाया और अपने लिये नेशापुरमें पहुँचा।

भगवान की कृपासे समस्त सौदागर, लाल और कुत्तेके साथ यहां पर आयाहै। श्रीमान्‌ने समस्त वृतान्त सुनलिया, अभिलाषित हूं कि मेरे वृद्ध पिता को छोडदियाजाय। मंत्री की पुत्री से ऐसा सुनकर सौदागर ने ठंढी स्वांसली और, अचेत होकर गिरपडा। गुलाब इत्यादिके छिडकनेसे चेतमें आनकर बोला कि हाय भगवान! इतनी दूरसे यह कष्ट और परिश्रम उठाकर मैं आशा करके यहां आयाथा कि इस सौदागर बचेकोमें अपना उत्तराधिकारी करके समस्त धन इसके नाम लिख दूंगा, सोमेरे बिचार परगाजपडी इसने स्त्रीहोकर मुझ पुरषको वन२में भटकाया; मेरी वही कहावत हुई कि "घर में रहे न तीरथगये: मूंड मुडाय फजीहत भये"

सौदागरकी दीनदशा देखकर मेरे हृदयमें दयाका संचार हुआ और उसके निकट बुलाय कानमें कहा कि शोकाकुलमत हो हम इसीसे तेरा बिवाह करेंगे। ईश्वर चाहेगा तो तेरे संतान होगी इस मंगलमय समाचारके सुनतेही उसको धीरज हुआ तब मैंने कहा कि मंत्रीकी पुत्रीको महलमें ले जाओ और मंत्रीको कारागारसे ले आकर उत्तमोत्तम वस्त्र पहरादो। जिस समय मंत्री आया मैंने अपना बडा बूढा जानकर गले लगाया और नये सिरेसे वजीरीपर बहाल किया।सौदागरकोभी जागीर और पद दिया फिर अच्छे महूरतमें मंत्रीकी पुत्रीसे बिवाह के निश्चित हुआ। कई वर्षमें दो पुत्र और एक पुत्री उसके उत्पन्न हुई। उसका बडा बेटा मेरे यहां सब सौदागरोंका अफसर है और छोटा मेरा बादशाहतका मंत्रीहै और वृद्ध सौदागर इस समय ईश्वरकी उपासना करता है। मैंने इसलिये यह वृतान्त तुमसे कहा कि मैंने भी रातको तुममेंसे दो साधुओंकी

आत्म कथा सुनीथी अब तुम दोनों भी जिनको अपना वृत्तान्त कहना शेष है यह समझोकी हम उसी स्थानमें बैठे हैं और मुझको अपना सेवक और इस घरको अपनी कुटी जानो, अपना वृत्तान्त सुनाकर कुछ दिनतक मेरेपास रहो जब साधुओंनें बादशाहकी ओरसे बहुत आवभगत देखी तो कहने लगे, अच्छा बाबा जब तुमने हम भिकारियोंसे प्रेमकिया है तो हम दोनों भी अपना वृतान्त कहते हैं तुम कान देकर सुनो।

इति तीसरा भाग समाप्तम्॥

॥ श्री ॥

अथ चौथा भाग।

तीसरे फकीरकी यात्राका वृतान्त।

तीसरा साधु लँगोटा बांधकर बैठा और अपनी यात्राका वृत्तान्त इस भांतिसे कहने लगा;—

दो०—सुनहु भूप वृतान्त मम, हितसो चित्त लगाय।
जो कछु बीती आपदा, सो सब देहुँ सुनाय॥
प्रेमदेव अति दुखदियो, बन २ भ्रमण कराय।
कहत सकल नहिं नेकछल, धरहु कृपा नरराय॥

यह दीन अजमदेशका राजकुमार है। मेरे पिता वहांके बादशाह थे, मेरे अतिरिक्त और कोईभी पुत्र उनके न था। युवा होनेपर मैं बादशाहके मित्रोंसे चौपड,शतरंज,ताश और छक्का खेला करता था कि कभी२ दिनभर आखेटादिमें लगा रहता था एक दिनका वृत्तान्त है कि सवारी तैयार कराके और समस्त इष्टमित्रोंको साथलेकर मयदानकी ओर निकला। पशु पक्षियोंका आखेट करता हुआ दूर निकल गया, वहांपर एक अद्भुत पर्वत [देखा] जिधर दृष्टि जाती थी फूलोंसे सारी पृथ्वी लाल रंगकी [दिख]ाई देती थी। यह समा देखकर घोडोंकी बागें डाल दी [और] धीरे २ भ्रमण करते हुए चले जाते थे। अचानक देखा कि [उस] जंगलमें एक कालाहिरन जिसपर जरीकी झूल पडी है, पावमें घूंघरू विराजमान हैं, उस जंगलमें जहां मनुष्यका चिन्ह नहीं, घास खाता फिरता है। घोडोंके खुरतानोंका शब्द श्रवण करके वह चौकन्ना हुआ और शिर उठाकर देखा धीरे धीरे

चला। मुझे उसके देखनेसे यह शौक हुआ और मित्रोंसे कहा कि तुम यहीं खडे रहो मैं उसे जीताही पकडूंगा। सावधान तुम आगे कदम न बढाइयो और न मेरे पीछे आइयो। घोडा मेरी सवारीके नीचे ऐसा पक्षीथा कि बहुधा हिरनोंके ऊपर दौडकर उनकी चौकडी भुला देता था और मैं उन हिरनोंको जीवितही पकड लेताथा;इसही विचारसे मैंने उसके पीछे घोडा दौडायावह देखकर छलांगे भरने लगा और घोडा भी उसके पीछे पवन वेगसे जाता था, परन्तु उसके पास न पहुँचा और पसीने२ होगया व मेरी जीभ भी प्यासके मारे चटकने लगी। कुछ बश न चला संध्याकाल होनेपर आया, न जानें कहाँ निकल आया। विवश हो हरिणको भुलावा दिया और तरकस में से तीर निकाल कमान संभाल ईश्वरका नाम ले उसके मारा। पहलाही तीर उसके पाँवमें लगा तब वह लंगडता हुआ पहाड़ की ओर चला यह दीन भी घोडेसे उतर पड़ा हिरनने पहाड पर जानेकी इच्छा की और मैंने भी उसका साथ दिया। कई वार चढा व उतार के पीछे एक शिखर दिखाई दिया फिर पास पहुंच कर एक बगीचा और एक सोत देखा। तदनन्तर हरिण दिखाई न दिया। अत्यंत थकित होजानेके कारण मैं हाथ पांव धोने लगा फिर उस शिखरके भीतरसे रोनेका शब्द मेरे कान में पडा। रो-रोकर कोई यह कह रहाथा। हे बच्चे! जिसने तुझे माराहो उसके कलेजे में भी ऐसाही तीर लगे और वह अपनी युवा अवस्थासे फल न पावै; ईश्वर उसको मुझसा दुखिया बनावे। "यह सुन कर मैं वहां गया, तो देखाकि एक महाशय रेशमी पोशाक पहने हुए एक गद्दीपर बैठे हैं और हिरण आगे लेटा है। उसकी जांघसे तीर खेंचता हुआ उपरोक्त शब्द कह रहा है। मैंने

हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और कहा कि। हे महाशय! यह अपराध मुझसेही बन पड़ा है। मैं यह नहीं जानता था ईश्वर के लिये मुझे क्षमा करो ? तब उसने कहा कि यदि इस अनभाषीको अनजानेमें तैनें सतायाहै तो ईश्वर तुझे क्षमा करेगा मैं पास जाबैठा और तीर निकालनेमें उसकी सहायता करने लगा वडी कठिनतासे वह तीर निकला। फिर घावमें मलहम लगाय पट्टी बांध उसको चरने के लिये छोड दिया। फिर उस वृद्धने हाथ मुंह धोकर कुछ भोजन जो उस समय वर्तमान थे मेरे आगे रक्खे। मैं खा पी कर एक खाट पर सो रहा, थकने के मारे खूव पेट भर कर सोया। उस नींद में रोने विलपने का शब्द मेरे कानमें आया। आँख खोल कर देखा तो उस स्थान में न कोई वृढा है न कोई और है मैं अकेला पलंग पर लेटा हूं और वह दालान रीता पडा है। चारों ओर देखकर मैं घबराने लगा और एक कोनेमें पर्दा पडा हुआ दिखाई दिया। वहां जाकर पर्दा उठाया तो देखा कि एक सिंहासन बिछा है उस पर एक महा सुन्दरी नारी जिसकी आयु चौदह पंदरा वर्षकी होगी बैठी हुई है। दोनों ओर को अलक दाम शोभाका विस्तार कर रहे हैं, मुखपर हास्यका विकास होरहा है, पहरावा फरंग देशकी नाई पहरे है। वह वृद्ध अपना शिर उसके चरणों में धरे हुए ...लख २ कर रोरहा है और चेत खो रहा है। उस वृद्धकी यह ...व सर्वांग सुन्दरी की महा सुन्दरताई देख कर मैं मुरझाया और अचेत होकर गिर पडा। वह वृद्ध मेरी यह दशा देखकर गुलाब जलकी शीशी लेआया और मुझपर छिडका। जब मुझे चेत हुआ तो उठा और उस मनमोहिनी के आगे जाकर प्रणाम किया. उसने हाथ उठाया न होठ हिलाया। मैंने कहा

हे चंद्र मुखी ! इतना गर्व करना और प्रणाम का उत्तर न देना किस धर्मशास्त्रमें लिखा है।

दोहा—नीको थोड़ो बोलबो, पै इतनो नहिं नार।
प्रेमी छोड़ शरीरको, जाय तदपि नहिं प्यार॥

वास्ते उस ईश्वरके जिसने तुझे बनायाहै कुछतो मुँहसे बोल। हमभी अचानक यहांपर आनिकलेहैं। पाहुनेकी पहुनई तो करो। मैंने बहुतेरी बातें बनाई परन्तु एकभी काम न आई। वह चित्र पुतलीकी भांति सबको सुनती रही। तब मैंनेभी आगे बढ़कर उसके चरणको छूनाचाहा, स्पर्शसे अंगकी कठिनाई जानपड़ी। फिर मुझको ज्ञातहुआ कि यह चंद्रमा पत्थर काटकर बनाया गयाहै। तब उस बूढ़से मैंने कहा कि मैंने तो तुम्हारे हिरनकी टांगमें तीरमारा और आपने प्रेमके बाणसे मेरे कलेजे को छेदडाला। आपकी अभिलाषा पूर्णहुई अब इसका वृतान्त भली भांतिसे कहो कि यह जादू तुमने किस कारण बनायाहै? और आप वस्तीको छोड़कर जंगलमें किस कारण से रहते हैं! अपनी बीतीहुई सब सुनाइये। जब मैंने बहुत पीछाकिया तब उसने उत्तरदिया कि इस बातने मुझेतो भटकायाहीहै क्या तूभी सुनकर उद्भ्रान्त हुआ चाहताहै। मैंने जब बहुतही विनयकी तब उसने मुझसे कहाकि "हे युवा! परमेश्वर प्रत्येक मनुष्यको इस प्रेम रोगसे बचाये रक्खे। देखोतो इस प्रेमने कैसे २ पहाड़ छाए हैं? प्रेमहीके मारे सहस्रों स्त्रियें स्वामीके साथ भस्महोकर स्वर्गको चलीगई! माधवनल. कामकंदला की कहानी किसने नहीं जानीहै। फरहादने शीरींकेलिये वन २ की कैसी धूरि छानी है. लैलीमजनूं के प्रेमको कौननहीं जानता। तू इस कथाके सुननेसे कौनसा फल पावेगा. वृथाही घरबारको छोड़कर वन २ में

हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और कहा कि। हे महाशय! यह अपराध मुझसेही बन पड़ा है। मैं यह नहीं जानता था ईश्वर के लिये मुझे क्षमा करो"? तब उसने कहा कि यदि इस अनभाषीको अनजानेमें तैनें सतायाहै तो ईश्वर तुझे क्षमा करेगा मैं पास जाबैठा और तीर निकालनेमें उसकी सहायता करने लगा बडी कठिनतासे वह तीर निकला। फिर घावमें मलहम लगाय पट्टी बांध उसको चरने के लिये छोड दिया। फिर उस वृद्धने हाथ मुंह धोकर कुछ भोजन जो उस समय वर्तमान थे मेरे आगे रक्खे। मैं खा पी कर एक खाट पर सो रहा, थकने के मारे खूब पेट भर कर सोया। उस नींद में रोने विलपने का शब्द मेरे कानमें आया। आँख खोल कर देखा तो उस स्थान में न कोई बूढा है न कोई और है मैं अकेला पलंग पर लेटा हूं और वह दालोन रीता पडा है। चारों ओर देखकर मैं घबराने लगा और एक कोनेमें पर्दा पडा हुआ दिखाई दिया। वहां जाकर पर्दा उठाया तो देखा कि एक सिंहासन बिछा है उस पर एक महा सुन्दरी नारी जिसकी आयु चौदह पंदरा बर्षकी होगी बैठी हुई है। दोनों ओर को अलक दाम शोभाका विस्तार कर रहे हैं, मुखपर हास्यका विकास होरहा है, पहरावा फरंग देशकी नाई पहरे है। वह वृद्ध अपना शिर उसके चरणों में धरे हुए विलख २ कर रोरहा है और चेत खो रहा है। उस वृद्धकी यह शा व सर्वांग सुन्दरी की महा सुन्दरताई देख कर मैं मुरझाया और अचेत होकर गिर पडा। वह वृद्ध मेरी यह दशा देखकर गुलाब जलकी शीशी लेआया और मुझपर छिडका। जब मुझे चेत हुआ तो उठा और उस मनमोहिनी के आगे जाकर प्रणाम किया, उसने हाथ उठाया न होठ हिलाया। मैंने कहा

हे चंद्र मुखी ! इतना गर्व करना और प्रणाम का उत्तर न देना किस धर्मशास्त्रमें लिखा है।

दोहा—नीको थोड़ो बोलबो, पै इतनो नहिं नार।
प्रेमी छोड़ शरीरको, जाय तदपि नहिं प्यार॥

वास्ते उस ईश्वरके जिसने तुझे वनायाहै कुछतो मुँहसे बोल। हमभी अचानक यहांपर आनिकलेहैं। पाहुनेकी पहुनई तो करो। मैंने बहुतेरी बातें बनाई परन्तु एकभी काम न आई। वह चित्र पुतलीकी भांति सबको सुनती रही। तब मैंनेभी आगे बढ़कर उसके चरणको छूनाचाहा, स्पर्शसे अंगकी कठिनाई जानपड़ी। फिर मुझको ज्ञातहुआ कि यह चंद्रमा पत्थर काटकर वनाया गयाहै। तब उस बूढ़ेसे मैंने कहा कि मैंने तो तुम्हारे हिरनकी टांगमें तीरमारा और आपने प्रेमके बाणसे मेरे कलेजे को छेदडाला। आपकी अभिलाषा पूर्णहुई अब इसका वृतान्त भली भांतिसे कहो कि यह जादू तुमने किस कारण बनायाहै ? और आप वस्तीको छोड़कर जंगलमें किस कारण से रहते हैं ! अपनी बीतीहुई सब सुनाइये। जब मैंने बहुत पीछाकिया तब उसने उत्तरदिया कि इस बातने मुझेतो भटकायाहीहै क्या तूभी सुनकर उद्भ्रान्त हुआ चाहताहै। मैंने जब बहुतही विनयकी तब उसने मुझसे कहाकि "हे युवा ! परमेश्वर प्रत्येक मनुष्यको इस प्रेम रोगसे बचाये रक्खे। देखोतो इस प्रेमने कैसे २ पहाड़ छाए हैं ? प्रेमहीके मारे सहस्रों स्त्रियें स्वामीके साथ भस्महोकर स्वर्गको चलीगई ! माधवनल कामकंदला की कहानी किसने नहीं जानीहै। फरहादने शीरींकेलिये बन २ की कैसी धूरि छानी है, लैलीमजनूँ के प्रेमको कौननहीं जानता। तू इन कथाके सुननेसे कौनसा फल पावेगा, वृथाही घरबारको छोड़कर बन २ में

भटकता हुआ फिरेगा। मैंने उत्तरदिया कि इन बातोंको आप रहने दीजिये,अगरनहीं कहोगे तो मैं यहींपर आपकोभी मारडालूंगा और स्वयंभी मरजाऊंगा। यदि प्राणोंकी प्रीतिहै तो शीघ्रतासे कहसुनाइये। तब वह बूढ़ा आँसूभरलाया। और कहाकि;

नैमान सौदागर और फरंगकी शाहजादी का वृत्तान्त।

मेरा नाम नैमानहै। पहले मैं बड़ाभारी सौदागरथा और इसही व्यौपारके द्वारा सारे संसारमें भ्रमणकिया और सब बादशाहोंसे साक्षातहुआ। एकबार जीमें यह ध्यान आया।कि मैं चारों ओरतो घूमा परन्तु फरंगटापूकी ओर न गया, वहांके राजा और प्रजाको न देखा, न सेनादेखी और न वहांकी रीति अनरीति जानी। एकबार तो वहांभी चलनाचाहिये। अपने इष्ट मित्रोंकी सम्मति लेकर जानेका पूरा निश्चयकिया और अपने देशके उत्तमोत्तम पदार्थ ले सौदागरोंका समूह एकत्रकर जहाज पर सवारहो चलदिया। पवनके अनुकूल रहनेसे कईमासके भीतरही वहां जापहुँचा और नगरमें डेरा किया।वह नगर ऐसाथा कि उसकी बराबरी कोई नहीं करसकता। प्रत्येक बाजार और गली की सड़क पक्की बनीथी, छिड़काव होरहाथा, सफाई ऐसी कि एक तिनकाभी पड़ाहुआ कहीं दिखाई नहीं देताथा, २ कूड़ेकीतो बातही क्या चलाई; रंग २ के रथाल बनेथे। ग २ पर प्रकाशका प्रबन्धथा। बागोंमें अनेक प्रकारके अद्भुत२ , फूलरहेथे वैसे फूल स्वर्गके अतिरिक्त और कहींभी नथे। वहांकी प्रशंसा जितनी कीजाय उतनी थोड़ीहै। नगरमें सौदागरोंके आनेकी चरचाहुई। एक राजदूत विश्वासपात्र कईनौकर

चाकरों को साथले हमारे समूहमें आया और व्यौपारियों से पूछाकि तुम्हारा सर्दार कौनसाहै ? सबोंने मेरीओर संकेतकिया तब वह राजदूत मेरेपास आया परस्पर कुशल प्रश्नहुआ तबमैंने उसको आदर सन्मानसे बिठलाकर पूछाकि अपने शुभागमन का कारण कहिये? उसने कहा; शाहजादीने सुनाहै कि सौदागर आयेहैं और भांति२ के पदार्थ लाएहैं। अब मुझको आज्ञा दीहै कि तुम उनको जाकर ले आओ। अतएव जो कुछ पदार्थ बादशाहके योग्य समझो सो तुम साथ ले चलो और व्यापारमें लाभ करो। मैंने उत्तर दिया कि आज तो यात्राकी थकावट आरही है, कलस सेवामें पहुँचूँगा और जो कुछ इस दीनकेपास वर्त्तमानहै भेंट करूंगा,जो वस्तु चाहैं शाहजादीलेलें मालही उनका है।यह वायदा करके और इत्रपानदेकर उस दूतको विदा किया और सब सौदागरोंको अपने पास बुलाकर जो जो पदार्थ जिसके पास उत्तमथा लेलेकर एकत्र किया जो मेरे पास था वह भी लिया फिर प्रभात काल होतेही महलके द्वारपर आया । द्वारपालोंनें मेरे आनेकी सूचनादी आज्ञा हुई कि उसको यहां पर ले आओ। वही राजदूत आया और मेरा हाथपकड मित्रोंकीसी बातें करता हुआ लेचला मैं थोडी देरमें एक बडे मकानमें पहुँचा। हे मित्र! तुमको विश्वास न होगा वहाँ वह शोभा देखी जैसे पर काटकर परियोंको छोड दियाहै । जिस ओर देखता दृष्टि चकाचौंध जाती थी- पाँव जमीनसे उखडे जातेथे। कठिनतासे अपनेको सम्हालता हुआ सामने पहुँचा। जैसेही बादशाहजादीको देखा अचेत होने लगा। ज्यों त्यों करके प्रणाम किया। उसके दोनों ओर बहुतसी नवयौवना दासियें जो अप्सराओंसे भी अधिक सुन्दर थीं हाथ जोडे हुए खडी थीं।

मैंने वह समस्त पदार्थ राजकुमारीके सामने रक्खे जिनको मैं साथ लेगया था। उसने उन समस्त पदार्थोंको मनोगत करके भंडारीको सौंपा और कहाकि इन समस्त वस्तुका मूल्य कल दे दिया जावैगा। मैंनें प्रणाम किया और जीमें प्रसन्न हुआकि भला इस मिससे कलभी आऊंगा। जब बिदा होकर बाहर आया तो बावलोंकी भांति कहता कुछ था और मुँहसे कुछ और निकलता था। उसही प्रकारसे मैं अपने डेरे पर आया परन्तु जी असावधान था। सब इष्ट मित्र पूछनें लगे कि तुह्मारी क्या दशा है? मैंने कहा कि इधर उधरके आने जानेसे कुछ गर्मीसी ज्ञात होती है। अतएव उस रातको तडफते हुए काटा और प्रभात होतेही फिर उस सुकुमारी राजकुमारीके पास गया। वहाँ आजभी वही शोभा थी। बादशाहजादीने मुझे देखा और प्रत्येक व्यक्तिको किसी न किसी कार्यके लिये बिदा कर दिया। फिर एकान्तमें बुलाकर मुझसे पूछा कि तुमको अपनी इस सामग्रीमें कितना नफा लेना स्वीकार है? मैंने बिनय करी कि आपके चरण कमलों का दर्शन करनेकी इच्छा थी सो ईश्वरने पूर्णकी अब मैंने सब कुछ पा लिया और संसारकी समस्त संपत्ति मुझको मिलगई। और मूल्य जो कुछ कागजमें लिखा है उससे आधेमूल्यकी प्रत्येक वस्तुको समझिये और ..वा लाभ है। उसने कहा नहीं जो मूल्य लिखा है वही दिया ..ा, वरन औरभी कुछ पुरस्कार मिलेगा। परन्तु तुझे एक .. करना होगा मैंने कहा कहिये मैं तन मन धनसे प्रस्तुत हूं और अपना अहोभाग्य समझूंगा। यह सुनकर उसने दवात कलम मँगवाय एक रुक्का लिखा, उसे मोतियोंके भीतर धरा। फिर उत्तम रुमाल उसके ऊपर लपेट कर मुझे दिया और एक

अंगूठी चिन्हके लिये उँगलीसे उतार दी और कहाकि उस ओर को दिलकुशा नामक एक बडा बाग है। वहां जाकर एक व्यक्तिको जिसका नाम खुशरो है उसके हाथ में यह अंगूठी दीजियो और मेरी आशीर्वाद कहकर इस पत्रका उत्तर मांगियो। परन्तु शीघ्र आना जो भोजन वहां करो तो पानी यहां पीना। इस कार्यका तुझे इतना पुरस्कार दूंगी कि तू प्रसन्न होजायगा। मैं विदा हुआ और पूछता २ चला। दो कोस मार्ग अतिक्रमण करलेने पर वह बाग दिखाई दिया। तब एक पहलवान मुझको पकडके बागके द्वारपर लेगया। वहां देखा तो एक युवा जिसकी सूरत सिंहकी नांई थी; वह बक्तर पहरे, समस्त अस्त्र बांधे कुरसीपर बैठाथा। मैंने प्रणाम किया और विनयके साथ वह रुमाल दिखाया और पत्रके लानेका समाचार कहा। उसने सुनतेही दांतोंसे उँगली काटी और शिरधुनकर बोलाकि कदाचित तुझको तेरी मृत्यु तो यहां तक नहीं ले आई है। अच्छा बागके भीतर जा और सरूके वृक्षमें एक पींजरा लटकता है उसमें एक युवा बंद है उसको यह पत्र दे और उत्तर लेकर शीघ्र लौट आना। मैं शीघ्रतासे बागमें गया बाग क्या था नंदन काननका नमूना था। नाना भांतिके फूल फूल रहे थे. जल यंत्र छूट रहे थे मैं सीधा चला गया और उस वृक्षमें वह पींजरा लटकता हुआ देखा। पींजरेके भीतर एक सर्वांगसुन्दर पुरुष बंद था। मैंने सभ्यता पूर्वक उसको प्रणाम करके पत्रको लोहेके डंडोंकी झिरीमें डाल दिया तब वह उस पत्रको खोलकर पढने लगा और मुझसे शाहजादीका वृत्तान्त पूछा बातें समाप्त भी नहीं हुई थीं वहां बहुतसी सेना आ गई और चारों ओरसे मुझपर मार पडने लगी; बरछी और तलवार चलने लगी।

मेरी विसातही क्या। घायल होगया मुझे अपनी सुधि नरही फिर जो चेत आया तो अपने लिये चारपाईपर पाया। उस समय दो प्यादे उठाये लिये जाते हैं और परस्पर बतियाते हैं। एकने कहा इस मुर्देको मयदानमें फेंकदो, कव्वे कुत्ते खा जायँगे। दूसरेनें कहा कि जो बादशाहको इस बातका समाचार पहुँचेगा तो हमारे बाल बच्चों तकको कोल्हूमें पिरवा देगा। हमैं अपनी जान क्या भारीहै जो ऐसा कार्य करे। मैंने यह बात सुनकर उन दोनोंसे कहा कि ईश्वरके लिये मुझपर कृपा करो, अभी तो कुछ प्राण शेष हैं जब मर जाऊंगा तो जो तुह्मारी इच्छाहो सो कीजियो।मृतक तो सब भांतिसे जीवितके हाथमें है। परन्तु यह तो कहो कि मुझपर क्या बीती? और मुझे क्यों मारा? भला इतना तो कह सुनाओ। तब उन्होंने दया करके कहा कि यह युवा जो पींजरेमें बन्द है बादशाहका भतीजा है। पहले इसहीका पिता इस राज्यके सिंहासनपर शोभायमानथा। उसने अंत समयमें अपने भाईसे अनुरोध किया कि मेरा पुत्र जो इस राज्यका अधिकारी है, अभी बालक है। बादशाहतके समस्त कार्य तुम सावधानीसे कियाकीजियो और पुत्रके समर्थ होनेपर अपनी बेटीका विवाह उससे करदेना। फिर उसका राज्य उसे देना। यह कहकर वह चल बसे और राज्यकार्य छोटे [illegible] हाथमें आया। उसने अपने बडे भाईके अनुरोधपर कुछ [illegible] ध्यान न दिया वरन उसको उन्मत्त और बावला कहकर पीं[illegible] बंद कर दिया चारों ओर पहरा नियत कर दिया है, वहाँ [illegible] पर नहीं मार सकता है। कई बार विष दिया परन्तु उसने कुछ प्रभाव नहीं किया।अब वह शाहजादा और यह शाहजादी यह दोनों प्रेमिक प्रेमिका बन रहे हैं। वह घरमें बिलबिलाती

है और यह पींजरेमें कुलबुलाता है। उसने तेरे हाथ प्राण प्यारे-को पत्र भेजा यह समाचार दूतोंने बादशाहको दिया। उसने हवशी सिपाहियोंको भेजा और तेरी यह दुर्दशा कराई। और उस युवाने कैदीके मार डालनेका उपाय मंत्रीसे पूछा उस दुष्टने शाहजादीको इस बातपर सम्मत किया कि वह उस निरपराधी शाहजादेको तलवारसे मारडालो। उनसे यह सुनकर मैंने कहा चलो चलते २ यहभी कौतुक देखलें इसके उपरान्त सम्मत होकर वह दोनों ओरमें एकान्त स्थानमें गये। देखातो एक तख्तपर बा-दशाह बैठा है और शाहजादीके हाथमें नंगीतलवार है। इसके पीछे शाहाजादे को पीजरेसे निकाल कर खडाकिया। मलका नंगीतलवारलिये अपने प्रेमी का वध करने के कारण आई। जब उसके निकट पहुंचे खड्ग फेंकदिया और गलेसे चिपट गई तब वह प्रेमी बोला कि ऐसे मरने पर में प्रसन्नहूं। यहाँ भी तेरी चाहना है और वहाँ भी तेरी अभिलाषा रहेगी। शाहजादीने कहा कि हे प्यारे! मैं इस वहानेसे तुझको देखने आई थी? बादशाहने इस बातको देख मंत्रीको डांटा कि क्या तू यह कौतुक दिखाने को मुझे यहाँ लाया है। दासियें मलकाको समझा बुझाकर म-हलमें लेगई। इधर मंत्री तलवार उठाकर बादशाहजादेकी ओर दौडा कि एकही आघातमें उस निरपराधीका काम पूरा करें वह खड्ग चलायाही चाहता था कि अचानक एक तीर कहींसे आकर उसके शिरके पार होगया और वह गिरपडा। बादशाह यह बात देखकर महलमें घुसगया उस युवा को पुनर्वार बंद करके उस बागमें लेगये में भी उधरसे निकला, मार्गसे एक आ-दमी मुझे बुलाय शाहजादीके पास लेगया। उसने मुझे घा-यल देखकर एक चिकित्सक को बुलाया और अनुरोध किया

इस युवाको शीघ्र आरोग्य करके स्नान करा, तब तू बहुतसा ईनाम पावेगा। वह चालिस दिनमें मुझे अच्छा करके शाहजादीके पास लेगया। शाहजादीने पूछा कि अब तो कुछ कसर बाकी नहीं है। मैंनें कहा कि आपकी कृपासे अब मैं बहुत अच्छा हूं तब शाहजादीने उसको बहुतसा पुरस्कार देकर बिदा किया। तद्दुपरान्त मैंने अपने सब इष्ट मित्रोंको साथ लेकर वहाँसे गमन किया जब यहाँ आया तब सबसे कहा कि तुम अपने २ घरको जाओ और मैंने इस पर्वतपर रहना नियत किया और शाहजादीकी प्रतिमा भी यहीं बनाई। दास दासियोंको बहुतसे रुपये देकर स्वतंत्र कर दिया और कह दिया कि जबतक मैं जीवित रहूँ मेरी सुध लेते रहना आगे तुह्मारी इच्छाहै। अब वही स्वामिभक्तिके कारण मेरे भोजनपानका ध्यान रखते हैं। और मैं निश्चिन्तहोकर इस मूर्तिकी पूजा करताहूं। जब तलक जीवितहूं मेरा यही काम है। यह मेरा वृतान्त है जो तूने सुना। हे महाराज! मैंने इस वृत्तान्त को सुनतेही जोगिया वेष बनाया और फरंगदेशको चल दिया। कुछ दिनमें जंगल और पर्वतों में भ्रमण करता हुआ मजनूं और फरहादकी सूरत बनगया जब उस नगर में पहुंचा। वहांके गली कूचोंमें पागल की नाई घूमने लगा। ...धा शहजादीके स्थान के आसपास फिरा करता परन्तु वहां ... पहुँचने का कोई उपाय न था। बडी व्याकुलता थी। जि... के लिये यह परिश्रम करके गया वह आशय हाथ न आया एक ... बाजारमें खडा था कि एक साथ आदमी भागने लगे और दुकानदार दुकानें छोडकर चले गये। या तो वह शोभाथी या वह सून सान हो गया एक ओरसे एक युवा शेरकी समान गर्जता तलवार झाडता हुआ गलेमें ग्रीवाबन्द पहरे झिलमिला

टोप शिरपर बांधे पांचो अस्त्र लगाये उन्मत्त की भांति बकता झकता दिखाई दिया। उसके पीछे दो गुलाम बनातकी पोशाक पहरे और एक अरथी मखमल से मंडित लिये हुए चले जाते हैं। मैंने यह कौतुक देख कर साथ चलनेकी इच्छाकी जो आदमी मिलता निषेध करता। परन्तु मैं कब सुनता हूं। धीरे २ वह युवा एक बडेभारी मकानमें चला गया मैं भी साथ चला गया। उसने लौटकर चाहाकि हाथ मारूं और दो टुकडे करूं मैंने उसे शपथ दी कि मैंभी यही चाहता हूं, मैंने अपने बधका अपराध तुझे क्षमा किया मैं अपने इस जीवसे हाथ धो बैठा हूं; मैं तो जान बूझकर यहांआयाहूं देर मतकर और मुझे मरनेपर दृढ समझ। यह बात सुनतेही उसके जीमें दया आई और क्रोध ठंडा हुआ। तब उसने कृपासे पूछाकि तू कौन है और क्यों अपने जीवनसे हाथ उठायाहै? मैंने कहाकि जरा बैठिये तो कहूं मेरी कहानी बहुत बडी है और प्रेमके फंदेमें भली भांतिसे फँसा हुआ हूं यह सुनकर उसने अपनी पेंट खोली और कुछ खायकरके बोला कि तू अपना वृत्तान्त सुनाकि तुझपर क्या बीती है? मैंने समस्त वृत्तान्त उस वृद्धेका और अपना कह सुनाया पहले तो सुनकर वह रोया और बोला कि इस अभागिनीने किस किस का घर घाला है। भला तेरी चिकित्सा तो मेरे हाथमें है। आश्चर्य नहीं कि मेरे द्वारा तू अपनी आशा और अभिलाषाको पूर्ण करे तू सन्देह मत कर और निश्चयरख नाईको आज्ञादी "इसकी हजामत बनाकर स्नान करा और नये कपड़े पहरा- तब वह मुझसे कहनेलगा कि यह शव जो तैंने देखा उसी शाहजादेका है जो पींजरेमें बन्द था यह तो छूटगया मैं उसका बचाहूं मैंने उस मंत्रीको खड्गसे मार

और बादशाहकेभी मारनेकी इच्छाकी तब वह गिड गिडाया और कहने लगा कि मैं तो निरपराधी हूं मैंने उसे कायर जानकर छोड़दिया तबसे मेरा यही कामहैकि प्रत्येक मासकी शुक्ला नवमीको मैं इस शव (मुर्दा) को उठाये फिरताहूं और उसका शोक करताहूं।" उसके द्वारा यह वृतान्त सुनकर मुझको धैर्य हुआ और सोचा कि जो यह चाहैगा तो मेरी अभिलाषा पूरी होगी ईश्वरने बड़ी कृपाकी जो ऐसे उन्मत्तको मुझपर दयालु किया है। सत्यहै;—

दोहा—जाको राखै साइयां, मार सकै नहिं कोय।
वाल न वांका होसकै, जो सबजग बैरीहोय॥

जब संध्याकाल होने पर सूर्य भगवान् अस्ताचल चूडावलंबी हुए तो उस युवाने उस शवके संदूकको निकाल और दास के बदलेमें वह संदूक मेरे शिरपर धरा और अपनेसाथ लेकर चला फिर मुझसे कहाकि मैं शाहजादीके पास जाताहूं जहांतक होसकेगा तेरा पक्ष करूंगा तुम मौन होकर सुनते रहियो और कुछ न बोलना। मैंने कहा जो कुछ आपकी आज्ञा होगी वही करूंगा। ईश्वर आपका मंगलकरे। फिर उस युवाने बादशाही बाग में जानेकी इच्छाकी जब बाग के भीतर पहुंचा तो संगमर्मर [illegible]थरका एक चबूतरा जो आठ कोनेदारथा देखा उसपर एक [illegible]ामियाना जिसमें मोतियोंकी झालर लगी हुईथी सोने चांदी [illegible]डंडोंपर तनाहुआथा। और एक गद्दी बिछीथी, चारोंओर उस [illegible] तकिये लगेथे। वहांपर उस शवको रखवाया और हमदोनों को आज्ञादीकि उस वृक्षके पास जाकर बैठो। कुछदेर पीछे मसालका प्रकाश दिखाई दिया मलका अपनी कई दासियों से बात चीत करतीहुईआई परन्तु मलीनता और क्रोध मुखपर

प्रगटथा आकर उस गद्दीके किनारेपर बैठी और कुछ बातें करने लगी मैं कानलगाकर सुनरहाथा। तदुपरान्त उस युवाने कहा कि हे राजकुमारी! अजमदेशका राजकुमार आपकी सुंदरताऔर प्रशंसा सुनकर राज्यको छोड घरसे मुँह मोड भिखारी बन संसारीसे नाता तोड बडे२कष्ट उठाकर यहां आपहुँचाहै। और इस नगरमें द्वार द्वार पर भ्रमण करता है। अनन्तर वह मरनेकी इच्छा करके मेरे साथ लगा मैने तलवार उठाई उसने शिर को आगे धर दिया और शपथ दिलाई कि मुझे मार डाल। अतएव प्रमाणित है कि वह तुह्मारे प्रेम में व्याकुल है। वह तेरा उसको देखा भाला परन्तु तुह्मारे प्रेमका वह पूरा मतवाला है। इसही कारण से बिवश हो उसका वृत्तान्त श्रीमती से निवेदन किया है। यदि श्रीमती यात्री जानकर उसपर कृपा करें तो कृपा और दया के अनुकूल बात होगी। मलकाने यह सुन कर कहा वह कहां है· जो शाहजादा है तो कुछ हानि नहीं सामने आवे वह कोका वहां से उठकर आया और मुझे साथ ले कर गया। शाहजादी का दर्शन करके मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। परन्तु बुद्धि जाती रही और यह साहस न हुआ कि कुछ कहूं एक दममें मलका सिधारी और कोका अपने मकान पर आकर बोलाकि मैंने तेरा समस्त वृत्तान्त आदि से अंततक राजकुमारीसे कह दिया और अनुरोध भी किया अब तू सदैव रातको जाया कर और प्रसन्न हुआ कर। मैं उसके चरणों पर गिरा। उसने गले लगाया। दिन भर घंटे गिनतारहा कि कब सांझ हो जो मैं वहां जाऊं। रात होतेही मैं उस युवासे बिदा होकर चला और उस बागमें मलकाके चोतरेपर तकिया लगाकर बैठा। एक घडी पीछे केवल एकही दासीको साथ लिये हुए

धीरे २ वहां आनकर राजकुमारी बैठगई। वो भाग्यसे यहदिन प्राप्तहुआ। मैंने चरण पकडलिये, उसने मेराशिर उठाकर गलेसे लगालिया और बोली कि, इस समयको अच्छा जान और मेरा कहामान। मुझे यहांसे निकाल कर किसी दूसरे देशमें लेचल मैंने कहा चलिये यह कह कर हमदोनों बाग के बाहर हुए परन्तु अपरिचित होंने और हर्षकी अधिकतासे मार्ग भूलगये एक ओरको चलेजाते थे पर कुछ ठिकाना नहीं पातेथे। इसके उपरान्त राजकुमारी घबडाकर बोली कि अब मैं थकगई तेरा स्थान कहां है? शीघ्रतासे पहुंच। मेरे पांवमें छाले पडगए हैं। मार्गमें कहीं बैठजाऊंगी तब मैंने कहाकि मेरे दासका स्थान निकटही है अब पहूँचे निश्चय रक्खो और चरण उठाओ। झूंठ तो बोला परन्तु व्याकुलथा कि कहां लेजाऊं मार्ग के धोर एक द्वारमें तालालगाहुआ देखा। शीघ्रतासे उस ताले को तोडकर घरके भीतर गये। घरअच्छाथा और उसमें बिछौना बिछाथा। अलमारियोंमें शराबके शीशे भरे हुए रक्खे थे। भोज्य पदार्थ बहुतसे एकत्र थे यादि श्रम विशेष होनेके कारण गुलाबी शराबका एक २ शीशा पिया और रातभर आनंद मनाया। प्रभात होतेही सारे नगरमें कुलाहल मचगया कि राजकुमारी कहीं चलीगई। गली २ में ढँढोरा फिरने लगा। दूती और रा-[illegible]त छूटे कि जहांसे हाथ लगे राजकुमारीको ले आवें। न-[illegible]के समस्त द्वारोंपर बादशाही पहरा बैठगया और उनको आज्ञा होगई कि विना आज्ञाके कोई चींटीभी नगरके बाहर न निकलसके। जो कोई राजकुमारीका पता लगावेगा हजार स्वर्ण मुद्रा पुरस्कार पावेगा। सारे नगरमें दूती फिरनें लगीं और घर २ में घुसने लगीं अभाग्यताके मारे मैंने घरका

द्वार बन्द नहीं करलिया था। एक बुढिया डायनकी सूरत पिशाचिनकी मूरत हाथमें माला लिये द्वार खुला पाय निडर हो भीतर चलीआई और राजकुमारीके सामने खडी हो हाथ उठाय आशीर्वाद देनें लगी कि भगवान तुम्हें सदा सौभाग्यवती रक्खे मैं गरीब भिखारिन हूं, मेरी एक बेटी पूरे दिनोंसे है और पीडाके मारे मरी जाती है मुझको इतनी सामर्थ्य भी नहीं कि दमडीका तेल दीपकमें जलाऊं खाने पीनेको कहाँसे लाऊं। जो मरगई तो उसका क्रिया कर्म काहेसे करूंगी? और जनी तो दाईको क्या दूंगी? जच्चाको क्या खिलाऊं पिलाऊंगी? आज दो दिनसे वह भूँखी प्यासी पडी है। हे राजकुमारी! अपने ऊपर निछावर करके कुछ लत्ता कपडा दिला दो। मलकाने दया करके उसे अपने पास बुलाया और चार रोटी तरकारी व एक अंगूठी कनउँगलीसे उतार कर देदी कि इसको बेच बाचकर गहना पत्ता बनादीजो और भली भांतिसे निर्वाहकीजो। कभी २ यहां आया कर यह तेरा घर है उसने अपने जीमें कहा कि मैं जिसकी खोजमें आई थी उसका पूरा पता पाया। वह हर्षसे बिदा हो वहाँसे चली और बाहर आकर रोटियां फेंक दीं परन्तु उस अँगूठीको मुट्ठीमें लेलिया और सोचा कि राजकुमारीका पूरा पता मैंने पाया। अब ईश्वरकी लीला देखिये कि उस स्थानका स्वामी ताजी घोडेपर चढाहुआ बरछी हाथमें लिये एक हिरणको शिकार किये आपहुंचा और अपने स्थानका ताला टूटा व द्वार खुला पाकर उस कुटनीको निकलते देखा। क्रोधके मारे एक हाथसे उसकी चोटी पकडकर वृक्षमें लटका दिया और उसके दोनों पाँव रस्सीसे बांध दिये। उल्टा लटकनेके कारण वह तडप २ कर मरगई।

फिर उस पुरुषकी सूरत देखकर मेरा मुँह पीला पडगया और डरके मारे कलेजा कांपने लगा। उस महाशयने हम दोनोंको भयभीत देखकर धैर्य दिया और कहा कि आपने बडी असावधानी की जो द्वार खोलदिया। राजकुमारीने हँसकर कहा कि शाहजादा अपने दासकी हवेली कहकर मुझे यहाँ ले आया और धोखा दिया। उस वीरने उत्तर दिया कि यथार्थमें राजकुमारने उचितही कहाहै, सारी प्रजा बादशाहकी दासहीहै और उन्हींकी कृपासे सबका निर्वाह होताहै। मैं आपका विन्मोललिया दासहूं परन्तु इस भेदका छिपानाही बुद्धिमानीका कामहै। हे राजकुमार! तुह्मारा और राजकुमारीका मेरी कुटीमें आना मेरी प्रतिष्ठाका कारणहै। आपने बडी कृपाकी मैं आज्ञाकारी हूं तन मन धनसे बाहर न हूंगा। आप निश्चिन्त होकर विश्राम करें अब भयका कुछ काम नहीं है। यह मुरदार कुटनी जो कुशलपूर्वक जाती तो न जाने क्या आपत्ति लाती अब जबतक इच्छा चाहै बैठे रहिये। जिस चीजकी आवश्यकताहो मुझ दीनको आज्ञा दीजिये सब प्रस्तुत करूंगा और बादशाह तो क्या वस्तुहै तुह्मारा समाचार देवदूतोंकोभी ज्ञात नहीं होगा। उस वीरने ऐसी २ धैर्यकी बातें कहीं कि मैं निश्चिन्त ... तब मैंने कहा धन्यहै तुम बडे वीरहो। इस प्रीतिका बदला ... होसकेगा तब देंगे कृपा पूर्वक अपना नाम तो बताइये। उसने कहा कि इस दासका नाम बहजादखाँ है। अतएव छः मासतक उसने यथाशक्ति हमारी सेवाकी। चैनसे दिन कटे। एक दिन अपना देश और माता पिता यादआये इस कारण अत्यंत चिन्तित बैठाथा। मेरा मुख मलीन देखकर बहजादखाँ हाथ जोडकर खडा हुआ और कहने लगा कि यदि इस दीनसे

कोई अपराध होगया तो क्षमा कीजिये। मैंने कहा तुम यह क्या कहतेहो? तुह्मारे उपकारको हम जीतेजी नहीं भूल सकते हम यहाँपर ऐसे रहे जैसे अपने घरमें रहतेहैं। नहीं तो हमसे ऐसा कार्य हुआथा कि तिनका २ शत्रु होगयाथा। ऐसा कौनसा। हमारा मित्रथा जिसके यहां क्षणभरभी विश्राम लेते ईश्वर आपको प्रसन्न रक्खे। बडे वीरहो। तब उसने कहा कि जो यहाँसे जी ऊब गयाहो तो जहाँ आज्ञाहो वहाँ कुशलसे पहुँचा दूं। फकीर बोला कि जो अपनी जन्मभूमितक पहुँचूं जो माता पिताको देखूं। जब मेरी यह दशाहै तो भगवान् जाने उनकी क्या गति होगी? मेरी मनोकामना तो सिद्धहुई अब उनके चरण कमलका दर्शन करनाभी उचितहै। उनको मेरा कुछ समाचार भी विदित नहीं कि मैं जीताहूं या मरगया न जाने उनके मनपर कैसा कष्ट बीतता होगा। वह वीर बोला बहुत अच्छा चलिये, यह कहके एक तुरकी घोडा जो सौ कोसका धावा मारता था, और एक दूसरा घोडा जिसके पर नहीं कटे थे यह दोनों घोडे मलकाके लिये ले आया और हम दोनोंको सवार कर दिया फिर स्वयं भी पांचों शस्त्र लगाय अपने घोडे पर चढ बैठा और कहने लगा कि दास आगे होता है आप मेरे पीछे २ घोडे दौडाये चले आवें जब नगरके द्वारपर आया एक खड्ग मारकर संकलको काट दिया और रक्षकोंको ललकारा कि सावधान हो, अपने स्वामीसे कहो कि राजकुमारी और उसके दूल्हको वहजादखाँ अपने साथ लिये जाता है, जो वीरताका घमंड रखते हो तो बाहर निकलो और राजकुमारीको छीनलो। पीछे यहमत कहना कि चुपचाप लेगया। नहीं तो दुर्गमें बैठ विश्राम किया करो। शीघ्रतासे यह समाचार बाद-

शाहके पास जा पहुँचा । उसने मंत्री और सेनापतिको आज्ञा दी कि उन तीनोंको शीघ्रतासे बांधलाओ या उनके शिर काट-कर मुझे दिखाओ । अनन्तर कुछ देरके पीछे सेना आई और पृथ्वी आकाशमें धूरि छागई । वहजादखाँने मलकाको और फकीरको एक पुलमें जिसके भीतर कई खंड थे खडा कर दिया । इस पुलके आगे काशीका डफरिन ब्रिज भी पानी भरता था वह बीर स्वयं घोडेको फिराकर सेनाकी ओर चला और सिंहकी समान दहाडता हुआ सेनाके भीतरजा घुसा । सम्पूर्ण सेना काईसी फटगई । इस बीर श्रेष्ठने सेनाको छिन्न भिन्न करके शत्रु पक्षके दोनों बीरोंको मारडाला । सरदारोंके मरतेही सेना तीन तेरह होगई । बीरोंका मारा जाना सुनकर स्वयं बादशाह सेना लेकर चढ आया । बीर वहजादखाँने उनको भी पराजित कि-या । बादशाह घबडाया । सत्यहै हारजीत सबही परमेश्वरके हाथहै । परन्तु वहजादखाँने यह बीरता दिखाई कि होता तो रुस्तम भी लजा जाता । जब उस बीरने देखा कि मयदान सा-फ होगया और अब हमारा पीछा करनेवाला कोई नहीं तब निश्चिन्त होकर हमारे पास आया और साथ लेकर आगे चला । वृत्तान्त संक्षेप थोडे दिनमें देशकी सीमापर जापहुँचे । तब मैंने एक पत्र अपने कुशलपूर्वक आनेका बादशाहके निकट जो मेरे त थे भेजा पत्रको पढकर बडी प्रसन्नता हुई, ईश्वरका धन्य-वाद किया "सूखतधान पराजनु पानी ।" की कहावत हुई । सब अमीरों और कर्मचारियोंको साथले इस दीनकी अगोनी क-रनेको नदीके किनारे आकर खडे हुए । मैंने दूसरे किनारेपर बादशाहकी सवारी खडी देखी । चरणग्रहण करनेकी विशेष उ-त्कंठासे घोडेको नदीमें डाल दिया और शीघ्रतासे पार आय

पिताजीसे भेंट की उन्होंने मुझको कलेजेमें लगाया। इसही अ-
वसरमें एक आपत्ति आई। जिस घोडेपर मैं चढा हुआ था वह
कदाचित उसही घोडीका बच्चा था जिसपर मलका चढीहुईथी।
बछेडेको पार उतरा हुआ देखकर घोडीने भी शीघ्रताकी और
अपने लिये मलका केसाथ नदी में गिराया और पैरने लगी।
मलकाने घबडाकर लगाम खेंची, वह मुहँकी नरम होनेके
कारण उलटी और राजकुमारी नदीमें डूबगई फिर उन दोनों
का चिह्न भी दिखाई नहीं दिया। वहजादखाँ यह दशा देख
राजकुमारीकी सहायता करनेको नदीमें तत्काल पहुँचा वह
भी उस भँवरमें आगया और निकल न सका। बहुतेरे हाथ पांव
फैलाये कुछ बश न चला डूबगया बादशाहने यह देखकर बडे२
जाल मँगवाये और नदीमें डलवाये, मल्लाह और गोता लगाने
वालोंने बादशाहकी आज्ञा पाकर सारी नदीको छान लिया।
थाहकी मिट्टी ले आये परन्तु दोनों डूबे हुओंका कुछ भी पता
न चला। उसही दिनसे बावोला हो वन २ में भटकता हुआ
यह कहता फिरताथाः—

"इन नैनोंका यहीं विशेष, वहभी देखा यह भी देख।"

जो कहीं वह राजकुमारी खोजाती तो जीको धीरज बँधाय
फिर खोजको निकलता और संतोष करता। परन्तु जब दृष्टिके
सामने दोनों डूबगये तो कुछ बश न चला। फिर मनमें यह
लहर आई कि नदीमें डूबजाऊं कदाचित अपनी प्यारीको मर
कर जाऊं। एक दिनरात्रिको उसही नदीमें बैठा और डूबनेकी
इच्छा करके गलेतक पानीमें गया, चाहता था कि आगेको पॉव
रक्खूं और गोता लगाऊं इतनेमें एक देवदूत आपहुँचा और
मेरा हाथ पकडकर धैर्य दिया कि निश्चिन्त रह। राजकुमारी

जीवित है और वहजादखाँ भी कुशल पूर्वकहै। तू अपने प्रान क्यों खोता है संसारमें ऐसा भी होता है। ईश्वरकी महिमासे निराश मत हो जीवित रहैगा तो एक न एक दिन अवश्य उन दोनोंसे साक्षात हो रहैगा। अब तू रूमकी ओर जा। वहाँ और भी दो साधुगये हैं उनसे साक्षात् होनेपर तेरी अभिलाषा सिद्ध होगी। उस देवदूतके उपदेशसे मैं भी यहां आपहुँचा हूं। पूर्ण निश्चय है कि सबकी मनोकामना पूर्ण होगी। मेरा जो कुछ वृत्तांत था, वह समस्त मैंने आपसे कह सुनाया।

इति चौथा भाग समाप्तः।

पाँचवाँ भाग।

चौथे फकीर की यात्राका वृत्तान्त।

चौथा फकीर इस प्रकार से अपनी यात्राका वृत्तान्त कहने लगाः—

गीत।

सुनहु अब प्रिय वर दशा हमारी।
जो कछु कष्ट लहे जीवन में भोगे हैं दुख भारी॥
आयो यहां लेख तुम सगरे पुरवहु आशा सारी।
कृष्ण प्रसाद न जो अब आऊं तो छूटी संसारी॥

हे महाशय! अब मेरे वृत्तान्त को ध्यान लगा कर सुनिये। मैं दुर्दशाका मारा चीन के बादशाह का पुत्र हूँ, अत्यानंद के साथ पाला पोषा गया। संसारके भले बुरे को नहीं जानताथा और मानता था कि सदैव इसही प्रकारसे निर्वाह होगा। इसही अवसरमें पिता परलोक वासी हुए। अंत समय में अपने छोटे भाईको जो मेरे चचा हैं अपने पास बुलाकर आज्ञा दिया की मैं तो अब इस संसार से चलना चाहता हूँ परन्तु मेरी यह अभिलाषा अपने बडप्पन से पूर्ण करना कि जबतक राजकुमार प्राप्त व्यवहार (समर्थ) न हों और अपना वर न देखे भाले तुम इसकी रक्षा कीजो और राज्यकी सेनाका प्रबन्ध ठीक रखकर उचित अवसर पर सम्पूर्ण राज्य कुमार को समर्पण करके अपनी बेटी रौशन अख्तरसे इसका विवाह करके तुम राज्य से अलग हो जाना। इस प्रबन्ध और उपकारसे यह राज्य अपने कुटुंबमे

स्थित रहेगा और कुछ बिघ्न न होगा यह कह कर वह तो चल बसे और चचासाहब राज्य का प्रबन्ध करने लगे मुझे आज्ञादी कि रनवास में बैठे रहा करो- युवा होने तक बाहर न निकलो यह दीन चौदह वर्षकी अयुतक दास दासी और रानियों में ही पलता रहा और चचाकी बेटीसे बिवाह होनेका समाचार सुन कर प्रसन्न था और जो मैं कहा करता था कि अब कोई दिनमें बादशहत भी हाथ आजायगी! संसार ही आशापर ठहरा हुआहै। मुबारक नामक एक हबशी मेरे पिताका पुराना सेवक और विश्वासपात्र था बहुधा मैं उसके निकट जा बैठता और वहभी मुझे बहुत प्यार करता था तथा देखकर प्रसन्न होता था और कहता था कि ईश्वरका धन्यबाद है। हे राजकुमार! अब तुम युवा हुए अब तुह्मारे चचा शीघ्रही तुह्मारे परलोकवासी पिताके अंतिम अनुरोधको पालन करेंगे। एक दिन ऐसा हुआ कि एक दाईने निरपराध मेरे मुँहपर एक थप्पड मारा, मेरेमुँह पर पांचों उँगलियां उछल गई। मैं रोता हुआ मुबारकके पास गया उसने मुझे गले लगाया और कहाकि चलो तुह्में बादशाहके पास ले चलूं। कदाचित वह देखकर कृपाकरे और योग्य समझकर तुह्मारी सम्पत्ति तुह्में दे यह कहकर मुझको चचाके पास लेगया। चचा साहबने दरबारमें अत्यंत आवभगत के पूछाकि उदास क्यों हो और यहां कैसे आये? मुबारकने ...ाकि कुछ प्रार्थना करने आये हैं यह सुनकर स्वयं कहने ...गा कि अब राजकुमारका बिवाह किये देतेहैं। मुबारकने कहा बहुत मुबारिक! तत्काल ज्योतिषी और पंडितोंको बुला कर ऊपरके जीसे पूछाकि इस वर्षमें कौनसा महीना, कौनसा दिन और कौनसी घडी श्रेष्ठ है जिसमें राजकुमारके बिवाहका

उद्योग किया जाय? उन्होंने आज्ञापाय विचार पूर्वक प्रार्थना करी कि हे महाराज! इस वर्षमें कोई उत्तम लगन नहीं है; यदि यह वर्ष कुशल पूर्वक कट जाय तो अगले वर्षमें अच्छा होगा। बादशाहने मुवारककी ओर देखकर कहाकि राजकुमारको महल में ले आओ एक वर्षके पीछे उसकी धरोहर उसे सौंप दूंगा वह निश्चिन्त होकर पढे लिखे मुवारकने सलाम किया और मुझे साथ लेकर महल में पहुंचा। फिर मैं दो तीन दिन पीछे मुवारकके पास गया, वह मुझे देखकर रोने लगा मैंने घबडा कर पुछा, दादा साहब कुशल तो हैं? तब वह स्वामिभक्त जो मुझे जी जानसे चाहता था कहने लगा कि उस दिन मैं तुझें उस अत्याचारीके पास लेगया। जो ऐसा जानता तो न लेजाता। मैंने उत्कंठित होकर कहा मेरे जानेसे कोनसी हानि हुई? तब उसने कहाकि तुह्मारे वहां जानेसे जितने पुराने कर्मचारी हैं वे और मंत्री लोग सबही प्रसन्न हुए और ईश्वरको धन्यवाद देकर कहने लगे कि अब हमारा राजकुमार युवा होकर राज्य पाने योग्य हुआ अब कुछ दिनमें सिंहासनपर बैठेगा और हम लोगोंकी उन्नति करेगा। इस समाचारके पातेही उस बेईमानकी छातीपर सांप लोटने लगा और मुझे एकान्तमें बुला कर कहा कि हे सेवक! अब ऐसा कार्य कर कि राजकुमार गुप्त रीतिसे माराजाय और मेरे जीका खटका निकले। यह बात सुनकर मैं घबडा रहाहूं कि तेरा चचाही तेरे प्राणोंका लेवाहुआहै। मुवारिकसे यह अमंगल समाचार सुनकर मैं बिना मारे मरगया और प्राणोंके डरसे उनके पांवोंपर गिरपडा और उससे कहा कि मैं राज्यको नहीं चाहता तू किसी प्रकारसे मेरे प्राण बचा। उस प्रेमी दासने मुझे उठाकर छातीसे लगाया और उत्तर दिया कि

कुछ भय नहीं एक उपाय मुझे सूझाहै ठीक पडजाय तो सब काम ठीक हो। भगवान् चाहैगा तो तेरे प्राण बच जाँयगे। यह आशादे धीरज बँधाय वह मुझे वहाँपर लेगया जहाँ मेरे परलोकवासी पिता सोया करतेथे। वहां एक कुरसी बिछीथी। एक ओरसे मैंने और एक ओरसे उसने पकडकर वहाँके बिछौनेको उठाया और पृथ्वीको खोदने लगा। खोदते २ एक खिडकी दिखाईदी उसमें संकल और ताला लगाहुआथा। तब उस दासने मुझे बुलाया। मैं समझा कि मेरे बधकरने और गाड देनेको यह गढा खोदा गयाहै। मृत्युकारूप आँखोंके आगे प्रगट होगया। बिवश हो ईश्वरका नाम लेताहुआ निकट गया तो देखा कि उस गढेके भीतर स्थान बनाहुआहै और चार बडे२ महल दिखाई दियें। प्रत्येक दालानमें सुवर्णके दश २ खूंटे जंजीरोंमें लटकतेहैं। प्रत्येक गोलीके मुँहपर सुवर्णकी एक ईंट और एक जडाऊ बन्दर बनाहुआ बैठाहै। चारों मकानोंमें उनतालिस गोलियें गिनी और एक डेरेको देखा। जिसमें अशरफियें भरीथीं। एक सरोवरको देखा जो रत्नोंसे मुँहतक भरा हुआथा। मैंने मुबारकसे पूछा कि हे दादा! यह क्या जादूसा है? और यह स्थान किस कामकाहै? उसने कहा कि यह बंदर जो देखतेहो इनका यह वृत्तान्त है कि तुह्मारे पिताने युवा अ- समयसे मलिक सादिक जो जिन्नोंका बादशाह है उ- साथ मित्रता और व्यवहार प्रचलित कियाथा। इसही का- वह प्रत्येक वर्षमें वहाँ जाते और इस देशकी सोगातें ले ाते थे, वह एक मासतक वहाँ रहते, विदा होनेके समय मलिकसादिक उसको एक बंदर रत्नोंका बनाहुआ दिया करताथा। बादशाहका उसको लाकर यहाँ रक्खा करताथा। इस बा-

तको मेरे अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं जानताथा। एक बार एक दासने प्रार्थनाकी कि श्रीमान् वहाँको लाखों रुपयेके पदार्थ ले जातेहैं- और वहांसे एक पत्थरका बंदर ले आतेहैं इससे क्या लाभ होताहै उन्होंने इस बातका उत्तर हँसकर यह दिया कि सावधान कहीं प्रगट मत कीजियो। पत्थरके बंदरको जो तू देखताहै इस एक २ बंदरके अधीनमें सहस्र २ देवता रहतेहैं जो कुछ वह कहे वह करते हैं। परन्तु जब तलक चालीसों बंदर पूरे न होजांय तब तक यह सब निकम्मे हैं। किसी काम में न आवेंगे। बस एकही वन्दर की कमी रही थी कि बादशाह चलबसे इतनी मेहनत अकारथगई। हे राजकुमार ! तेरी यह विवशता विहार कर मुझे याद आया और मनमें निश्चय किया कि किसी प्रकारसे तुझको मलिकसादिक के पास ले चलूं और तेरे चचाका अत्याचार प्रमाणित करूं। संभव है कि तेरे पिताकी मित्रताको स्मरण करके पिछला वन्दर वह तुझे देदे जब उनकी सहायता से तेरा देश हाथ आजाय और निश्चिन्तता हो तो बहुतही अच्छा हो। परन्तु इस कार्य से तेरे प्राण बचते हैं। इस अत्याचारी के हाथ से तेरे प्राण बच ने की और कोई युक्ति दिखाई नहीं देती। मैंने उससे इस वृत्तान्तको सुन कर कहा कि हे महाशय! तुम मेरे प्राणोंके स्वामीहो जो मेरे लिये अच्छा समझो सो करो। इतर इत्यादिक जो पदार्थ वहां ले जाने के योग्य थे उनको मोल लेने के लिये वह बाजार गया फिर दूसरे दिन मेरे उस क्रूर चचाके पास जो महादुष्ट था गया और कहा कि हे महाराज ! शाहजादे के मार डालने का मैंने एक उपाय सोचा है जो आज्ञा हो तोप्रार्थना करूं वह अभागी हर्षित होकर बोला कि वह क्या युक्ति है। तब

मुबारक ने कहा कि इसके मारडालने में सब तरह से आपकी दुर्नामता है। परन्तु मैं बाहर लेजाकर जंगलमें इसको ठिकाने लगाऊं और गाड दाबकर चला आऊं। कदापि किसी पर विदित न होगा उसने कहा हां यह तो बहुत ही अच्छी युक्ति है अब तू उसको शीघ्रतासे ठिकाने लगा जो तू मेरी इस चिन्ता को छुटादेगा तो बहुतसा पुरस्कार पावैगा तुझको अधिकार है जहां जीना है वहां लेजाकर मारडाल और शीघ्रतासे मुझको यह समाचार सुनादे। मुबारकने बादशाहकी ओरसे अपनी निश्चयताकर के मुझे साथ लिया और अपने संग्रहीत पदार्थों को लेकर आधी रातके समय नगर से गमन किया और उत्तर की ओर चला। एक मास तक बराबर चला गया। एक दिन हम दोनों साथ२ चले जातेथे उस समय मुबारक ने कहा कि भगवान का धन्यवाद है आज अभिलाषित स्थान पर पहुँचे। यह सुन कर मैंने कहा कि दादा! यह तुम क्या कहने लगे। उसने कहा कि हे राजकुमार! क्या तुम जिन्नोंकी सेना को नहीं देखते हो? मैंने कहा कि मुझे तो तुह्मारे अतिरिक्त और कोई भी दिखाई नहीं देता। मुबारकने एक सुरमेदानी निकाल कर सुलेमानी सुरमेकी सलाई मेरे दोनों नेत्रों में फेर दी। त्योंही जिन्नोंकी सेना के डेरे और सिपाही मुझको ...ई देने लगे। उन सबका पहिरावा और अलंकार उत्तमो... थे। मुबारक को पहिचान कर प्रत्येक जिन्नगलेसे मिलता ...। कुशल प्रश्न करता। इस प्रकार चलते २ बादशाही ...रोंके निकट पहुँच गया। वहां जाकर देखा कि बिछौना उत्तमतासे बिछा है और राजकर्मचारी अपने २ स्थानों पर बैठे हैं; सेवक गण हाथ बांधे खडे हैं बीचमें एक रत्नजटित

सिंहासन बिछा है उसपर जिन्नोंका बादशाह शोभायमान है उसके शरीरपर जितने आभूषण हैं वह सुवर्णके हैं और रत्नोंसे जडे हुए हैं मैंने निकट जाकर प्रणाम किया उसने कृपा पूर्वक बैठनेकी आज्ञा दी। फिर भोजनपानका चर्चा हुआ, भोजनसे निश्चिन्त होजाने पर उसने मुबारकसे भी वृत्तान्त पूछा। उसने उत्तर दिया कि अब इनके पिताके स्थानमें इनका चचा बादशाहत करता है और इस राजकुमारका प्राण लेना चाहता है। इस कारण मैं इसे लेकर आपकी शरण में आया हूं कि यह अनाथ है और स्वर्गवासी बादशाहका उत्तराधिकारी है; परन्तु विना सहायताके किसीसे कुछ नहीं होसकता। यदि श्रीमान् सहायता करें तो राजकुमारका पालन होजाय। इसके पिताकी सेवाका स्मरण करके कुमारकी सहायता कीजिये और वह चालीसवाँ बन्दर दीजिये कि जिस्से इसकी मनोकामना सिद्ध हो यह सदा आपकी इस कृपाका अनुग्रहीत रहेगा। आपकी शरण के अतिरिक्त और कोई ठिकाना दिखाई नहीं देता। इस सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुनकर जिन्नोंके बादशाहने कहाकि वास्तवमें स्वर्गवासी बादशाहने हमारी बडी सेवाकी थी और यह बिचारा अनाथ होकर अपना प्राप्त राज्य छोडकर प्राण बचानेके लिये यहां आया है और मेरी शरणली है। अच्छा, मैं यथाशक्ति इस की सहायता करूंगा। परन्तु एक काम मेरा है यदि वह इससे होगया और यह विश्वासघाती नहीं बना और परीक्षायें पूर्ण उतरा तो मैं वचन देता हूं कि बादशाहकी अपेक्षा अधिक भलाई करूंगा और जो यह चाहेगा सो दूंगा। मैंने हाथ जोड कर प्रार्थना की कि जहां तक सरकारकी सेवा मुझ दीनसे होसकेगी शिर माथे चढाकर करूंगा और विश्वासघात न होगा।

बादशाह जिन्नने कहाकि तू अभी लडका है, इस कारण पुन-र्वार सचेत करताहूं कि विश्वासघात करने पर तू आपत्तिमें पडेगा। मैंने कहा कि श्रीमान्के प्रतापसे मंगलही होगा। और मैं प्राण प्यारसे उस कार्यके पूर्ण करनेकी चेष्टा करूंगा। यह सुन कर जिन्नोंके बादशाहने मुझको निकट बुलाया और जेबसे एक कागज निकाल कर दिखलाया और कहाकि जिसका यह चित्र है उसे मेरे लिये कहीं न कहींसे खोजके ला और जब तू उसके पास पहुँच जाय तो मेरी ओरसे विशेष अनुराग प्रगट करना। यदि यह कार्य तुझसे होगा तो तुझको आशासे भी अधिक फलकी प्राप्ति होगी।नहीं तो जैसा करेगा वैसा पावैगा उस कागजमें एक चित्र बना देखा, मूर्च्छासी आने लगी परन्तु भयके मारे अपनेको सँभालकर कहा कि मैं बिदा होता हूं। जो भगवानको मेरा भला करना है तो सब कार्य आपकी आज्ञाके अनुसार होंगे।यह कह मुबारकको साथ ले जंगलका मार्ग लिया तथा गांव २ बस्ती २ नगर२ और देश २ में घूमने लगा। मैं प्रत्येकसे उसका नाम धाम पूछता था परन्तु किसीने कुछ भी न बताया न यह कहा कि मैं कुछ जानताहूं, सात वर्षतक इसही भांति चिन्ताग्रसित फिरता रहा फिर एक नगरमें पहुँचा वहांपर -डे २ स्थान बने हुए थे और वहांका प्रत्येक व्यक्ति मंत्राराधन । था और ईश्वरकी उपासनामें दत्त चित्त था। वहां पर मैंने अंधे भिखारीको देखा जो भारत वर्षका रहने वाला था। न्तु उसको किसीने भी एक ग्रास या एक पैसा न दिया। ह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और हृदयमें दया आई। जेबसे एक स्वर्ण मुद्रा निकालकर उसके हाथ धरी। वह बोला कि दाता तेरा भला करे। तू कदाचित् यात्री है और इस देशका निवासी

नहीं है मैंने कहा अवश्य, मैं सात वर्षसे मारा२ फिरता हूं जिस कामको आया हूं उसका पता नहीं मिलता। आज यहां आया हूं। वह वृद्ध भिखारी आशीर्वाद देता हुआ चला और मैं उसके पीछे होलिया नगरके बाहर एक भारी स्थान दिखाई दिया, वह उसके भीतर गया। मैंने उसके पीछे जाते २ देखा कि जगह२से वह स्थान टूटा हुआ पडा है और उसका संस्कार नहीं होता। मैंने कहा कि स्थान तो बादशाहोंके रहने योग्य है नवीन होनेके समय इसकी क्या ही सुन्दरता होगी। गिर पडनेसे अब क्या दुर्दशा होरही है न जाने यह किस कारणसे उजाड है? यह अंधा यहां क्यों रहता है? आगे २ वह लाठी टेकता हुआ चला जाता था इतनेहीमें एक शब्द हुआ कि हे पिता! कुशल तो है आज अभीसे क्यों लौटे आते हो? वृद्धने उत्तर दिया कि हे पुत्री! ईश्वरने एक युवा यात्रीको मेरे ऊपर दयालु किया उसने एक स्वर्ण मुद्रा मुझको दी। बहुत दिनसे पेटभर भोजन नहीं खाया था सो सब सामान आज मोललिया और तेरे लिये कपड़ा भी लाया हूं। यह कहकर वह भोजनादिसे निवृत्त हो विश्राम करने लगा।

उसके उपवासोंका यह वृत्तान्त सुनकर मनमें आया कि इसको बीस अशर्फियें और दूं। परन्तु शब्दकी ओर जो ध्यान दिया तो एक औरत देखी। मैंने अपनी जेबसे शाह जिन्नके दिये हुए उस चित्रको निकाला और उस चित्रसे उस स्त्रीको मिलाया। सूरत मिलगई हाय २ करने लगा, अचेत हुआ। मुबारिक जो साथ था मुझको बगल लेकर बैठा और पंखा करने लगा. सावधान होने पर भी जब मैं उसको ताकताही रहा तब मुबारिकने कहा कि तुमको क्या हुआ। अभी मुँहसे उत्तर भी न निकला था कि उस सुन्दरीने कहा। हे युवा!

ईश्वरसे डर और पराई स्त्री पर दृष्टि न डाल। सबकोही लाज करना योग्यहै। उसकी इस उचित बातचीत और सूरत पर मैं लट्टू होगया मुबारिक मेरी सेवा करनेलगा परन्तु मन्की पीडा का वृतान्त उस बिचारे को ज्ञातनहीं था। विवशहोकर मैंने पुकारा कि सुन्दरी! मैं एक दीनयात्रीहूं जो अपने पास मुझे बुलाओ और रहने को स्थानदो तो बडी बात है! उस अंधेने फिर मुझे निकट बुलाया और शब्द पहचान करगले लगाया और जहां वह मृगनयनी बैठी थी उस कमरेमें लेगया वह एक कोने में छिपगई! उस बूढेने मुझसे पूछाकि अपना घरबार छोडकर अकेले यहां कैसे आये? और किसकी खोजमें हो! मैंने इधर उधरका बहाना करके टालदिया और इसप्रकारसे कहा कि मेरे पिताने लाखों रुपये देकर यहचित्र मोललियाथा उसके देखनेसे सब आनंदविहार जातारहा और भिखारीका भेष करके सारी दुनियां छानडारी अब यहां मेरी मनोकामना सिद्ध होने के लक्षण दिखाई दिये हैं, सो सब बात तुम्हारे अधीन है यह सुनकर अंधेने हायकरी और बोला कि हे मित्र! मेरी पुत्री बडी आपत्तिमें ग्रस्थितहै किसी व्यक्ति में इतनीसामर्थ नहीं कि इससे विवाह करे और फल पावै! मैंने कहा सब वृत्तान्त सुनाओ तब वह इस प्रकारसे अपना वृत्तान्त कहने लगाकि हे मित्र! मैं अ।गा इसी नगरका रहने वालाहूं मेरे बडे वृढे एक बडे परिवार थे, ईश्वरने यह पुत्री मुझेदी! युवा अवस्था आनेपर इसकी ...। की विख्याति सारे नगरमें होगई कि अमुक व्यक्तिके हां महासुन्दरी लडकीहै उसकी सुन्दरताके आगे अप्सरा और किन्नरीगणभी लज्जितहैं, फिर मनुष्यतो उसकी बराबरी क्या करेगा! यह प्रशंसा इस नगरके कुमारने भी सुनी वह बिना दे-

खेही इसकेरूप परमोहित होगया और खानापीना छोडदिया और उदासहो कर पड रहा! धीरे२ बादशाहको यहसमाचार ज्ञात हुआ और मुझे रातको अपनी सेवामें बुलाया और बातों में बहलाकर बिबाह करने पर सम्मत किया! मैंने भी सोचा कि जब पुत्री घरमें हुई है तो किसी न किसी दिन किसी-से व्याही अवश्यही जायगी ! अतएव इससे यही उचित है कि राजकुमारके साथ विवाहित करदूं । इधर बादशाहभी प्रार्थना करता है मैं स्वीकार करके बिदा होगया। उसही दिनसे दोनों ओर बिवाहकी तइयारी होने लगी । एक अच्छे महूरतमें सब लोग एकत्र हुए। लग्नका समय आया। सब रीति प्रीति करके मैं निपट गया । जब बरातको दुलहिनके शयनागारमें गया तब वहां पर ऐसा कुलाहल हुआ कि बाहरके लोग बिस्मित होगये । द्वार खोलकर देखना चाहाकि क्या आपत्ति है, परन्तु किंवाड इस प्रकारसे बन्द थे कि खुल न सके कुछ देरमें कुलाहल कम हुआ तो किवाडकी चूल उखाडकर देखा कि दूलहाका शिर कटा हुआ तडफता है और दुलहिनके मुँहसे कफ बहता हुआ चला जाता है और वह उसही रुधिरमें सनी हुई पडी है यह घोर संकट देखकर मेराकर चेत जाता रहा। समाचार पातेही बादशाह शिर पीटता हुआ दौडा और राज्य के समस्त कर्मचारी एकत्र होगये परन्तु किसीकी बुद्धि काम नहीं करतीथी कि इस भेदको जाने । तदुपरान्त बादशाहने अत्यंत शोकाकुल होकर आज्ञा दी कि इस अभागी दुलहिनका भी शिर काट डालो। जैसेही बादशाहने यह कहा कि फिर वैसाही कुलाहल होने लगा। बादशाह इस ओर भाग लेकर निकल भागा और आज्ञा दी कि इसे महलसे बाहर निकाल

दो। दासियोंने इस लड़कीको मेरे घरमें पहुँचा दिया, संसारने यह बात सुनी जिसने सुना हाय२ की। शाहजादेके मारेजानेसे बादशाह और नगर निवासी मेरे कट्टर शत्रु होगये। जब शोक उठ गया और चालीस दिन बीत चुके बादशाहने सब लोगोंसे पूछा कि;—अब क्या किया जाय! तब सबोंने कहा कि अब और तो कुछ नहीं होसकता परन्तु मनको धैर्य देनेके वास्ते लड़कीको उसके बाप सहित मरवा डालिये और उसकी समस्त सम्पत्ति अपने राज्यमें ले लीजिये। जब मेरे लिये यह दंड निश्चित हुआ तब कोतवालको यह आज्ञा दीगई कि उसने आकर मेरे घरको चारों ओरसे घेर लिया और बिगुल बजाकर चाहाकि भीतर जाकर बादशाहकी आज्ञाका प्रतिपालन करूं उसही समय आकाशसे ऐसे ईंट पत्थर बरसेकि सेना व्याकुल होगई अपनी जान बचाकर जिधर तिधरको भागी और बादशाहने महलमें बैठेही बैठे अपने कानोंसे यह शब्द सुना कि "क्यों आपत्तिको बुलाता है? इसहीमें अच्छा है कि तू उसका पीछा छोड नहीं तो जो कुछ तेरे पुत्रने उससे विवाहकरके फल पाया है उसही फलको तू उसकी शत्रुतासे पावैगा" यह सुनतेही मारेडरके बादशाहको ज्वरआगया और आज्ञा दी कि इनअभागियोंको कोई मत छेडो इसी हवेलीमें पड़ा रहनें दो। उसही दिनसे नगरके सम्पूर्ण वाले अपने बादशाहके साथ मंत्रोका पाठ किया करते हैं। हुत दिनसे यह कौतुक होरहाहै परन्तु अबतक कुछ भेद नहीं ना गया और मैं भी कुछ नहीं जानता। परन्तु इस लडकीसे एकबार पूछाथा कि तैने क्या देखा, इसनें कहा कि और तो मैं कुछ नहीं जानती जब मेरा पति मेरे निकट आया उस समय छत फट गई, और उसमेंसे एक सिंहासन निकला, उसपर एक

सुन्दर युवा पुरुष राजाओंके से वस्त्र आभूषण पहरे हुए बैठाथा उसके साथमें बहुतसे और भी मनुष्य आये और शाहजादेको मारना चाहा। तब वह सिंहासनपर बैठा हुआ सरदार मेरे पास आया और बोला क्यों जानी ! अब हमसे कबतक अलग रहो गी ? उनकी सूरत आदमियोंकीसी थी परन्तु पांव बकरियोंकेसे दिखाई दिये । मेरा कलेजा धड़कने लगा और भयके मारे बेसुध होगई । फिर मैं नहीं जानती कि आगे क्या हुआ ? तबसे मैं इसही टूटे हुए मकानमें पड़ा रहता हूं बादशाहके क्रोधित होनेसे सब इष्ट मित्र अलग होगये और मैं भिखारी होगया हूं, इसपरभी कोई एक पैसा नहीं देता, वरन मेरा दू-कानके पास खडा होना भी उनको नहीं भाता। इस अभागि-नके पास कपडातक नहीं यह किस प्रकारसे अपने शरीरको छिपावै, पेटभर भोजन भी नहीं मिलता । ईश्वरसे यही प्रार्थना करताहूं कि मेरी मृत्यु आजाय अथवा पृथ्वी फटे तो मैं उसमें समाजाऊं। ईश्वरने कृपाकरके अब तुमको यहां भेजा. तुमने एक अशरफी दी तो पेटभरकर भोजन न पाया और बेटीके लिये कपडाभी बनाया, तथा ईश्वरका धन्यवाद किया। जो इस पुत्री के ऊपर अब यह आपत्ति न होती. तो मैं अवश्यही इसको तुम्हें समर्पण करके अपनेको धन्य मानता। मेरा यह वृत्तान्त है अत-एव इसबात का ध्यान छोड । यह सुनकर मैंने विनयपूर्वक कहाकि आप मुझे अपना करलें. फिर जो कुछ मेरे भाग्यमें होगा सो होरहैगा ! परन्तु वह वृद्ध किसी प्रकारभी सम्मत न हुआ जब सन्ध्याहुई तो हमसे बिदाहोकर सरायमें आया । मुबारिकने कहाकि लो शाहजादे अबतो हमारा परिश्रम सफल हुआ ! मैंने कहा. उस अंधेकी बहुत चापलूसीकी परन्तु वह

दुष्ट किसी प्रकारभी सम्मत न हुआ ? ईश्वरजाने मानेगा या नहीं ? परन्तु मेरी यह दशाथी कि रात कटनी कठिन हुई और विचारा कि कब प्रभात हो और मैं जाऊं? कभी यह विचार आता था कि बूढा मानभी गया तो मुबारिक उस सुन्दरीको मालिक सादिकके लिये ले जायगा । फिर वह आतो जाय मुबारिकको मनाकर उससे आनंद विहार करूंगा । कभी यह भय होता था कि मुबारिकभी मान ले तो जिन्नोंका बादशाह मेरी बडी दुर्दशा करेगा । और इस नगरका बादशाह यह कब चाहैगा कि उसका बेटा मारा जाय और दूसरा आनंद मनावे। रातभर नींद नहीं आई और इसही उलझनमें कटी। जब प्रभात हुआ मैं चला। चौक बाजारसे वस्त्र बनानेके लिये कपडेके अच्छे २ थान व गोटा आदि लिया तदुपरान्त बहुतसे पदार्थ भोजनके लेकर उस वृद्धकी सेवामें पहुँचा तब वह अत्यंत प्रसन्न होकर बोला कि मेरे प्राणभी तेरे लिये जाते रहें तो कुछ चिन्ता नहीं मैं अपनी पुत्री भी तुझे दे दूंगा। परन्तु यही भय होता है कि तेरे प्राणोंपर कोई आपत्ति न आवे और मेरेपर कोई आपत्ति न आवे और मेरेपर कलंक लगे। मैंने कहा वास्तवमें आप मेरे पिताके तुल्यहैं। मैं इस अभिलाषामें बहुतदिन से इधर उधर मारा २ फिरताथा बडी २ विपत्ति झेलताहुआ यहां तक आया और आशय सिद्ध होनेका चिह्न पाया। ईश्वरनें ...हें कृपालु किया जो विवाह देनेको सम्मत हुए। परन्तु ध्या... से देखो कि मेरे लिये आगा पीछा करते हो। न्याय करो तो ...मके तीरसे शिर बचाना और अपने प्राणको छिपाना किसी जातिमें उचित माना गया है ? मैंने सब भांतिसे अपना नाश किया। प्राणप्यारीके आलिंगन को मैं जीवन समझाताहूं अ-

पने मरने जीनेका कुछ ध्यान नहीं परन्तु यदि निराशहूंगा तो बिना मौतके मर जाऊंगा और परलोकमें तुम उत्तर दाता होगे अतएव इस प्रकार हां ना में एक मास व्यतीत होगया। प्रति दिन उसकी सेवामें जाता आता और विनय किया करता। कुछ दिनके पीछे वह बूढा बीमार हुआ,मैं सदा उसके पास रहा करता था, वैद्यके पास जाता जो नुसखा वह लिखता बिधिसे बनाकर उसको पिला देता एक दिन कृपालु होकर कहने लगा कि हे युवा तुम बडे हठीले हो। मैंने सम्पूर्ण व्योरा कह सुनाया और बरजताहूं कि इसकामको मतकर प्राणहै तो सब कुछ है। क्यों जान बूझकर कुएमें गिरना चाहता है। अच्छा, मैं अपनी पुत्रीसे तेरे लिये अनुरोध करूंगा! देखूं तो वह क्या कहती है? यह मंगल समाचार सुनकर मैं ऐसा फूला कि कपडोमें नहीं समाया और प्रणाम करके कहा कि अब आपने मेरे जीनेका उपाय किया।मैं बिदाहोकरस्थानमें आया औरमुबारिकसे रातभर यह बातचीत करता रहा। नींद कहांकी और भूँख कैसी? प्रभात होतेही फिर जा पहुँचा तब उसने कहा कि लो हमने अपनी बेटी तुम्हें दी। ईश्वर यह जोडा बनाये रक्खे। जबतक मैं जीवितहूं मेरी आंखोंके सामने रहो, जब मेरी आंखें बन्द हो जांयगी तो जो इच्छा हो सो कीजो। तुमको सब प्रकारका अधिकार है। कितने एकदिन पीछे वह बूढा चल बसा। रो पीटकर क्रियाकर्मसे निश्चिन्त हुए। तीजेके पीछे उस सुकुमारीको डोलीमें बिठलाकर दास संगमें लेगया और मुझसे कहा कि यह धरोहर मालिक सादिककी है। सावधान इसमें किसी प्रकारसे प्रपंच या कपट मत कीजियो और इतना परिश्रम अकारथ मत जाने दीजियो। मैंने कहा यहां पर कहां मालिक सादिक है।

जी नहीं मानता कैसे धीरज धरूं। जो कुछ हो जियों या मरूं अब तो आनन्द करलूं। मुबारिकने घबडाकर कहा कि लडकपन मत करो अभी एक दममें कुछ का कुछ होजाता है। क्या जिन्नोंके बादशाहको यहांसे दूर जानते हो? जो उसकी आज्ञा नहीं मानते हो? उसने चलते समय भलीभांतिसे ऊंच नीच समझा दी जो कहने पर रहोगे और इसको यथावत वहांले चलोगे तो वह भी बादशाह है कदाचित तुम्हारे परिश्रम पर कृपा करके तुम्हींको दे दे तो क्या अच्छी बात होवै। प्रीतिकी प्रीति रहै और मित्रका मित्र हाथ लगे। उसके समझाने बुझाने पर मैं चुप होरहा और दो सांडनीं मोललीं और उनपर चढकर जिन्नोंके बादशाहके देशकी राहली। चलते २ एक मयदानमें कुलाहलका शब्द हुआ। मुबारिकने कहा ईश्वरका धन्यवाद है, हमारा परिश्रम सफल हुआ जिन्नोंकी सेना आपहुँची, उनसे मिलजुलकर मुबारिकने पूछा कि कहां जाते हो? उन्होंने कहा कि हमको तुम्हारे लेनेके लिये बादशाहने भेजा है अब हम तुम्हारे आज्ञाकारी हैं जो आज्ञा हो सो करें चलो तो एक पलमें उसके पासले चलें। मुबारिकने कहा कि देखो तो किस परिश्रमसे हमने बादशाहका कार्य किया है अब शीघ्रताकी क्या आवश्यकता है यदि कुछ विघ्नपड जाय तो हमारा सब किया कराया मिट्टीमें मिले और हम महाराजके क्रोधमें पडे। तब सब कहने गे कि इस बातमें तुम स्वतंत्र हो जिस भांति इच्छा हो वैसे ०। यद्यपि सब भांतिका सुख था परन्तु रात दिन चलनेमे .. था। जब निकट पहुँचे तब एक दिन मुबारिकको सोता हुआ देखकर उस सुकुमारीके चरणों पर शिर रख दिया और अपनी अभिलाषा सुनाकर जिन्नोंके बादशाह

का भय भी बताया और कहा कि जिस दिनसे तुम्हारा चित्र देखाहै आनंद और विहार मेरेलिये स्वप्न होरहाहै! अब जो यह दिन आया तो भाग्यने बिबशकिया ! तब उसने कहाकि मेराभीजी तुम्हें चाहताहै, तुमने मेरेलिये बड़े २ कष्ट उठाये और कैसे परिश्रमसे यहांतक लेआएहो ! ईश्वरका स्मरण करो, देखो मुझे भूलमत जाना, न जानें ईश्वरकी महिमा से क्या प्रगट होताहै, यह कहकर ऐसी फूट २ कर रोई कि हिचकी लगगई। इधर मेरी यह गति उधर उसकी वह अवस्था इसही अवसरमें मुबारिककी नींद उचटगई वह हम दोनोंको रोताहुआ देखकर स्वयंभी रोनेलगा और बोलाकि धीरजरख ! मेरे पास एक तेलहै उसको इस सुकुमारीके शरीरमें लगा देनेसे जिन्नोंके बादशाह का जी इससे घृणा करने लगेगा विश्वासहै कि फिर वह तुम्हें देदे ! मुबारिककी यह युक्ति सुनकर जीको धीरजहुआ और उसके गलेसे चिपटकर कहाकि तुम मेरे पिताकी समानहो, तुम्हारी कृपासे मेरे प्राणबचे नहीं तो इस शोककी विथासे मैं मरजाता, उसने पुनर्वार समझाया बुझाया ! दूसरेदिन प्रभात होनेपर जिन्नोंका शब्द श्रवण गोचर होनेलगा देखातो बाद-शाहके कईएक सेवक हमारेलिये भेंट लियेहुए आरहेहैं और मोतियोंके कई थाल उनके साथहैं। तब मुबारिकने अपने पास का तेल उस सुकुमारी के मलदिया और वस्त्राभूषण पहिराकर मालिक सादिकके पास लेचला बादशाह मुझेदेखकर बहुत प्रसन्नहुआ और इसभांतिसे कहा, "तेरे साथमें ऐसी भलाई करूंगा कि किसीने आजतक न की होगी, बादशाहततो राज-कुमारके पिताकीहै परन्तु अबमैं इसको अपने बेटेकी भाँति समझूंगा" वह इसप्रकारसे कहरहाथा कि वह सुकुमारीभी

आगई। तेलकी दुर्गन्धसे बादशाहका जी बिगड़ा और विवश होकर बाहर चलागया, फिर हम दोनोंको अपने पास बुलाया और मुबारिकसे कहाकि तुमनें अच्छा कार्यकिया मैंने सावधान करदियाथा कि विश्वासघात करोगे तो क्रोधमें पड़ोगे यह दुर्गन्ध कैसीहै अब देखो तुम्हारी क्या दुर्दशा करताहूं।" मुबारिकने डरकेमारे अपना शरीर खोलकर दिखादिया और कहाकि मैंतो विश्वासघात करनेके योग्यही नहींहूं, तदुपरान्त मुबारिक को छोड़ बादशाहने मेरीओर आंख निकालकर घूरा और कहने लगा कि यह तेरा कामहै, फिर क्रोधमें आकर भलाबुरा कहनेलगा; उसकी त्योरियोंसे उस समय ऐसा ज्ञातहोताथाकि कदाचित यह मुझे जानसे मरवा डालेगा, जब मैंने यह समझा तो प्राणोंका मोहछोड़ मुबारिककी फेंटसे छूरीखेंच मालिक सादिक की तोंदमें मारी। छुरीके लगतेही वह घूमा, मैंने समझा कि मरगया फिर अपने जीमें विचारकिया कि घावतो ऐसा नहीं लगा फिर इसके गिरनेका क्या कारण हुआ? मैं खड़ा देखही रहाथा कि वह पृथ्वीपर लोटलोट गेंदकी नाई बन आकाशकी ओर उड़चला और कुछ देरमें दृष्टिसे लोपहोगया, फिर कुछदेर के पीछे बिजलीकी नाई कड़कना और अनाप सनाप बकना हुआ नीचेआया और मेरे एक लातमारी जिसमे मैं चौपट्टगिरा ॰ अचेत होगया, भगवान् जाने कितनी देरमें चेतहुआ और ॰ खोलकर देखातो अपनेको एक ऐसे जंगल में पड़ापाया ॰ कंकड़, पत्थर और बेरीके वृक्षोंके अतिरिक्त कुछ दिखाई ॰ देताथा उस घड़ी मेरी बुद्धि लोपहोगई, मैंने सोचा कहाँ ॰ऊं, क्या करूं, निराशासे हायकरके एक ओरकी राहली, जो ॰हीं आदमीकी सूरत दिखाई देती तो मालिक सादिक का

नाम पूछता, वह मुझको मतवाला जानकर उत्तरदेताकि हमने तो उसका नामभी नहींसुना,एकदिन पहाड़पर पहुंच ऊपरचढ़ा और इच्छाकी कि यहाँसे गिरजाऊं । मैं गिराही चाहताथाकि एक छत ईश्वरका वहाँ आपहुंचा और कहनेलगाकि क्यों अपने प्राण खोताहै ? सबहीपर कभी न कभी कष्ट पड़ताहै अबतेरे बुरे दिनगये और भलेआये, शीघ्रतासे रूमदेशको जा तीन व्यक्ति ऐसेही वहां गएहैं उनसे साक्षात् कर और वहांके बादशाहसे परिचितहो । तुम पांचोंकी मनोकामना एक साथही सिद्धहोगी।

मेरा यही वृतान्तहै जो आपको सुनाया ईश्वरकी कृपासे मैं यहांतक आपहुंचाहूं, बादशाहसे भी साक्षात् हुआ, ईश्वर अब हम सब लोगोंकी कामना पूर्णकरै ।

जब फ़कीरोंके साथ बादशाहका यह सम्वाद होरहाथा तब रनवाससे एक दूत बादशाहके पास दौड़ा आया और बधाईदी कि श्रीमान् के यहां राजकुमारका जन्म हुआहै ॥

आजादबख्तके गृहमें पुत्र जन्म ।

बादशाहने विस्मित होकर पूछा कि प्रगटमें तो किसी को गर्भ न था फिर यह सूर्य किसके महलसे प्रकाशितहुआ ? उसने प्रार्थनाथीकि माहरूदासी जो बहुतदिनसे बादशाही क्रोधमें पडीथी विवशहो एकान्तमें रहा करती ! भय के मारे कोई भी उसके निकट नजाताथा न उसका वृतान्त पूछताथा ! उसही पर ईश्वर की यह कृपाहुई ! यह सुनकर बादशाह अत्यंत प्रसन्न हुआ ! चारों साधु आशिर्वाद देते हुए बोले कि तेराभलाहो और इसलडके का आना शुभ हो ! बादशाहने कहाकि यह सब आपही के चरणों का प्रतापहै । यदि आपलोग आज्ञादें तोमैं उसको जाकर देखूं । उन्होंने कहा कि जाइये । तबबाद-

शाह महलमें गया और नवप्रसूत कुमार को गोदमेंले ईश्वरका धन्यवादकिया कलेजा ठंढाहुआ और लडके को बाहर लाकर साधुओंके चरणों परडालदिया । साधुओंने उसके रक्षाबन्धन बांधदिया। बादशाहने उत्सवका आपूजनकिया, नौबत बजने लगी ! धनागार का मुहखोलदिया दीन दरिद्र लोग लखपती करोडपती होगये। कर्मचारियों कोभूमिदानदी। सेनाके समस्त सिपाहियोंको पांचवर्षका वेतन पुरस्कारमें दियागया। रुपये अशर्फियोंकी लूट होंने लगी। प्रजाको तीन वर्षके लिये करसे मुफत करदिया। किसानों को मालामालकिया। नगरमें चारों ओर आनंदही आनंद होने लगा प्रसन्नताके मारे नगरका आनंदमयरूप होगया। इस प्रकारका अपारहर्ष सबको होरहाथा कि इसी अवसरमें खोजेलोग शिरपर धूरि डालतेहुए बाहर निकल आये और बादशाहसे कहाकि जिससमय शहाजादे को न्हिला धुलाकर दाईकी गोदमें दिया उसही समय एक बादलकाटुकडा आया और उसने दाई को घेरलिया। एक पलकेपीछे ज्ञातहुआ कि दाई बेहोशपडी है और कुमार लोपहोगया। यह सुनपडा बादशाह यह बातसुनकर बहुतही घबडाया और नगर भरमें हाय हाय होंनेलगी। दोदिनतककिसीके घरमें चूल्हा नहीं सुलगा ! सब कहीं पर राजकुमार का शोक मूर्तिमान होकर विराजमान होरहाथा। प्रत्येकको अपनाजीवनभार जानपडताथा।

तीसरा दिन हुआ तब वही बादल फिर आया और एक जडित पालना साथमें लाया उस पालनेको महलमें रखके फिर आकाशको उडगया लोगोंने उस पालनेके भीतर राजकुमारको अंगूठा चूसते हुए पाया बादशाहकी बेगमने शीघ्रता से उसको उठाकर छातीमे लगा लिया देखा तो शाहजादा

कीनखाबका कुरता पहरे है और उसमें मोतियोंका दामन टंका हुआहै। हाथ पांवमें कुन्दनके कड़े पडेहैं गलेमें नीलकान्त मणि का कठला पड़ा हुआ है। शाहजादेका दर्शनकर सबको अपार आनंद हुआ, फकीर लोग आशीर्बाद देने लगे कि तेरी माता का कलेजा ठंढा रहे और तू बडा बूढा हो। बादशाहने फिर एक बडा स्थान तइयार करवाकर उसमें फकीरोंको टिकाया। जब राज काजसे छुट्टी पाते उनके पास आबैठते और पुत्रकी रक्षा बडी सावधानीसे करते। परन्तु प्रत्येक पूर्णिमाके दिन वह बादलका टुकड़ा नीचे उतरकर शाहजादेको लेजाता और दो तीन दिनके पीछे उसको साथ लेआता उस समय देश २ के अद्भुत और अनमोल पदार्थ राजकुमारके साथ २ आते थे जिनको देखकर सब लोग बडा आश्चर्य करते। इसही प्रकारसे राजकुमारनें सातवें वर्षमें पांव दिया। वर्ष गांठके दिन फकीरों से बादशाहने कहाकि हे साधु गण! न जाने राजकुमारको प्रत्येक मासमें कौन आकर लेजाता है और फिर देजाता है, बडा आश्चर्य है न जाने इसका परिणाम क्या हो। फकीरोंने कहाकि एक कार्य कीजिये कि राजकुमारके सिरहाने एक पत्र इस आशयका लिखकर रख दो कि श्रीमान् की कृपा प्रीति देख कर दर्शनाभिलाषा उत्पन्न हुई है। कृपा पूर्वक मित्रताके संबंध से अपना परिचय दीजिये तो चिन्ता मिटे और धीर्य हो। बादशाहने साधुओंकी सम्मतिके अनुसार एक पत्र लिखकर राजमाकुरके सिरहाने रख दिया। तदुपरान्त शाहजादा नियमानुसार लोप हुआ। सन्ध्या होनेपर बादशाह, फकीरोंके बिछोने पर आकर बैठा और वेदान्तकी चरचा करने लगा। इसही अवसरमें एक कागज बादशाहके पास लिपटा हुआ आ-

पडा, खोलकर पढ़नेसे ज्ञात हुआ कि बादशाहके पत्रका उत्तर है। वह उत्तर इस भांतिसे था। "हमैं भी आपसे मिलनेकी आशा है, सवारीके लिये विमान भेजा जाताहै यदि इस समय शुभागमन हो तो बहुत अच्छाहै" परस्पर साक्षात होजायगा। भोगविलासका सब सामान एकत्र है। केवल श्रीमान्हीकी जगह खाली है, बादशाह आजादबख्त फकीरोंको साथ लेकर विमानपर बैठा विमान आकाशमार्गमें उडता हुआ चला। धीरे २ एक उत्तम और ऊंचे स्थानपर जा पहुँचे। उस स्थानमें सब भांतिका सामान प्रस्तुत था परन्तु वहांपर किसीका होना ज्ञात नहीं होता था। इसही अवसरमें किसीने इन पांचों व्यक्तियोंकी आंखोंमें सुरमेकी सलाई फेरदी। सबकी आंखोंसे दो दो बूंद आंसूकी निकल पडीं। वहां परियोंका अखाडा सन्मान करनेके लिये तइयार खडा था। उनके वस्त्रोंकी चमकसे आंखोंको चकाचौंध लगती थी। आजादबख्त बादशाह आगे चला तो देखा कि दोनों ओर बहुतसे गन्धर्व हाथ जोडे खडे हैं बीचमें एक स्वर्णका सिंहासन विराजमान है। उसपर मलिक शहपाल शाहरुखका बेटा तकिया लगाये हुए बडी सजधजसे बैठा हुआ है। उसके सामने एक अत्यन्त सुन्दर अप्सराकुमारी शहजादे बख्तयारके साथ खेलती है दोनों बगलमें कुरसियें बिछी हुई हैं उनपर बहुतसे अधिकारी लोग बैठे हुए हैं। मलिक शहपाल बादशाहको देखतेही खडा होगया और सिंहासनसे उतरकर मिला और हाथपकड कर बराबर ला बिठाया। फिर आनन्दसे दोनोंमें वार्त्तालाप होने लगा। बडा उत्सव हुआ। दूसरे दिन मलिक शहपालने बादशाह आजादबख्तसे फकीरोंको साथले आनेका कारण पूछा। बादशाहने उनका समस्त

वृत्तान्त यथावत कह सुनाया और अनुरोध किया कि इनकी सहायता कीजिये जो आपकी कृपासे इनकी मनोकामना सिद्ध हो जायतो बडाही उपकार हो और मुझपरभी बडी दया हो। आपकी थोडीसी दयासे इनका बेडा पार होताहै। मलिक शह पालने यह सुनकर कहा कि आपकी आज्ञासे मैं बाहर नहीं। उसने यह कहकर परियोंकी ओर देखा। बडे २ सरदार जो जिन्नोंके थे उनसबके नाम लिखे और सूचना दी कि आनाचाहते हो सब लोग यहां चले आओ। जो कोई आनेमें बिलम्ब करेगा पकडवाकर लाया जायगा और कठिन दंड पावेगा। और जिसके पास मनुष्य जातिका कोई स्त्रिया पुरुष हो वह उसे अपने साथ लिये आवे ! जो कोई छिपावैगा और पीछे सरकारको ज्ञात होगा उसके बाल बच्चेको कोल्हूमें पिलवाया जायगा। यह आज्ञा पाकर जिन्न लोग चारों ओरको दौडे। इधर दोनों बादशाहोंमें बातचीत होने लगे। तब मलिक शहपालने कहा मुझको भी पुत्रका सुख देखनेकी अभिलाषा थी और यह निश्चय कर लिया था कि जो ईश्वर बेटा बेटी देतो उसका विवाह किसी मानव बादशाहके पुत्र या पुत्री से किया जायगा। इस विचारके पश्चात जाना कि कोई बेगम गर्भसे है। आशा करते २ पूरे दिन हुए और यह लडकी उत्पन्न हुई। मैंने अपने सेवक गणको मानव कुमारको खोजनेकी आज्ञा दी कि सब संसारको खोज डालो जिस बादशाह या राजा महाराजाके यहां पुत्र हुआ हो उसको रक्षाके साथ सावधानीसे यहां उठाकर ले आओ। आज्ञानुसार सेवकगण चारों ओरको सिधाए और कुछ दिनके पीछे इस कुमारको ले आये। मैंने ईश्वरका धन्यवाद किया और इसे अपनी गोदमें ले लिया अपनी पुत्रीसे अधिक प्यार

इसपर हुआ। जीनहीं चाहता कि एक पलको उसे अपने पाससे अलग करूं परंतु यह विचार कर—कि कुमारके बिन इसके माता पिताकी क्या दुर्दशा होगी—मासमें एक बार मंगा लेताहूं और कई दिन अपने पास रखकर फिर भेज देताहूं। ईश्वरका धन्यवादहै कि अब परस्पर साक्षात् होगया। जीवनका फल पा लेनाहीं अच्छा है क्योंकि मृत्यु और उत्पति सबके साथ है, अब इन दोनोंका परस्पर विवाह हो जाय तो ठीक है बादशाह आजादबख्त मलिक शहपालकी यह सभ्यता और दयालुता देख कर अत्यंत प्रसन्नहो कहने लगाकि हमैं कुमारके चलेजाने और लौट आनेमे बडा आश्चर्य और दुःखथा। परन्तु अब श्रीमान् की वार्ता सुनकर धीरज हुआ। इस समयजो इच्छाहो सोकीजिये। अस्तु दोनों बादशाहोमें दूध और पानी कीसी प्रीति होगई। कुछ दिन बीतनेपर गुलिस्तानइरमके बडे २ बादशाह और पर्वतों पर बासकरनेवाले सरदार जिनको बुलानेके लिये जिन्नलोग नियत हुएथे आगये। पहले मलिक सादिकसे कहा कि तेरे पास जो मनुष्यजातिहै उसे उपस्थित कर। उसने अत्यंत क्रोधऔर शोकके साथ विवशहो उस सुन्दरीको उपस्थित किया जिसके लिये मुबारक और शाहाजादा गयाथा। तदुपरान्त अमानदेशके राज्यमे जिन्नोंकी राजकुमारीको जिसके लिये नीमरोज देशका शाहजादा बैलपर चढ़ाहुआ बावलासा फिरता था, बहुत कहने सुननेमे अपनी पुत्रीको उस जादूकी इनायतके साथ लेआया। इसके पीछे फरंगके बादशाहकी पुत्री और बहजादखां का बुलौवाहुआ। सब सुनकर कानोंपर हाथ धरनेऔर सुलेमानकी सौगन्द खानेलगे, जब दरियायकुल्जमके बादशाहसे पूछा तब वह शिर नीचाकरके चुपका होरहा।